idara

खाने के आदाब

मौलाना मुहम्मद तक़ी उसमानी

खाने के आदाब

मुफ़्ती मुहम्मद तक़ी उसमानी

खाने के आदाब

लेखक

मुफ़्ती मुहम्मद तक़ी उसमानी

अनुवादक

अहमद नदीम नदवी

Khane ke Aadab

9788171014422 00000

प्रकाशन : 2013

ISBN : 81-7101-453-4

TP-177-13

Published by Mohammad Yunus for

IDARA IMPEX

D-80, Abul Fazal Enclave-I, Jamia Nagar

New Delhi-110 025 (India)

Tel.: 2695 6832 Fax: +91-11-6617 3545

Email: **sales@idaraimpex.com**

Visit us at: **www.idarastore.com**

Designed & Printed in India

Typesetted at: **DTP Division**

IDARA ISHA'AT-E-DINIYAT

P.O. Box 9795, Jamia Nagar, New Delhi-110025 (India)

विषय-सूची

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

खाने के आदाब

अलहम्दु लिल्लाहि नह्मदुहू व नस्तईनुहू व नस्तग़्फ़िरुहू व नुअ-मिनु बिही व न-त-वक्कलु अलैहि व नऊज़ु बिल्लाहि मिन शुरूरि अन्फ़ुसिना व मिन सय्यिआति आमालिना मंय्यह्दि हिल्लाहु फ़ला मुज़िल-ल लहू व मंय्युज़्लिलहु फ़-ला हादि-य लहू व अशहदु अल-ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू व अश्हदु अन-न सय्यदना व नबीयना व मौलाना मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही व अस्हाबिही व बारिक व सल्लम तस्लीमन कसीरन कसीरा० अम्मा बादु अन अम्रि ब्नि अबी सलमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा क़ा-ल : कुन्तु ग़ुलामन फ़ी हज्रि रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम व कानत यदी ततीशु फ़िस्सहफ़ा फ़-क़ा-ल रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम या ग़ुलाम! समिल्ला-ह व कुल बियमीनि-क व कुल मिम्मा यली-क

—सहीह बुख़ारी, हदीस न. 5376

दीन के पांच शोबे

आप हज़रात के सामने पहले भी कई बार अर्ज़ कर चुका हूं कि दीने इस्लाम ने जो हुक्म हमें दिए हैं, वे पांच शोबों से मुताल्लिक़ हैं,

यानी अक़ीदे, इबादतें, मामले, रहन-सहन (मुआशरत) अख़्लाक़।' दीन इन पांच शोबों से मुकम्मल होता है। अगर इनमें से एक को भी छोड़ दिया जाएगा, तो फिर दीन मुकम्मल नहीं होगा, इसलिए अक़ीदे भी दुरुस्त होने चाहिएं, इबादत भी सही तरीक़े से अंजाम देनी चाहिए, लोगों के साथ लेन-देन और बेचने-ख़रीदने के मामले भी शरीअत के मुताबिक़ होने चाहिए और बातिन के अख़्लाक़ भी दुरुस्त होने चाहिए और ज़िंदगी गुज़ारने के तरीक़े भी दुरुस्त होने चाहिए, जिसको मआशरत (रहन-सहन) कहा जाता है।

मआशरत (रहन-सहन) की इस्लाह के बग़ैर दीन अधूरा है

अब तक अख़्लाक़ का बयान चल रहा था। इमाम नववी रह० ने एक नया बाब क़ायम फ़रमाया है। उसमें दीन के जिस शोबे के बारे में हदीसें लाए हैं, वह है 'मआशरत'। मआशरत का मतलब है, दूसरों के साथ ज़िंदगी गुज़ारना। ज़िंदगी गुज़ारने के सही तरीक़े क्या हैं? यानी खाना किस तरह खाए? पानी किस तरह पिए? घर में किस तरह रहे? दूसरों के सामने किस तरह रहे? ये सब बातें मआशरत के शोबे से ताल्लुक़ रखती हैं।

हकीमुल उम्मत हज़रत मौलाना अशरफ़ अली साहब थानवी क़द्दसल्लाहु सिर्रहू फ़रमाया करते थे कि 'आजकल लोगों ने मआशरत को तो दीन से बिल्कुल ख़ारिज कर दिया है और उसमें दीन के अमल-दख़ल को लोग क़ुबूल नहीं करते, यहां तक कि जो लोग नमाज़, रोज़े के पाबंद हैं, बल्कि तहज्जुदगुज़ार हैं, ज़िक्र व तस्बीह के पाबन्द हैं, लेकिन मआशरत उनकी भी ख़राब है, दीन के मुताबिक़ नहीं है, जिसका नतीजा यह है कि उनका दीन नाक़िस है।' इसलिए

मआशरत के बारे में जो अस्काम और तालीमात अल्लाह और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अता फ़रमाई हैं, उनको जानना, उनकी अहमियत पहचानना और उन पर अमल करना भी ज़रूरी है। अल्लाह तआला हम सबको उन पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हर-हर चीज़ सिखा गए

मआशरत के बारे में अल्लामा नववी रहमतुल्लाहि अलैहि ने पहला बाब 'खाने-पीने के आदाब' से शुरू फ़रमाया है। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जिस तरह ज़िंदगी के हर शोबे से मुताल्लिक़ बड़ी अहम तालीमात अता फ़रमाई हैं, इसी तरह खाने-पीने के बारे में भी अहम तालीमात अता फ़रमाई हैं। एक बार एक मुश्रिक ने इस्लाम पर एतराज़ करते हुए हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा कि

"انی اری صاحبکم یعلمکم کل شیٔ حتی الخراٗه" قال: اجل، امرنا ان لا نستقبل القبلۃ ولا نستنجی بایماننا۔ الخ

(ابن ماجه كتاب الجهارة باب الاستنجاء بالجهارة)

'तुम्हारे नबी तुम्हें हर चीज़ सिखाते हैं, यहां तक कि ज़रूरत पूरी करने का तरीक़ा भी सिखाते हैं।' —इब्ने माजा

उसका मक़्सद एतराज़ करना था कि भला ज़रूरत पूरी करने का तरीक़ा भी कोई सिखाने की चीज़ है, यह तो कोई ऐसी अहम बात नहीं थी कि एक नबी और पैग़म्बर जैसा जलीलुल क़द्र इंसान इसके बारे में कुछ कहे।

हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु ने जवाब में फ़रमाया

कि जिस चीज़ को तुम एतराज़ के तौर पर बयान कर रहे हो, वह हमारे लिए फ़ख़्र की बात है, यानी हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमें हर चीज़ सिखाई है, यहां तक कि हमें यह भी सिखाया कि जब हम ज़रूरत पूरी करने के लिए जाएं तो क़िब्ला रुख़ न बैठें और न दाहिने हाथ से इस्तिंजा करें।

जैसें मां-बाप अपनी औलाद को सब कुछ सिखाते हैं, इसलिए अगर मां-बाप इस बात से शरमाने लगें कि अपनी औलाद को पेशाब-पाख़ाने के तरीक़े क्या बताएं तो इस शक्ल में औलाद को कभी पेशाब-पाख़ाने का सही तरीक़ा नहीं आएगा? इसी तरह नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हम पर और आप पर मां-बाप से कहीं ज़्यादा शरीफ़ और मेहरबान हैं, इसलिए आप हमें हर चीज़ के तरीक़े सिखाएं। इनमें खाने का तरीक़ा भी है और खाने के बारे में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ऐसे-ऐसे आदाब बयान फ़रमाए जिनके ज़रिए खाना इबादत बन जाए और अज्र व सवाब की वजह बन जाए।

खाने के तीन आदाब

चुनांचे यह हदीस जो मैंने अभी पढ़ी, इसमें हज़रत उमर बिन अबी सलमा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझसे फ़रमाया कि खाने के वक़्त अल्लाह का नाम लो, यानी 'बिस्मिल्लाह' पढ़ककर खाना शुरू करो और अपने दाहिने हाथ से खाओ और बरतन के उस हिस्से से खाओ जो तुमसे ज़्यादा क़रीब हो, आगे हाथ बढ़ाकर दूसरी जगह से मत खाओ। इस हदीस में तीन आदाब बयान फ़रमा दिए।

पहला अदब 'बिस्मिल्लाह' पढ़ना

एक और हदीस में हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जब तुममें से कोई खाना खाना शुरू करे तो अल्लाह का नाम ले और अगर कोई आदमी शुरू में बिस्मिल्लाह पढ़ना भूल गया तो उसको चाहिए कि खाना खाने के दौरान जब भी बिस्मिल्लाह पढ़ना याद आ जाए, उस वक़्त ये लफ़्ज़ कह दे,

بسم الله، اوله و اخره

'बिस्मिल्लाहि अव्वलुहू व आख़िरुहू'।

—अबू दाऊद किताबुल अतअमा, हदीस न० 3767

यानी अल्लाह के नाम के साथ शुरू करता हूं अव्वल में भी अल्लाह का नाम और आखिर में भी अल्लाह का नाम।

शैतान के ठहरने और खाने का इन्तिज़ाम मत करो

एक हदीस हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की गई है, फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जब कोई आदमी अपने घर में दाख़िल होते वक़्त अल्लाह का नाम लेता है और खाने के वक़्त भी अल्लाह का नाम लेता है तो शैतान अपने साथियों से कहता है कि इस घर में न तो तुम्हारे लिए रात को रहने की कोई गुंजाइश है और न ही खाने के लिए कोई गुंजाइश है, इसलिए कि इस आदमी ने घर में दाख़िल होते वक़्त भी अल्लाह का नाम ले लिया और खाना खाते वक़्त भी अल्लाह का नाम ले लिया, इसलिए यहां न तो क़ियाम का इंतिज़ाम है और न खाने का इंतिज़ाम है और अगर किसी आदमी ने घर में

दाख़िल होते वक़्त अल्लाह का नाम नहीं लिया और वैसे ही घर में दाख़िल हो गया, तो शैतान अपने साथियों से कहता है कि लो भाई! तुम्हारे ठहरने का इन्तिज़ाम हो गया, तुम यहां रात गुज़ार सकते हो, क्योंकि यहां पर अल्लाह का नाम नहीं लिया गया और जब वह आदमी खाना खाते वक़्त भी अल्लाह का नाम नहीं लेता तो उस वक़्त शैतान अपने साथियों से कहता है कि तुम्हारे खाने का इंतिज़ाम हो गया। —अबू दाऊद, किताबुल अतअिमा, हदीस न० 3765

बहरहाल, इससे मालूम हुआ कि अल्लाह का नाम न लेने से शैतान का अमल दख़ल हो जाता है और घर के अन्दर उसके क़ियाम का इन्तिज़ाम हो जाने और उसके अमल दख़ल होने का मतलब यह है कि अब वह तुम्हें तरह-तरह से वरग़लाएगा, बहलाएगा और गुनाह पर आमादा करेगा, नाजायज़ कामों पर आमादा करेगा और तुम्हारे दिल में बदी के ख़्यालात और वस्वसे डालेगा, वह्म पैदा करेगा और खाने का इन्तिज़ाम होने का मतलब यह है कि अब जो खाना तुम खाओगे, उसमें अल्लाह की तरफ़ से बरकत नहीं होगी और वह खाना तुम्हारे ज़ुबान के चटख़ारे के लिए तो शायद काफ़ी हो जाएगा, लेकिन उस खाने का नूर और बरकत हासिल न होगी।

घर में दाख़िल होने की दुआ

इस हदीस में हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दो बातों की ताकीद फ़रमाई है—एक यह कि जब आदमी घर में दाख़िल हो तो अल्लाह का नाम लेकर दाख़िल हो और बेहतर यह है कि वह दुआ पढ़े जो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक़ल हुई है। वह यह है कि—

"اللهم انی اسئلك خیر المولج وخیر المخرج، بسم الله ولجنا وبسم الله خرجنا، وعلى الله ربنا توكلنا"
(ابو داؤد، كتاب الاداب، باب مايقول اذا خرج من بيته ٥٩٦)

'अल्लाहुम-म इन्नी असअलु-क ख़ैरल मूलिजि व ख़ैरल मख़्रिजि बिस्मिल्लाहि व-लजना व बिस्मिल्लाहि ख़रज्ना व अलल्लाहि रब्बना तवक्कलना०' —अबू दाऊद, किताबुल आदाबि, हदीस न० 596

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मामूल था कि जब घर में दाख़िल होते तो यह दुआ पढ़ते थे, जिसका तर्जुमा यह है कि ऐ अल्लाह! मैं आपसे बेहतरीन दाख़िला मांगता हूं कि मेरा दाख़िला ख़ैर के साथ हो और जब घर से निकलूं तो भी ख़ैर के साथ निकलूं, इसलिए कि जब आदमी घर में दाख़िल होता है, तो उसको कुछ पता नहीं होता कि मेरे पीछे घर में क्या हो गया। हो सकता है कि घर में दाख़िल होने के बाद तक्लीफ़ की ख़बर मिले या रंज और सदमे और परेशानी की ख़बर मिले, चाहे वह दुन्यवी परेशानी की ख़बर हो या दीनी परेशानी की ख़बर हो. . . इसलिए कि घर में दाख़िल होने से पहले अल्लाह से यह दुआ कर लो कि ऐ अल्लाह! मैं घर में दाख़िल हो रहा हूं, अन्दर जाकर मैं अपने घर को और घर वालों को अच्छी हालत में पाऊं—और इसके बाद फिर ज़रूरत से दोबारा घर से निकलना तो होगा, लेकिन वह निकलना भी ख़ैर के साथ हो, किसी परेशानी या दुख और तक्लीफ़ की वजह से घर से न निकलना पड़े, जैसे घर में दाख़िल होने के बाद पता चला कि घर वाले बीमार हैं, अब उनके इलाज और दवा के लिए घर से बाहर निकलना पड़ा या घर में कोई परेशानी आ गई और अब उस परेशानी के इलाज के लिए घर से बाहर निकलना पड़ा, तो यह अच्छी हालत और अच्छे

मक़सद के लिए निकलना न हुआ, इसलिए हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह दुआ तलक़ीन फ़रमा दी कि घर में दाख़िल होते वक़्त यह दुआ पढ़ लिया करो।

दुआ पढ़ना याद न आए तो अपने घर के दरवाज़े पर लिखकर लगा लो, ताकि उसको देखकर याद आ जाए, इसलिए कि यह दुआ दुन्यावी परेशानियों से बचाने की वजह है और आख़िरत का सवाब और फ़ज़ीलत अलग हासिल होगी। इसलिए जब इंसान यह दुआ पढ़ते हुए दाख़िल हुआ कि मेरा दाख़िल होना भी ख़ैर के साथ हो और मेरा निकलना भी ख़ैर के साथ हो तो फिर बताइए, शैतान के उस घर में ठहरने की गुंजाइश कहां बाक़ी रहेगी? इसलिए शैतान कहता है कि इस घर में मेरे लिए ठहरने का इन्तिज़ाम नहीं।

बड़ा पहले खाना शुरू करे

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब हम हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ किसी खाने में शरीक होते, तो हमारा मामूल यह था कि जब तक हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खाना शुरू न फ़रमाते, उस वक़्त तक हम लोग खाने की तरफ़ हाथ न बढ़ाते थे, बल्कि इसका इन्तिज़ार करते थे कि जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खाने की तरफ़ हाथ बढ़ाएं, उस वक़्त हम खाना शुरू करें।

इस हदीस से फ़ुक़हा किराम ने यह मस्अला निकाला है कि जब कोई छोटा किसी बड़े के साथ खाना रहा हो, तो अदब का तक़ाज़ा यह है कि वह छोटा ख़ुद पहले न शुरू करे, बल्कि बड़े के शुरू करने का इन्तिज़ार करे।

शैतान खाना हलाल करना चाहता था

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक बार खाने के वक़्त हम हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ हाज़िर थे, इतने में एक नव-उम्र बच्ची भागती हुई आई और ऐसा मालूम हो रहा था कि वह भूख से बेताब है—और अभी तक किसी ने खाना शुरू न किया था, इसलिए कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अब तक खाना शुरू नहीं फ़रमाया था, मगर उस बच्ची ने आकर जल्दी से खाने की तरफ़ हाथ बढ़ा दिया, तो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसका हाथ पकड़ लिया और उसको खाना खाने से रोक दिया। फिर थोड़ी देर बाद एक देहाती आया और ऐसा मालूम हो रहा था कि वह भी भूख से बहुत बेताब है और खाने की तरफ़ लपक रहा है, उसने भी आकर खाने की तरफ़ हाथ बढ़ाने का इरादा किया तो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसका भी हाथ पकड़ लिया और उसको भी खाने से रोक दिया। इसके बाद फिर आपने तमाम सहाबा किराम से ख़िताब करते हुए फ़रमाया था कि—

”ان الشيطان يستحل الطعام ان لا يذكر اسم اللّٰه تعالیٰ عليه وانه جاء بهذه الجارية ليستحل بها، فاخذت بيدها، فجاء هذا الاعرابی ليستحل به، فاخذت بيده، والذی نفسی بيده، ان يده فی يدی مع يدها“

(صحيح مسلم، كتاب الاشربه باب آداب الطعام والشراب واحكامها)

‘शैतान इस खाने को इस तरह अपने लिए हलाल करना चाहता था कि इस खाने पर अल्लाह का नाम न लिया जाए, चुनांचे उसने

इस लड़की के ज़रिए खाना हलाल करना चाहा, मगर मैंने उसका हाथ पकड़ लिया। इसके बाद उसने उस देहाती के ज़रिए खाना हलाल करना चाहा, मगर मैंने उसका हाथ पकड़ लिया। अल्लाह की क़सम! शैतान का हाथ उस लड़की के हाथ के साथ मेरे हाथ में है।'

—सहीह मुस्लिम किताबुल अशरबा, आदाबुत्तआमिवश-शराबि व अह्कामुहा, हदीस न० 2017

बच्चों की निगरानी करें

इस हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस तरफ़ इशारा फ़रमा दिया कि बड़े का काम यह है कि अगर छोटा उसकी मौजूदगी में अल्लाह का नाम लिए बग़ैर शुरू कर रहा है तो बड़े को चाहिए कि वह उसको मुतनब्बह करे और ज़रूरत हो तो उसका हाथ भी पकड़ ले और उससे कहे कि पहले 'बिस्मिल्लाह' कहो, फिर खाना खाओ।

आज हम लोग भी अपने घर वालों के साथ खाने पर बैठते हैं, लेकिन इस बात का ख़्याल नहीं होता कि औलाद इस्लामी आदाब का लिहाज़ कर रही है या नहीं? इसलिए हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस हदीस में इस बात की तालीम दे दी कि बड़े का फ़र्ज़ है कि वह बच्चों की तरफ़ निगाह रखे और उनको रोकता रहे और उनको इस्लामी आदाब सिखाए, वरना खाने की बरकत दूर हो जाएगी।

शैतान ने क़ै कर दी

हज़रत उमैया बिन मुख़्शी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक बार हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ रखते थे।

आपके सामने एक आदमी खाना खा रहा था। उसने बिस्मिल्लाह पढ़े बग़ैर खाना शुरू कर दिया था, यहां तक कि सारा खाना खा लिया, सिर्फ़ एक लुक़मा बाक़ी रह गया। जब वह आदमी उस आख़िरी लुक़मे को मुंह की तरफ़ ले जाने लगा तो उस वक़्त याद आया कि मैंने खाना शुरू करने से बिस्मिल्लाह नहीं पढ़ी थी और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तालीम यह है कि जब आदमी खाना खाते वक़्त बिस्मिल्लाह पढ़ना भूल जाए तो खाने के दौरान जब उसको बिस्मिल्लाह पढ़ना याद आ जाए, उस वक़्त वह 'बिस्मिल्लाहि अव्वलुहू व आख़िरूहू' पढ़ ले। जब उस आदमी ने यह दुआ पढ़ी तो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसको देखकर हंसने लगे। फिर आपने फ़रमाया कि जिस वक़्त यह खाना खा रहा था तो शैतान भी उसके साथ खाना खा रहा था, लेकिन जब उसने अल्लाह का नाम लिया और 'बिस्मिल्लाहि अव्वलुहू का आख़िरूहू' पढ़ लिया, तो शैतान ने जो कुछ खाया था, उसकी क़ै कर दी और उस खाने में उसका जो हिस्सा था, इस एक छोटे से जुम्ले की वजह से वह ख़त्म हो गया और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस मंज़र को अपनी आंखों से देखकर तबस्सुम फ़रमाया (यानी आप मुस्कराए) और आपने इस बात की तरफ़ इशारा फ़रमा लिया कि अगर आदमी खाना शुरू करने से पहले बिस्मिल्लाह पढ़ना भूल गया तो जब याद आ जाए, उस वक़्त 'बिस्मिल्लाहि अव्वलुहू व आख़िरुहू' पढ़ ले, इसकी वजह से उस खाने की बे-बरकती ख़त्म हो जाएगी।

—अबू दाऊद, किताबुल अतअमा, हदीस न० 3768

यह खाना अल्लाह की अता है

इन हदीसों से मालूम हुआ कि खाना शुरू करने से पहले 'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम' पढ़ लेना चाहिए और कहने को तो यह मामूली बात है कि 'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम' पढ़कर खाना शुरू कर दिया, लेकिन अगर ख़ुद ग़ौर करोगे तो मालूम होगा कि यह इतनी शानदार इबादत है कि इसकी वजह से एक तरफ़ तो यह खाना खाना इबादत और सवाब की वजह बन जाता है और दूसरी तरफ़ आदमी ज़रा ध्यान से 'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम' कह ले, तो उसकी वजह से अल्लाह की मारफ़त का बहुत बड़ा दरवाज़ा खुल जाता है, इसलिए कि यह 'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम' पढ़ना हक़ीक़त में इंसान को इस तरफ़ मुतवज्जह कर रहा है कि जो खाना मेरे सामने इस वक़्त मौजूद है, वह मेरे बाज़ू की ताक़त का करिश्मा नहीं है, बल्कि किसी देने वाले की अता है। मेरे बस में यह बात नहीं थी कि मैं यह खाना मुहैया कर लेता और इसके ज़रिए अपनी ज़रूरत पूरी कर लेता, अपनी भूख मिटा देता, यह महज़ अल्लाह की अता है और उसका करम है कि उसने मुझे यह खाना अता फ़रमा दिया।

यह खाना तुम तक किस तरह पहुंचा?

और हक़ीक़त में यह 'बिस्मिल्लाह' का पढ़ना एक तरफ़ तवज्जोह दिलाता है कि ज़रा ग़ौर तो करो कि यह एक नवाला जो तुमने मुंह में रखा और एक सिकेंड में तुमने हलक़ से नीचे उतार लिया, इस एक नवाले को तुम्हारे मुंह तक पहुंचांने के लिए क़ायनात की कितनी ताक़तें लगीं। ज़रा सोचो तो सही कि रोटी का यह एक टुकड़ा किस तरह तुम तक पहुंचा? कहां किस किसान ने बीज बोने से पहले

ज़मीन को नर्म और हमवार करने के लिए कितनी मुद्दत तब बैलों के ज़रिए हल चलाया? और फिर उस ज़मीन के अन्दर बीज डाला और फिर उसको पानी दिया, फिर उसके ऊपर लगातार हवाएं चलीं, सूरज ने उसके ऊपर अपनी रोशनी की किरनें डालीं और अल्लाह ने बादल भेजकर बारिश बरसाई। इसके बाद जाकर बारीक और कमज़ोर-सी एक कोंपल ज़ाहिर हुई और यह कोंपल इतनी कमज़ोर थी कि अगर एक छोटा-सा बच्चा भी उसको अपने हाथ से दबा दे; तो वह मसल जाए। लेकिन ज़मीन जैसी सख़्त चीज़ का पेट फाड़ कर उसमें शगाफ़ डालकर नमूदार हो रही है, फिर उस कोंपल से पौधा बना और पौधे से पेड़ बना और फिर उसके ऊपर ख़ोशे नमूदार हुए और फिर उस पर ग़ल्ले के दाने पैदा हुए, फिर कितने इंसान उसको तोड़ने में शरीक हुए और कितने जानवरों ने उसको रौंद कर उसका भूसा अलग और दाना अलग किया, फिर वहां से कितने शहरों में होता हुआ तुम्हारे शहर में पहुंचा और कितने इंसान उसके ख़रीदने और पहुंचनें में शरीक हुए, फिर किसने उस गेहूं को चक्की में पीस कर आटा बनाया और फिर उसको ख़रीद कर अपने घर लाए और किसने उस आटा को गूंध कर रोटी पकाई? और जब वह रोटी तुम्हारे सामने आई तो तुमने एक लम्हे के अन्दर मुंह में डालकर हलक़ से नीचे उतार दिया।

अब ज़रा सोचो, क्या यह तुम्हारी क़ुदरत में था कि तुम कायनात की इन सारी ताक़तों को जमा करके रोटी के एक नवाले को तैयार करके हलक़ से नीचे उतार देते? क्या आसमान से बारिश बरसाना तुम्हारी क़ुदरत में था? क्या सूरज की किरनों को पहुंचाना तुम्हारी क़ुदरत में था? क्या तुम्हारी क़ुदरत में यह था कि तुम इस कमज़ोर कोंपल को ज़मीन से निकालते? क़ुरआन करीम में अल्लाह तआला

फ़रमाते हैं—

افرايتم ماتحرثون، أ أنتم تزرعونه ام نحن الزارعون (سورہ واقعہ:٦٣)

'अ-फ़-र ऐतुम मा तहरुसून० अन्तुम तज़रअनहू अम नह्नुज़्ज़ारिऊन०'

—सूर वाक़िया 63

यानी ज़रा ग़ौर करो कि तुम जो चीज़ ज़मीन में डालते हो, क्या तुम उसके उगाने वाले हो? या हम उसको उगाते हैं? तुम इसके लिए कितने भी पैसे ख़र्च कर लेते? कितने ही वसाइल जमा कर लेते? मगर फिर भी यह काम तुम्हारे बस में नहीं था, यह सब अल्लाह तआला की अता है और उनका करम है कि उन्होंने मुझे अता फ़रमाया तो वह सारा खाना तुम्हारे लिए इबादत बन जाएगा।

मुसलमान और काफ़िर के खाने में इम्तियाज़

हमारे हज़रत डाक्टर अब्दुल हई साहब क़द्द-स सिर्रहू—अल्लाह तआला उनके दर्जे बुलन्द फ़रमाए, आमीन—फ़रमाया करते थे कि दीन हक़ीक़त में ज़ाविया-ए-निगाह की तब्दीली का नाम है। ज़रा सा ज़ाविया-ए-निगाह बदल लो, तो यही दुनिया दीन बन जाएगी, जैसे यही खाना 'बिस्मिललाह' पढ़े बग़ैर खा लो और अल्लाह की नेमत समझते हुए खा लो, तो फिर इस खाने की हद तक तुममें और काफ़िर में कोई फ़र्क़ नहीं। इसलिए कि खाना काफ़िर भी खा रहा है और तुम भी खा रहे हो? इस खाने के ज़रिए से तुम्हारी भूख दूर हो जाएगी और ज़ुबान को चटख़ारा मिल जाएगा, लेकिन वह खाना तुम्हारी दुनिया है, दीन से इसका कोई ताल्लुक़ नहीं और जैसे गाय, भैंस और बकरी और दूसरे जानवर खा रहे हैं, उसी तरह तुम भी खा रहे हो, दोनों में कोई फ़र्क़ नहीं।

ज़्यादा खाना कमाल नहीं

दारुल उलूम देवबन्द के बानी हज़रत मौलाना मुहम्मद क़ासिम साहब नानौतवी रहमतुल्लाहि अलैहि का एक बड़ा हिक्मत भरा वाक़िया है। उनके ज़माने में आर्य समाजी हिन्दुओं ने इस्लाम के ख़िलाफ़ बड़ा शोर मचाया हुआ था। हज़रत नानौतवी रहमतुल्लाहि अलैहि उन आर्य समाज वालों से मुनाज़रा किया करते थे, ताकि लोगों पर हक़ीक़ते हाल वाज़ेह हो जाए। चुनांचे एक बार आप एक मुनाज़रा के लिए तशरीफ़ ले गए, वहां एक आर्य समाजी पंडित से मुनाज़रा था और मुनाज़रे से पहले खाने का इन्तिज़ाम था। हज़रत नानौतवी रहमतुल्लाहि अलैहि बहुत थोड़ा खाने के आदी थे। जब खाना खाने बैठे तो हज़रते वाला कुछ नवाले खाकर उठ गए और जो आर्य समाज के आलिम थे, वह खाने के उस्ताद थे, उन्होंने ख़ूब डट कर खाया। जब खाने से फ़राग़त हुई तो मेज़बान ने हज़रत नानौतवी रहमतुल्लाहि अलैहि से फ़रमाया कि हज़रत! आपने तो बहुत थोड़ा-सा खाना खाया। हज़रत ने फ़रमाया कि मुझे जितनी ख़्वाहिश थी उतना खा लिया—वह आर्य समाजी भी क़रीब बैठा हुआ था। उसने हज़रत से कहा कि मौलाना! आप खाने के मुक़ाबले में तो अभी से हार गए और यह आपके लिए बद फ़ाली है कि जब आप खाने पर हार गए तो अब दलीलों का मुक़ाबला होगा, तो इसमें भी आप हार जाएंगे। हज़रत नानौतवी रहमतुल्लाहि अलैहि ने जवाब दिया कि भाई! अगर खाने के अन्दर मुनाज़रा और मुक़ाबला करना था, तो मुझसे करने की क्या ज़रूरत थी, किसी भैंस या बैल से कर लिया होता। अगर उससे मुनाज़रा करेंगे तो आप यक़ीनन भैंस से हार

जाएंगे। मैं तो दलीलों में मुनाज़रा करने आया था, खाने में मुनाज़रा और मुक़ाबला करने तो नहीं आया था।

जानवर और इंसान में फ़र्क़

हज़रत नानौतवी रहमुल्लाहि अलैहि ने इस जवाब में इस तरफ़ इशारा फ़रमा दिया कि अगर ग़ौर से देखा तो खाने-पीने के अन्दर इंसान और जानवर में कोई फ़र्क़ नहीं। जानवर भी खाता है और इंसान भी खाता है और अल्लाह हर जानवर को रोज़ी देते हैं और कभी-कभी उनको तुमसे अच्छी रोज़ी देते हैं, लेकिन उनके दर्मियान और तुम्हारे दर्मियान फ़र्क़ यह है कि तुम खाना खाते वक़्त अपने खिलाने वाले को भूलो नहीं, बस जानवर और इंसान में यही फ़र्क़ है।

हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम की मख़्लूक़ को दावत

वाक़िया लिखा है जब अल्लाह ने हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम को सारी दुनिया पर हुकूमत अता फ़रमा दी तो उन्होंने अल्लाह तआला से दर्ख़्वास्त की या अल्लाह! जब आपने मुझे सारी दुनिया पर हुकूमत अता फ़रमा दी तो मेरा दिल चाहता है कि मैं आपकी सारी मख़्लूक़ की एक साल तक दावत करूं। अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि यह काम तुम्हारी क़ुदरत और बस में नहीं। उन्होंने फिर दर्ख़्वास्त की या अल्लाह! एक माह की इजाज़त की दावत की इजाज़त दे दें। अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि यह तुम्हारी क़ुदरत में नहीं।

आख़िर में हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि या अल्लाह! एक दिन की इजाज़त दे दें। अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि तुम इसकी भी क़ुदरत नहीं रखते, लेकिन अगर तुम्हारा इसरार है तो चलो, हम तुम्हें इसकी इजाज़त दे देते हैं। जब इजाज़त मिल

गई तो हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने जिन्नों और इंसानों को जिंस और ग़िज़ाएं जमा करने का हुक्म दिया और खाना पकना शुरू हुआ और कई महीनों तक खाना तैयार होता रहा और फिर समुद्र के किनारे एक बहुत लंबा-चौड़ा दस्तरख़्वान बिछाया गया और उस पर खाना चुना गया और हवा को हुक्म दिया कि वह उस पर चलती रहे ताकि खाना ख़राब न हो जाए। इसके बाद हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला से दरख़्वास्त की, या अल्लाह! खाना तैयार हो गया है। आप अपनी मख़्लूक़ में से किसी को भेज दें। अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि हम पहले समुद्री मख़्लूक़ में से एक मछली को तुम्हारी दावत खाने के लिए भेज देते हैं। चुनांचे एक मछली समुद्र से निकली और कहा कि ऐ सुलैमान! मालूम हुआ है कि आज तुम्हारी तरफ़ से दावत है? उन्होंने फ़रमाया, हां, तशरीफ़ लाएं, खाना खाएं। चुनांचे उस मछली ने दस्तरख़्वान के एक किनारे से खाना शुरू किया और दूसरे किनारे तक सारा खाना ख़त्म कर गई। फिर हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने कहा कि और लाएं। हज़रत सुलैमान ने फ़रमाया कि तुम तो सारा खाना खा गईं। मछली ने कहा कि क्या मेज़बान की तरफ़ से मेहमान को यह जवाब दिया जाता है। जब से मैं पैदा हुई हूं, उस वक़्त से लेकर आज तक हमेशा पेट भरकर खाना खाया है, लेकिन आज तुम्हारी दावत की वजह से भूखी जा रही हूं और जितना खाना तुमने तैयार किया था, अल्लाह तआला रोज़ाना तुझे उतना खाना दिन में दो बार खिलाते हैं, मगर आज पेट भर के खाना नहीं मिला। पस हज़रत सुलैमान फ़ौरन सज्दे में गिर गए और इस्तग़फ़ार किया। —नफ़्हतुल अरब, पृ० 110

खाना खाकर अल्लाह का शुक्र अदा करो

बहरहाल अल्लाह तआला हर एक मख़्लूक़ को रोज़ी दे रहे हैं, समुद्र की तह में और उसकी तारीकियों में रोज़ी दे रहे हैं। क़ुरआन करीम में है कि, 'कोई जानवर ज़मीन पर चलने वाला ऐसा नहीं है कि उसकी रोज़ी अल्लाह के ज़िम्मे न हो।' —सूरः हूद 6

इसलिए खाने की हद तक तुम्हारे और जानवरों के दर्मियान कोई फ़र्क़ नहं। अल्लाह की नेमतें उसको भी मिल रही हैं, जानवरों को तो छोड़िए अल्लाह तआला तो अपने उन दुश्मनों को भी रोज़ी दे रहा है जो अल्लाह के वजूद का इंकार कर रहे हैं, ख़ुदा का मज़ाक़ उड़ा रहे हैं, ख़ुदा की तौहीन कर रहे हैं, जो उसके लाए हुए दीन का मज़ाक़ उड़ा रहे हैं। अल्लाह तआला उनको भी रोज़ी दे रहा है, इसलिए खाने के एतबार से तुममें और उनमें क्या फ़र्क़ है? वह फ़र्क़ यह है कि जानवर और काफ़िर और मुश्रिक सिर्फ़ ज़ुबान के चटखारे और पेट की आग बुझाने की ख़तिर खाता है, इसलिए वह खाना खाते वक़्त अल्लाह का नाम नहीं लेता, अल्लाह का ज़िक्र नहीं करता, तुम मुसलमान हो, तुम ज़रा-सा ख़्याल और ध्यान करके, इस खाने को अल्लाह की अता समझ कर, उसका नाम लेकर खाओ और फिर उसका शुक्र अदा करो, तो यही खाना दीन बन जाएगा।

हर काम के वक़्त ज़ाविया-ए-निगाह बदल लो

मेरे हज़रत डाक्टर साहब क़द्दसल्लाहु सिर्रहू फ़रमाया करते थे कि मैंने वर्षों इस बात की मश्क़ की है, जैसे घर में दाख़िल हुआ और खाने का वक़्त आया और दस्तरख़्वान पर बैठे, खाना सामने आया अब भूख तेज़ है और खाना भी लज़्ज़तदार है, दिल चाह रहा है कि

फ़ौरन खाना शुरू कर दूं, लेकिन एक लम्हे के लिए खाने से रुक गया और दिल से कहा कि यह खाना नहीं खाएंगे। इसके बाद दूसरे लम्हे यह सोचा कि यह खाना अल्लाह की अता है और जो अल्लाह तआला ने मुझे अता फ़रमाया है यह मेरे बाज़ू की ताक़त का करिश्मा नहीं है और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुबारक आदत यह थी कि जब खाना सामने आता तो अल्लाह का शुक्र अदा करके उसको खा लिया करते थे। इसलिए मैं भी हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैरवी में इस खाने को खाऊंगा, इसके बाद बिस्मिल्लाह पढ़कर खाना शुरू करता।

घर में दाख़िल हुए और बच्चा खेलता हुआ अच्छा मालूम हुआ, दिल चाहा कि उसको गोद में उठाकर प्यार करें, लेकिन एक लम्हे के लिए रुक गए और सोचा कि महज़ दिल के चाहने पर बच्चे को गोद में नहीं लेंगे, फिर दूसरे लम्हे यह ख़्याल लाए कि हदीस शरीफ़ में है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बच्चों से मुहब्बत फ़रमाया करते थे और उनको गोद में ले लिया करते थे। अब मैं भी आपकी सुन्नत की पैरवी में बच्चे को गोद में उठाऊंगा—हज़रते वाला फ़रमाया करते थे कि मैंने वर्षों इस अमल की मश्क़ की है और यह शेर सुनाया करते थे—

जिगर पानी किया है मुद्दतों ग़म की कशाकश में,
कोई आसान है क्या ख़ूगरे आज़ार हो जाना।

वर्षों की मश्क़ के बाद यह चीज़ हासिल हुई है और अलहम्दुलिल्लाह अब पीछे नहीं होता। अब जब भी इस क़िस्म की कोई नेमत सामने आती है तो पहले ज़ेहन इस तरफ़ जाता है कि यह अल्लाह तआला की अता है और फिर उस पर शुक्र अदा करके बिस्मिल्लाह पढ़कर

इस काम को कर लेता हूं और अब आदत पड़ गई है और इसी को ज़ाविया-ए-निगाह की तब्दीली कहते हैं। इसके नतीजे में दुनिया की चीज़ दीन बन जाती है।

खाना—एक नेमत

एक बार हज़रत डाक्टर साहब क़द्दसल्लाहु सिर्रहू के साथ एक दावत में गए। जब दस्तरख़्वान पर खाना खाया और खाना शुरू किया गया तो हज़रते वाला ने फ़रमाया कि तुम ज़रा ग़ौर करो कि इस एक खाने में जो तुम इस वक़्त खा रहे हो, उसमें अल्लाह तआला की अलग-अलग क़िस्म की कितनी नेमतें शामिल हैं। सबसे पहले तो खाना मुस्तक़िल नेमत है, इसलिए अगर इंसान शदीद भूखा हो और भूख की वजह से मर रहा हो और खाने की कोई चीज़ मयस्सर न हो, तो उस वक़्त चाहे कितना ख़राब से ख़राब खाना उसके सामने लाया जाए, वह उसको भी ग़नीमत समझ कर खाने के लिए तैयार हो जाएगा और इसको भी अल्लाह तआला की एक नेमत समझेगा। इससे मालूम हुआ कि खाना अच्छा हो या बुरा हो, लज़्ज़तदार हो या बेमज़ा हो, वह खाना अपने आपमें एक नेमत है, इसलिए कि वह भूख की तक्लीफ़ को दूर कर रहा है।

खाने की लज़्ज़त—दूसरी नेमत

दूसरी नेमत यह है कि यह खाना मज़ेदार भी है, अभी तबियत के मुताबिक़ भी है। अब अगर खाना तो मौजूद होता, लेकिन मज़ेदार न होता और अपनी तबियत के मुवाफ़िक़ न होता तो ऐसे खाने को खाकर किसी तरह पेट भरकर भूख मार लेते, लेकिन लज़्ज़त हासिल नहीं होती।

इज़्ज़त से खाना मिलना–तीसरी नेमत

तीसरी नेमत यह है कि खिलाने वाला इज़्ज़त से खिला रहा है। अब अगर खाना भी मयस्सर होता, और मज़ेदार भी होता, लज़्ज़तदार भी होता, लेकिन खिलाने वाला ज़िल्लत के साथ खिलाता और जैसे किसी नौकर और गुलाम को खिलाया जाता है, उस तरह ज़लील करके खिलाता, तो उस वक़्त उस खाने की सारी लज़्ज़त धरी रह जाती और सारा मज़ा ख़राब हो जाता जैसे किसी ने कहा है कि–

ऐ ताहरे लाहूती उस रिज़्क़ से मौत अच्छी
जिस रिज़्क़ से आती हो परवाज़ में कोताही।

इसलिए अगर कोई आदमी ज़लील करके खाना खिला रहा है, तो उस खाने में कोई लुत्फ़ नहीं, वह खाना बे-हक़ीक़त है, अलहम्दु लिल्लाह हमें यह तीसरी नेमत भी हासिल है कि खिलाने वाला इज़्ज़त से खिला रहा है।

भूख लगना–चौथी नेमत

चौथी नेमत यह है कि भूख और खाने की ख़्वाहिश भी है, इसलिए कि अगर खाना भी मयस्सर होता और वह खाना लज़्ज़तदार भी होता और खिलाने वाला इज़्ज़त से भी खिलाता, लेकिन भूख न होती और मेदा ख़राब होता, तो इस शक्ल में अच्छे से अच्छा खाना भी बेकार है, इसलिए कि इंसान उनको नहीं खा सकता, जो अलहम्दु लिल्लाह! खाना भी लज़्ज़तदार है, खिलाने वाला इज़्ज़त से खिला रहा है और खाने की भूख और ख़्वाहिश भी मौजूद है।

खाने के वक़्त आफ़ियत–पांचवीं नेमत

पांचवीं नेमत यह है कि आफ़ियत और इत्मीनान के साथ खा रहे

हैं, कोई परेशानी नहीं है, इसलिए खाना तो लज़ीज़ होता, खिलाने वाला इज़्ज़त से भी खिलाता, भूख भी लगती लेकिन तबियत में कोई ऐसी परेशानी लगी होती, कोई फ़िक्र तबियत पर होती, उस वक़्त कोई ख़तरनाक क़िस्म की ख़बर मिल जाती, जिससे दिल व दिमाग़ परेशान और माऊफ़ हो जाता, तो ऐसी सूरत में भूख होते हुए भी वह खाना इंसान के लिए बेकार हो जाता। अलहम्दु लिल्लाहि! आफ़ियत और इत्मीनान हासिल है, कोई ऐसी परेशानी नहीं है जिसकी वजह से खाना बे-इज़्ज़त बेमज़ा हो जाता।

दोस्तों के साथ खाना—छठी नेमत

छठी नेमत यह है कि अपने दोस्तों के साथ मिलकर खाना खा रहे हैं। अगर ये सब नेमतें हासिल होतीं, लेकिन अकेले बैठे खाना रहे होते, इसलिए तंहा खाने में और अपने दोस्त-अह्बाब के साथ मिलकर खाने में बड़ा फ़र्क़ है। अपने दोस्त-अह्बाब के साथ मिलकर खाने में जो कैफ़ और लुत्फ़ हासिल होता है, वह तंहा खाते वक़्त हासिल नहीं हो सकता, इसलिए यह एक मुस्तक़िल नेमत है। बहरहाल, फ़रमाया करते थे कि यह खाना एक नेमत है, लेकिन इस एक खाने में अल्लाह की कितनी नेमतें शामिल हैं, तो क्या फिर भी अल्लाह का शुक्र नहीं अदा करोगे?

यह खाना इबादतों का मज्मूआ है

इसलिए जब यह खाना इस सोच के साथ खाया कि अल्लाह ने मुझे इतनी नेमतें अता फ़रमाई हैं तो फिर हर नेमत पर अल्लाह का शुक्र अदा करके खाना खाओ और फिर जब इस तरह हर नेमत पर

शुक्र आदा करते हुए खाओगे तो एक तरफ़ तो खाने के अन्दर इबादतों में इज़ाफ़ा हो रहा है, इसलिए कि अगर सिर्फ़ 'बिस्मिल्लाह' पढ़कर खाना खा लेते और उन नेमतों की सोच न करते होते तो भी वह खाना इबादत बन जाता लेकिन कई नेमतों पर सोचते हुए और उन पर अल्लाह का शुक्र अदा करते हुए खाना खाया तो यह खाना बहुत-सी इबादतों का मजमूआ बन गया और उसके नतीजे में यह खाना, जो हक़ीक़त में दुनिया है, एक तरफ़ उसके ज़रिए लज़्ज़त भी हासिल हो रही है और दूसरी तरफ़ तुम्हारी नेकियों में भी इज़ाफ़ा की वजह बन रहा है। बस इसी का नाम 'ज़ाविया-ए-निगाह की तब्दीली' है। इस ज़ाविया-ए-निगाह की तब्दीली से इंसान की दुनिया भी दीन बन जाती है। मौलाना शेख़ सादी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि—

अब्र व बाद व मह व ख़ुर्शीद व फ़लक दर कारंद
ता तू नाने बकफ़ आरी व बग़फ़लत न ख़ोरी
—गुलिस्ताने सादी

यानी अल्लाह तआला ने यह आसमान, यह ज़मीन, यह बादल, यह चांद, यह सूरज, इन सबको तुम्हारी ख़िदमत के लिए लगाया हुआ है, ताकि एक रोटी तुम्हें हासिल हो जाए, मगर इस रोटी को ग़फ़लत के साथ मत खाना, बस तुम्हारा काम सिर्फ़ इतना ही है, बल्कि अल्लाह का नाम लेकर, अल्लाह का ज़िक्र करके खाओ और अगर खाने से पहले भूल जाओ, तो जब याद आ जाए, उस वक़्त 'बिस्मिल्लाहे अव्वलुहू व आख़िरुहू' पढ़ लो।

नफ़्ल काम की तलाफ़ी

हमारे हज़रत डाक्टर अब्दुल हई साहब क़द्दसल्लाहु सिर्रहू ने इस हदीस की बुनियाद पर जिसमें दुआ भूल जाने का ज़िक्र है, फ़रमाया कि जब भी आदमी कोई नफ़्ली इबादत अपने वक़्त पर अदा करना भूल गया, या किसी उज़्र की वजह से वह नफ़्ली इबादत न कर सका, तो यह न समझे कि बस अब उस नफ़्ली इबादत का वक़्त तो चला गया, अब छुट्टी हो गई, बल्कि बाद में जब मौक़ा मिल जाए, उस नफ़्ली इबादत का कर ले—चुनांचे एक बार, हम लोग हज़रते वाला क़द्दसल्लाहु सिर्रहू के साथ एक इज्तिमा में शिर्कत के लिए जा रहे थे। मग़्रिब के वक़्त वहां पहुंचना था, मगर हमें निकलते हुए देर हो गई, उसकी वजह से मग़्रिब की नमाज़ रास्ते में ही एक मस्जिद में पढ़ी, चूंकि ख़्याल यह था कि वहां पर लोग इंतिज़ार में होंगे, इसलिए हज़रते वाला ने सिर्फ़ तीन फ़र्ज़ और दो सुन्नतें पढ़ीं और हमने भी तीन फ़र्ज़ और दो सुन्नतें पढ़ लीं और वहां से जल्दी रवाना हो गए। ताकि जो लोग इन्तिज़ार कर रहे हैं, उनको इन्तिज़ार ज़्यादा न करना पड़े, चुनांचे थोड़ी देर बाद वहां पहुंच गए। इज्तिमा हुआ, फिर इशा की नमाज़ भी वहीं पढ़ी और रात के दस बजे तक इज्तिमा रहा। फिर जब हज़रते वाला वहां से रुख़्सत होने लगे, तो हम लोगों को बुलाकर पूछा कि भाई! आज मग़्रिब के बाद की अव्वाबीन कहां गई? हमने कहा, हज़रत! आज तो वह रह गई, चूंकि रास्ते में जल्दी थी, इसलिए नहीं पढ़ सके। हज़रते वाला ने फ़रमाया कि रह गई और बग़ैर किसी मुआवज़े के रह गई! हमने कहा कि हज़रत! चूंकि लोग इन्तिज़ार में थे, जल्दी पहुंचना था, इस उज़्र की वजह से अव्वाबीन की नमाज़ रह

गई। हज़रत ने फ़रमाया कि अलहम्दु लिल्लाह! जब मैंने इशा की नमाज़ पढ़ी, तो इशा की नमाज़ के साथ जो नफ़्लें पढ़ा करता हूं, उनके अलावा मज़ीद छः रक्अतें पढ़ लीं। अब अगरचे वे नफ़्लें अव्वाबीन न हों, इसलिए कि अव्वाबीन का वक़्त तो मग़्रिब बाद है, लेकिन यह सोचा कि वे छः रक्अतें जो छूट गई थीं, किसी तरह उनकी तलाफ़ी कर ली जाए। अलहम्दु लिल्लाह! मैंने तो अब छः रक्अतें पढ़कर अव्वाबीन की तलाफ़ी कर ली है—अब तुम जानो तुम्हारा काम!

फिर फ़रमाया, तुम मौलवी हो, यह कहोगे कि नफ़्लों की क़ज़ा नहीं होती, इसलिए कि मस्अला यह है कि फ़राइज़ और वाजिबात की क़ज़ा होती है, सुन्नत और नफ़्ल की क़ज़ा नहीं होती। आपने अव्वाबीन कैसे क़ज़ा कर ली? तो भाई! तुमने वह हदीस पढ़ी है, जिसमें हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया था कि अगर तुम खाने के शुरू में बिस्मिल्लाह पढ़ना भूल जाओ, तो जब दर्मियान में याद आ जाए तो उस वक़्त पढ़ लो, और अगर आख़िर में याद आ जाए, उस वक़्त पढ़ लो। अब दुआ पढ़ना कोई फ़र्ज़ व वाजिब तो था नहीं, फिर आपने यह क्यों फ़रमाया कि बाद में पढ़ लो। बात असल में यह है कि एक नफ़्ल और मुस्तहब काम, जो एक नेकी का काम था और जिसके ज़रिए आमालनामे में इज़ाफ़ा हो सकता था, वह अगर किसी वजह से छूट गया तो उसको बिल्कुल ही मत छोड़ दो, दूसरे वक़्त कर लो। अब चाहे उसको क़ज़ा कहो, या न कहो, लेकिन इस नफ़्ल काम की तलाफ़ी हो जाए।

यही बातें बुज़ुर्गों से सीखने की होती है। उस दिन हज़रते वाला ने एक अज़ीम बाब खोल दिया। हम लोग वाक़ई यही समझते थे

और फ़िक़्ह के अन्दर लिखा है कि नफ़्लों की क़ज़ा नहीं होती, लेकिन अब मालूम हुआ कि ठीक है, क़ज़ा तो नहीं हो सकती, लेकिन तलाफ़ी तो हो सकती हुआ, इसलिए कि इस नफ़्ल के छूटने की वजह से नुक़्सान हो गया। नेकियां तो गईं, लेकिन बाद में जब अल्लाह तआला फ़राग़त की नेमत अता फ़रमाए, उस वक़्त इस नफ़्ल को अदा कर लो। अल्लाह तआला हज़रते वाला के दर्जे बुलन्द फ़रमाए। आमीन

दस्तरख़्वान उठाते वक़्त की दुआ

"عن ابی امامة رضی اللہ عنه ان النبی ﷺ كان اذا رفع مائدته قال: الحمد لله حمدا كثيرا طيبا مباركا فيه، غيرمكفى ولامودع ولامستغنى عنه ربنا" (صحیح بخاری، کتاب الاطعمة باب مايقول اذا فرغ من طعامه: ٥٤٥٨)

हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब दस्तरख़्वान उठता तो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह दुआ पढ़ा करते थे—

"الحمد لله حمدا كثيراً طيبًا مباركا فيه، غيرمكفى ولامودع ولامستغنى عنه ربنا"

'अलहम्दु लिल्लाहि हम्दन कसीरन तैयिबन मुबारकन फ़ीहि ग़ैर-मुक्फ़ीयिन वला मूदिइन वला मुस्तग़्नी अन्हु दीनन।'

हज़रत अबू उमामा रज़ि० अल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब दस्तरखान उठता तो हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह दुआ पढ़ा करते थे—

यह अजीब व ग़रीब दुआ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम ने तलक़ीन फ़रमाई। इसकी तलक़ीन इसलिए फ़रमाई कि इंसान का भी अजीब मिज़ाज है, वह यह कि जब इंसान को किसी चीज़ की शदीद ख़्वाहिश और हाजत होती है, उस वक़्त तो वह उसके लिए शदीद बेताब होता है, लेकिन जब उस चीज़ की हाजत पूरी हो जाए और उससे दिल भर जाए तो फिर उसी चीज़ से उसे नफ़रत होने लगती है, जैसे जब इंसान को भूख है तो उस वक़्त उसको खाने की तरफ़ रग़बत और शौक़ था और खाने की तरफ़ तबियत माइल हो रही थी, लेकिन जब पेट भर गया और भूख मिट गयी, तो उसके बाद अगर वही खाना दोबारा लाया जाए, तो तबियत उसी से नफ़रत करती है और कभी-कभी खाने को सोचकर मतली आने लगती है। इसलिए हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस दुआ के ज़रिए यह तालीम दी कि यह तुम्हारे दिल में खाने की नफ़रत पैदा हो रही है। इस नफ़रत के नतीजे में कहीं अल्लाह के रिज़्क़ की नाक़द्री और नाशुक्री न हो जाए। इसलिए आपने यह दुआ फ़रमाई कि या अल्लाह! इस वक़्त यह दस्तरख़्वान हम अपने सामने से उठा तो रहे हैं, लेकिन इस वजह से नहीं उठा रहे हैं कि हमारे दिल में इसकी क़द्र नहीं, बल्कि उसी खाने ने हमारी भूख भी मिटाई और उसी खाने के ज़रिए हमें लज़्ज़त भी हासिल हुई और न इस वजह से उठा रहे हैं कि हम इससे मुस्तग़्नी और बेनियाज़ हैं। ऐ अल्लाह! हम इससे बेनियाज़ नहीं हो सकते, इसलिए कि दोबारा हमें इसकी ज़रूरत और हाजत पेश आएगी। दस्तरख़्वान उठाते वक़्त यह दुआ कर लो, ताकि अल्लाह के रिज़्क़ की नाक़द्री न हो और दूसरी इबादत की भी दुआ हो जाए कि या अल्लाह! हमें दोबारा यह रोज़ी अता फ़रमाइए।

खाने के बाद की दुआ पढ़कर गुनाह माफ़ करा लें

عن معاذ بن انس رضی اللہ عنہ قال: قال رسول اللہ ﷺ: من اکل طعاما فقال! الحمد للّٰہ الذی اطعمنی ھذا ورزقنیہ من غیر حول منی ولاقوۃ غفرلہ ماتقدم من ذنبہ" (ترمذی، کتاب الدعوات باب مایقول اذا فرغ من الطعام: ٣٤٥٤)

हज़रत मुआज़ बिन अनस रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जो आदमी खाना खाने के बाद अगर ये लफ़्ज़ कहे, 'उस अल्लाह का शुक्र है जिसने मुझे यह खाना खिलाया और मेरी ताक़त और क़ूवत के बग़ैर यह खाना मुझे अता फ़रमाया', उसके यह कहने से अल्लाह तआला उसके तमाम पिछले गुनाह माफ़ फ़रमा देते हैं। अब आप यह अन्दाज़ा लगाएं कि यह छोटा-सा अमल है लेकिन इसका अज्र व सवाब यह है कि तमाम पिछले गुनाह माफ़ हो जाते हैं, यह उनका कितना बड़ा करम है।

अमल छोटा, सवाब बड़ा

यह बात मैं पहले भी कई बार अर्ज़ कर चुका हूं कि जहां कहीं हदीसों में यह आता है कि फ़्लां अमल से गुनाह माफ़ हो जाते हैं, उससे मुराद छोटे गुनाह होते हैं और बड़े गुनाहों के बारे में क़ायदा यह है कि वे बग़ैर तौबा के माफ़ नहीं होते। इस तरह बन्दों के हक़ भी हक़ वाले के माफ़ किए बग़ैर माफ़ नहीं होते, लेकिन अल्लाह तआला छोटे गुनाहों को नेक अमल के ज़रिए भी माफ़ फ़रमा देते हैं, इसलिए अगर कोई आदमी खाना खाने के बाद यह दुआ पढ़ ले तो अल्लाह उसके तमाम छोटे गुनाह माफ़ फ़रमा देते हैं और वह आदमी

छोटे गुनाहों से पाक हो जाता है, यह इतना छोटा-सा अमल है लेकिन इस पर सवाब इतना बड़ा है। हमारे हज़रत डाक्टर साहब रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाया करते थे कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हम सबको नुस्ख़ा कीमिया बता गए, अब चाहे इस दुआ को आदमी ज़ोर से पढ़े या हल्की आवाज़ से पढ़े, या दिल में पढ़ ले तो शुक्र की नेमत हासिल हो जाती है और आदमी उस नेमत का हक़दार हो जाता है। अल्लाह अपने फ़ज़्ल से इन आदाब पर हम सबको अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए, आमीन!

खाने के अन्दर ऐब न निकालो

"عن ابی هريرة رضى الله عنه قال: ماعاب رسول الله ﷺ طعاما قط، ان اشتهاه اكله، وان كرهه تركه"

(صحيح بخاری، کتاب الاطعمة باب ماعاب النبی ﷺ طعاما: ٥٤٠٩)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कभी किसी खाने में ऐब नहीं निकाला और किसी खाने की बुराई नहीं की। अगर उसके खाने की ख़्वाहिश होती तो खा लेते और अगर खाने की ख़्वाहिश न होती तो उसको छोड़ देते, यानी अगर खाना पसन्द नहीं है तो उसको नहीं खाया, मगर उसकी बुराई बयान नहीं करते थे इसलिए कि जो खाना है, वह चाहे हमें पसन्द आ रहा हो या पसन्द न आ रहा हो, लेकिन वह अल्लाह का दिया हुआ रिज़्क़ है और अल्लाह के दिए हुए रिज़्क़ का एहतराम और उसकी ताज़ीम हमारे ज़िम्मे वाजिब है।

कोई बुरा नहीं क़ुदरत के कारख़ाने में

यों तो इस कायनात में कोई चीज़ ऐसी नहीं जो अल्लाह तआला ने किसी हिक्मत और मस्लहत के बग़ैर पैदा की हो। इस कायनात में हर चीज़ अल्लाह तआला ने अपनी हिक्मत और मस्लहत के तहत पैदा फ़रमाई है। हर चीज़ का कोई न कोई अमल और फ़ायदा ज़रूर है। इक़बाल मरहूम ने ख़ूब कहा कि—

नहीं कोई चीज़ निकम्मी ज़माने में
कोई बुरा नहीं क़ुदरत के कारख़ाने में।

अल्लाह तआला ने इस कायनात में कोई चीज़ बुरी नहीं पैदा फ़रमाई, तक्वीनी एतबार से सब अच्छी हैं। हर एक के अन्दर कोई न कोई तक्वीनी मस्लहत ज़रूर है, अलबत्ता जब हमें किसी चीज़ की हिक्मत और मस्लहत का पता नहीं लगता तो हम कह देते हैं कि यह चीज़ बुरी है, वरना हक़ीक़त में कोई चीज़ बुरी नहीं, यहां तक कि वे मख़्लूक़ात जो ज़ाहिर में मूज़ी और तक्लीफ़देह मालूम होती हैं, मसलन सांप-बिच्छू हैं, उनको हम इसलिए बुरा समझते हैं कि कभी-कभी ये हमें नुक़्सान पहुंचाते हैं, लेकिन कायनात के मज्मूई इन्तिज़ाम के लिहाज़ से इनमें भी कोई न कोई हिक्मत और मस्लहत ज़रूर है, इनमें फ़ायदा मौजूद है, चाहे हमें पता चले, या न चले।

एक बादशाह, एक मक्खी

एक बादशाह का क़िस्सा लिखा है कि वह एक दिन अपने दरबार में बड़े शान व शौकत से बैठा हुआ था, एक मक्खी आकर उसकी नाक पर बैठ गई। उस बादशाह ने उसको उड़ा दिया, वह फिर आकर बैठ गई। उसने दोबारा उड़ाया, वह फिर आकर बैठ गई। आपने देखा

होगा कि कुछ मक्खियां बहुत लीचड़ क़िस्म की होती हैं, उनको कितना ही उड़ा लो, वे दोबारा उसी जगह पर आकर बैठ जाती हैं, वह भी इसी क़िस्म की थी। बादशाह ने उस वक़्त कहा कि ख़ुदा जाने यह मक्खी अल्लाह तआला ने क्यों पैदा की? यह तो तक्लीफ़ ही तक्लीफ़ पहुंचा रही है, इसका कोई फ़ायदा तो नज़र नहीं आता, उस वक़्त दरबार में एक बुज़ुर्ग मौजूद थे। उन बुज़ुर्ग ने उस बादशाह से कहा कि इस मक्खी का एक फ़ायदा तो यह है कि तुम जैसे जाबिर और घमंडी इंसानों के दिमाग़ दुरुस्त करने के लिए पैदा की है, तुम अपनी नाक पर मक्खी बैठने नहीं देते, लेकिन अल्लाह ने दिखा दिया कि तुम इतने आजिज़ हो कि अगर एक मक्खी तुम्हें सताना चाहे तो तुम्हारे अन्दर इतनी ताक़त नहीं है कि अपने आपको उसकी तक्लीफ़ से बचा लो—उसकी पैदाइश की यही हिक्मत और मस्लहत क्या कम है—बहरहाल अल्लाह ने हर चीज़ किसी न किसी मस्लहत और हिक्मत के तहत पैदा की है।

एक बिच्छू का अजीब वाक़िया

इमाम राज़ी रहमतुल्लाहि अलैहि मशहूर बुज़ुर्ग और इल्मे कलाम के माहिर गुज़रे हैं। जिन्होंने 'तफ़्सीरे कबीर' के नाम से क़ुरआन की 7 मशहूर तफ़्सीर लिखी है। इस तफ़्सीर में सिर्फ़ सूरः फ़ातिहा की तफ़्सीर दो सौ सफ़हों पर मुश्तमिल है और इस तफ़्सीर में सूरः फ़ातिहा की पहली आयत 'अल-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन०' की तफ़्सीर के तहत एक वाक़िया लिखा है कि मैंने एक बुज़ुर्ग से ख़ुद उनका अपना वाक़िया सुना। वह बग़दाद में रहते थे। वह बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं कि एक दिन शाम को सैर करने के लिए 'दजला नदी' के

किनारे की तरफ़ चला गया। जब मै दजला नदी के किनारे-किनारे चलने लगा, तो मैंने देखा कि मेरे आगे एक बिच्छू चला जा रहा हूं मेरे दिल में ख़्याल आया कि यह बिच्छू भी अल्लाह तआला की मख़्लूक़ है और ज़ाहिर है कि अल्लाह तआला ने उसको किसी न किसी हिक्मत और मस्लहत के तहत ही पैदा किया है, अब इस वक़्त पता नहीं कहां से आ रहा है? कहां जा रहा है? इसकी मंज़िल क्या है? वहां जाकर क्या करेगा? मेरे दिल में ख़्याल आया कि मेरे पास तो वक़्त है, मैं सैर के लिए निकला हूं। आज मैं इस बिच्छू का पीछा करता हूं कि यह कहां जाता है। चुनांचे वह बिच्छू आगे-आगे चलता रहा और मैं उसके पीछे-पीछे चलता रहा। चलते-चलते उसने फिर दरिया की ओर रुख़ किया और किनारे पर जाकर खड़ा हो गया। मैं भी क़रीब ही खड़ा हो गया। थोड़ी देर बाद मैंने देखा कि दरिया में एक कछुआ तैरता हुआ आ रहा है। वह कछुआ आकर किनारे लग गया और यह बिच्छू छलांग लगा कर उसकी पीठ पर सवार हो गया। इस तरह अल्लाह तआला ने नदी पार करने के लिए कश्ती भेज दी। चुनांचे वह कछुआ उसको अपनी पीठ पर सवार करके रवाना हो गया, चूंकि मैंने यह तै कर लिया था कि आज मैं यह देखूंगा कि कहां जा रहा है, इसलिए मैंने भी कश्ती किराए पर ली और उसके पीछे रवाना हो गया, यहां तक कि उस कछुए ने नदी पार की और जाकर उसी तरह दूसरे किनारे पर लग गया और वह बिच्छू छलांग लगा कर उतर गया। अब बिच्छू आगे चला और मैंने उसका फिर पीछा करना शुरू कर दिया।

आगे मैंने देखा कि एक आदमी एक पेड़ के नीचे सो रहा है। मेरे दिल में ख़्याल आया कि शायद यह बिच्छू उस आदमी को काटने जा

रहा है। मैंने सोचा कि मैं उस आदमी को जल्दी से बेदार कर दूं, ताकि वह आदमी इस बिच्छू से बच जाए। लेकिन जब मैं उस आदमी के क़रीब गया तो मैंने देखा कि एक ज़हरीला सांप अपना फन उठाए उस आदमी के सर के पास खड़ा है और क़रीब है कि वह सांप उसको डस ले। इतने में यह बिच्छू तेज़ी के साथ सांप के ऊपर सवार हो गया और उसको ऐसा डंक मारा कि वह सांप बल खाकर ज़मीन पर गिर पड़ा और तड़पने लगा। फिर वह बिच्छू वहां से किसी और मंज़िल पर रवाना हो गया। अचानक उस वक़्त उस सोने वाले आदमी की आंख खुल गई और उसने देखा कि क़रीब से एक बिच्छू जा रहा है। वह तुरन्त एक पत्थर उठाकर उस बिच्छू को मारने के के लिए दौड़ा। मैं क़रीब ही खड़ा हुआ यह सारा मंज़र देख रहा था। इसलिए फ़ौरन उसका हाथ पकड़ लिया और उससे कहा कि तुम जिस बिच्छू को मारने जा रहे हो, यह तुम्हारा मोहसिन है और इसने तुम्हारी जान बचाई है। हक़ीक़त में यह सांप जो यहां मरा हुआ पड़ा है, तुम पर हमला करने वाला था और क़रीब था कि तुम्हें डसकर तुम्हें मौत के घाट उतार दे, लेकिन अल्लाह तआला ने बहुत दूर से इस बिच्छू को तुम्हारी जान बचाने के लिए भेजा है और अब तुम उसी बिच्छू को मारने की कोशिश कर रहे हो। वह बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं कि मैंने उस दिन अल्लाह तआला की रबूबियत का करिश्मा देखा कि किस तरह अल्लाह तआला इस बिच्छू को दूसरे किनारे से उस आदमी की जान बचाने के लिए यहां लाए—बहरहाल दुनिया में कोई चीज़ ऐसी नहीं है जिसके पैदा करने में कोई न कोई तक्वीनी हिक्मत और मस्लहत न हो।

नजासत में पैदा होने वाले कीड़े

एक और क़िस्सा देखा, मालूम नहीं कि सही है या नहीं? अगर सही है तो बड़ी इबरत का वाक़िया है, वह यह कि एक साहब एक दिन अपनी ज़रूरत पूरी कर रहे थे। ज़रूरत पूरी करते वक़्त उनको सफ़ेद-सफ़ेद कीड़े नज़र आए जो कभी-कभी पेट के अन्दर पैदा हो जाते हैं, उन साहब के दिल में यह ख़्याल आया कि और जितनी मख़्लूक़ हैं, उन सबकी पैदाइश की कोई न कोई हिक्मत और मस्लहत समझ में आती है, लेकिन यह जानदार मख़्लूक़, जो नजासत में पैदा हो जाती है, नजासत के साथ निकलती है और नजासत के साथ ही बहा दी जाती है, उसका कोई अमल और फ़ायदा ही नज़र नहीं आता, पता नहीं अल्लाह तआला ने यह मख़्लूक़ किस मस्लहत से पैदा की है?

कुछ दिनों के बाद उन साहब की आंख में कुछ तक्लीफ़ हुई, अब तक्लीफ़ के ख़ात्मे के लिए सारे इलाज कर लिए, मगर कोई फ़ायदा न हुआ, आख़िर में एक पुराना कोई तबीब था। उसके पास जाकर बताया कि यह तक्लीफ़ है, इसका इलाज क्या है। उस तबीब ने बताया कि इसका कोई और इलाज नहीं है, अलबत्ता एक इलाज है जो कभी-कभी कारामद हो जाता है, वह यह कि इंसान के जिस्म में जो कीड़े पैदा होते हैं, इन कीड़ों को पीस कर अगर लगाया जाए तो उसके ज़रिए से कभी-कभी यह बीमारी दूर हो जाती है—उस वक़्त मैंने कहा कि अल्लाह! अब मेरी समझ में यह बात आ गई कि आपने इन कीड़ों को किस मस्लहत से पैदा किया है।

ग़रज़ कायनात की कोई चीज़ ऐसी नहीं है जिसकी कोई न कोई हिक्मत और मस्लहत न हो, अल्लाह के इल्म में हर चीज़ के फ़ायदे

और हिक्मतें और मस्लहतें हैं, बिल्कुल उसी तरह जो खाना आपको पसन्द नहीं है या उसके खाने को तबियत नहीं चाहती, लेकिन उसकी पैदाइश में कोई न कोई हिक्मत और मस्लहत ज़रूर है और कम से कम यह बात मौजूद है कि वह अल्लाह तआला का रिज़्क़ है और उसका एहतराम करना ज़रूरी है। इसलिए अगर कोई खाना पसन्द नहीं है, तो उसको मत खाओ, लेकिन उसको बुरा भी मत कहो। कुछ लोगों की यह आदत होती है कि जब खाना पसन्द नहीं आया तो उसमें ऐब निकालने शुरू कर देते हैं कि इसमें यह ख़राबी है, यह तो बद-ज़ायक़ा है, ऐसी बातें कहना दुरुस्त नहीं।

रोज़ी की नाक़द्री मत करो।

यह भी हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बड़े ऊंचे दर्जे की तालीम है कि अल्लाह के रिज़्क़ का एहतराम करो, उसका अदब करो, उसकी बे-अदबी न करो। आजकल हमारे समाज में यह इस्लामी अदब पूरी तरह पामाल हो रहा है। हर चीज़ में हमने ग़ैरों की नक़्क़ाली शुरू की तो इसमें भी ऐसा ही किया और अल्लाह की रोज़ी का कोई अदब बाक़ी नहीं रहा, खाना बचा तो उठाकर उसको कूड़े में डाल दिया, कभी-कभी देखकर दिल लरज़ता है, यह सब मुसलमानों के घरों में हो रहा है, ख़ास तौर पर दावतों में और होटलों में, ग़िज़ाओं के बड़े-बड़े ढेर इस तरह कूड़े में डाल दिए जाते हैं, हालांकि हमारे दीन की तालीम यह है कि अगर रोटी का छोटा-टुकड़ा भी कहीं पड़ा हो, तो उसकी भी ताज़ीम करो, उसका भी अदब करो और उसको उठाकर किसी ऊंची जगह रख दो।

हज़रत थानवी और रिज़्क़ की क़द्र

मैंने अपने हज़रत डाक्टर अब्दुल हई साहब क़द्द-सल्लाहु सिर्रहू से हज़रत थानवी रहमतुल्लाहि अलैहि का यह वाक़िया सुना है कि एक बार हज़रत थानवी रहमतुल्लाहि अलैहि बीमार हुए। उस दौरान एक साहब ने आपको पीने के लिए दूध लाकर दिया, आपने वह दूध पिया और थोड़ा सा बच गया। वह बचा हुआ दूध आपने सिरहाने की तरफ़ रख दिया, इतने में आपकी आंख लग गई। जब जागे तो एक साहब जो पास खड़े थे, उनसे पूछा कि भाई, वह थोड़ा सा दूध बच गया था, वह कहां गया? तो उन साहब ने कहा कि हज़रत वह तो फेंक दिया, एक घूंट ही था। हज़रत थानवी रहमतुल्लाहि अलैहि बहुत नाराज़ हुए और फ़रमाया कि तुमने अल्लाह की उस नेमत को फेंक दिया, तुमने बहुत ग़लत काम किया। अगर मैं उस दूध को पी नहीं सका, तो तुम ख़ुद पी लेते, किसी और को पिला देते या बिल्ली को पिला देते या तोते को पिला देते। अल्लाह की मख़्लूक़ के काम आ जाता, तुमने उसको क्यों फेंका और फिर एक उसूल बयान फ़रमा दिया कि—

'जिन चीज़ों से ज़्यादा मिक़्दार से इंसान अपनी आम ज़िंदगी में फ़ायदा उठाता है, उनकी थोड़ी मिक़्दार की क़द्र और ताज़ीम उसके ज़िम्मे वाजिब है।'

जैसे खाने की बड़ी मिक़्दार को इंसान खाता है, उससे अपनी भूख मिटाता है, अपनी ज़रूरत पूरी करता है, लेकिन अगर उसी खाने का थोड़ा हिस्सा बच जाए तो उसका एहतराम और तौक़ीर भी उसके ज़िम्मे वाजिब है, इसको ज़ाया करना जायज़ नहीं। यह असल भी

हक़ीक़त में उसी हदीस से ली गई है कि अल्लाह के रिज़्क़ की नाक़द्री मत करो, उसको किसी न किसी मसरफ़ में ले आओ।

दस्तरख़्वान झाड़ने का सही तरीक़ा

मेरे वालिद माजिद रहमतुल्लाहि अलैहि के दारुल उलूम देवबन्द में एक उस्ताद थे। हज़रत मौलाना सैयद असग़र हुसैन रहमतुल्लाहि अलैहि जो 'हज़रत मियां साहब' के नाम से मशहूर थे, बड़े अजीब व ग़रीब बुज़ुर्ग थे, उनकी बातें सुनकर सहाबा किराम के ज़माने की याद ताज़ा हो जाती है। हज़रत वालिद साहब रहमतुल्लाहि फ़रमाते हैं कि एक बार मैं उनकी ख़िदमत में गया, तो उन्होंने फ़रमाया कि खाने का वक़्त है, आओ खाना खा लो। मैं उनके साथ खाना खाने बैठ गया। जब खाने से फ़ारिग़ हुए, तो मैंने दस्तरख़्वान को लपेटना शुरू किया, ताकि मैं जाकर दस्तरख़्वान झाड़ दूं, तो हज़रत मियां साहब ने मेरा हाथ पकड़ लिया और फ़रमाया, क्या कर रहे हो? मैंने कहा कि हज़रत! दस्तरख़्वान झाड़ने जा रहा हूं। हज़रत मियां साहब ने पूछा कि दस्तरख़्वान झाड़ना आता है? मैंने कहा कि हज़रत! दस्तरख़्वान झाड़ना कौन सा फ़न या इल्म है? जिसके लिए बाक़ायदा तालीम की ज़रूरत हो, बाहर जाकर झाड़ दूंगा। हज़रत मियां साहब ने फ़रमाया कि इसीलिए तो मैंने तुमसे पूछा था कि दस्तरख़्वान झाड़ना आता है या नहीं? मालूम हुआ कि दस्तरख़्वान झाड़ना नहीं आता। मैंने कहा, फिर आप सिखा दें। फ़रमाया कि हां, दस्तरख़्वान झाड़ना भी एक फ़न है।

फिर आपने उस दस्तरख़्वान को दोबारा खोला और उस दस्तरख़्वान पर जो बोटियां या बोटियों के ज़र्रे थे, उनको एक तरफ़ किया और

हड्डियों को, जिन पर कुछ गोश्त वग़ैरह लगा हुआ था, उनको एक तरफ़ किया और रोटी के टुकड़ों को एक तरफ़ किया और रोटी के जो छोटे-छोटे ज़र्रे थे, उनको एक तरफ़ जमा किया फिर मुझसे फ़रमाया कि देखो, ये चार चीज़ें हैं और मेरे यहां इन चारों चीज़ों की अलग-अलग जगह मुक़र्रर है, ये जो बोटियां हैं, उनकी फ़्लां जगह है। बिल्ली को मालूम है कि खाने के बाद उस जगह बोटियां रखी जाती हैं, वह आकर उनको खा लेती है और इन हड्डियों के लिए फ़्लां जगह मुक़र्रर है, मुहल्ले के कुत्तों को वह जगह मालूम है। वे आकर उनको खा लेते हैं और ये जो रोटियों के टुकड़े हैं, उनको मै इस दीवार पर रखता हूं, यहां परिंदे, चील-कौवे आते हैं और वे उनको उठाकर खा लेते हैं और ये जो रोटी के छोटे-छोटे ज़र्रे हैं, तो मेरे घर में चींटियों का बिल है, उनको इस बिल के पास रख देता हूं, वे चींटियां उसको खा लेती हैं—फिर फ़रमाया कि यह सब अल्लाह का रिज़्क़ है, इसका कोई हिस्सा ज़ाया नहीं होना चाहिए। हज़रत वालिद साहब रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते थे कि उस दिन हमें मालूम हुआ कि दस्तरख़्वान झाड़ना भी एक फ़न है और उसको भी सीखने की ज़रूरत है।

आज हमारा हाल

आज हमारा यह हाल है कि दस्तरख़्वान को जाकर कूड़ेदान के अन्दर झाड़ दिया, अल्लाह की रिज़्क़ के एहतराम का कोई एहतिमाम नहीं, अरे, ये सारे अल्लाह की मख़्लूक़ हैं। जिनके लिए अल्लाह ने यह रिज़्क़ पैदा किया, अगर तुम नहीं खा सकते तो किसी और मख़्लूक़ के लिए उसको रख दो। पहले ज़माने में बच्चों को यह सिखाया जाता था कि यह अल्लाह का रिज़्क़ है, इसका एहतराम

करो। अगर कहीं रोटी का टुकड़ा नज़र आता तो उसको चूम कर अदब के साथ ऊंची जगह पर रख देते, लेकिन ज्यों-ज्यों मग़्रिबी तह्ज़ीब का ग़लबा हमारे समाज पर बढ़ रहा है, धीरे-धीरे इस्लामी आदाब रुख़्सत हो रहे हैं? नबी क़रीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह इर्शाद है कि खाना पसन्द आए तो खा लो और अगर पसन्द न आए तो कम से कम उसमें ऐब न निकालो, उसकी नाक़द्री और बेहुर्मती न करो, इस सुन्नत को दोबारा ज़िंदा करने की ज़रूरत है—ये सब बातें कोई क़िस्सा, कहानी या कोई अफ़साना नहीं है, बल्कि ये सब बातें अमल करने के लिए हम अल्लाह के रिज़्क़ का अदब और उसकी ताज़ीम करें और उन आदाब को अपनाएं जो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम ने हमें सिखाए और जो हमारे दीन का हिस्सा हैं, जो हमारे दीन का तुर्रा-ए-इम्तियाज़ हैं और यह जो मग़्रिब ने हम पर बलाएं नाज़िल की हैं, उनसे छुटकारा हासिल करें। अल्लाह तआला हम सबको अमल की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन।

सिरका भी एक सालन है

”عن جابر رضی اللہ عنہ ان النبی ﷺ سئل اھلہ الادم، فقالوا: ماعندنا الاخل، فدعا بہ، فجعل یاکل، ویقول: نعم الادم الخل، نعم الادم الخل“

(صحیح مسلم، کتاب الاشربۃ، باب فضیلۃ الخل، والتأدم بہ: ۲۰۵۲)

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक बार हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम घर में तश्रीफ़ ले गए और घर वालों से फ़रमाया कि कुछ सालन हो तो ले आओ। (रोटी मौजूद थी) घर वालों ने कहा, हमारे पास तो सिरके के अलावा और कुछ नहीं

है, सिरका रखा हुआ है। आपने फ़रमाया कि वही ले आओ। हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस सिरके की रोटी के साथ खाना शुरू किया और साथ में बार-बार यह फ़रमाते जाते कि सिरका बड़ा अच्छा सालन है, सिरका बड़ा अच्छा सालन है।

—सहीह मुस्लिम, किताबुल अशरबा, हदीस न० 2052

आपके घर की हालत

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के घर का यह हाल था कि कोई सालन मौजूद नहीं, हालांकि रिवायतों में आता है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम साल के शुरू में तमाम पाक बीवियों के पास पूरे साल का गुज़ारा-भत्ता और ख़र्चा भेज दिया करते थे, लेकिन वे बीवियां भी हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बीवियां थीं। उनके यहां सदक़े, ख़ैरात और दूसरे ख़र्चों की इतनी बहुतात थी कि हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि 'कभी-कभी तीन-तीन महीने तक हमारे घर में आग नहीं जलती थी। दो चीज़ों पर हमारा गुज़ारा होता था कि खजूर खा ली और पानी पी लिया।'

—सहीह बुख़ारी, किताबुल हिबा, बाब न० एक हदीस न० 2567

नेमत की क़द्र फ़रमाते

इस हदीस से मालूम हुआ कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जो नेमत मयस्सर आ जाती, उसकी क़द्र फ़रमाते और उस पर अल्लाह तआला का शुक्र अदा फ़रमाते, हालांकि आम मआशरे (समाज) में सिरका को सालन के तौर पर इस्तेमाल नहीं

किया जाता, बल्कि ज़ुबान का मज़ा बदलने के लिए लोग सिरके को सालन के साथ मिलाकर खाते हैं, लेकिन हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसी सिरके से रोटी खाई और साथ-साथ उसकी इतनी तारीफ़ फ़रमाई कि बार-बार आपने फ़रमाया, यह बड़ा अच्छा सालन है, यह बड़ा अच्छा सालन है।

खाने की तारीफ़ करनी चाहिए

इसी हदीस के तहत हज़रात मुहद्दिसीन ने फ़रमाया कि अगर कोई आदमी इस नीयत से सिरका इस्तेमाल करे कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसको खाया था और उसकी तारीफ़ फ़रमाई थी, तो इनशाअल्लाह इस नीयत पर भी उसको सिरका खाने का सवाब मिलेगा। इस हदीस से दूसरा मस्अला यह निकलता है कि जो खाना आदमी को पसन्द आए, उसको चाहिए कि वह उस खाने की तारीफ़ भी करे। तारीफ़ करने का एक मक़्सद तो उस खाने पर अल्लाह तआला का शुक्र अदा करना है कि अल्लाह तआला ने मुझे यह खाना इनायत फ़रमाया, दूसरे यह कि जिसने वह खाना तैयार किया है, इस तारीफ़ के ज़रिए उसका दिल ख़ुश हो जाए। यह भी खाने के आदाब में से है, यह न हो कि खाने के ज़रिए पेट की भूख मिटाई और ज़ुबान का चटख़ारा भी पूरा किया और खाना खाकर उठ गए, लेकिन ज़ुबान पर एक कलिमा भी शुक्र और तारीफ़ का न आया। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखिए कि आपने सिरके की इतनी तारीफ़ फ़रमाई, इसलिए जब खाना पकाने वाले ने मेहनत की और अपने आपको आग और चूल्हे के आगे पेश करके तुम्हारे लिए खाना तैयार किया, उसका इतना तो हक़ अदा

करो कि दो कलिमे बोलकर उसकी तारीफ़ कर दो और उसकी हिम्मत बढ़ा दो, जो आदमी तारीफ़ के दो कलिमे भी अदा न करे, वह बड़ा बख़ील हैं

पकाने वाले की तारीफ़ करनी चाहिए

हमारे हज़रत डाक्टर साहब क़द्दसल्लाहु सिर्रहू ने एक बार अपना यह वाक़िया सुनाया कि एक साहब मेरे पास आया करते थे। वह और उनकी बीवी दोनों ने इस्लाही ताल्लुक़ भी क़ायम यकिया हुआ था। एक दिन उन्होंने अपने घर पर मेरी दावत की, मैं चला गया और जाकर खाना खा लिया। खाना बड़ा लज़ीज़ और बहुत अच्छा बना हुआ था। हज़रत वाला क़द्द-स सिर्रहू की हमेशा की यह आदत थी कि जब खाने से फ़ारिग़ होते तो उस खाने की और खाना बनाने वाली ख़ातून की तारीफ़ ज़रूर फ़रमाते, ताकि उस पर अल्लाह का शुक्र भी अदा हो जाए और उसमें ख़ातून का दिल बढ़ जाए—चुनांचे जब खाने से फ़ारिग़ हुए तो वह ख़ातून परदे के पीछे आईं और आकर हज़रते वाला को सलाम किया, तो हज़रते वाला ने फ़रमाया कि तुमने बड़ा लज़ीज़ और बहुत अच्छा खाना पकाया। खाने में बड़ा मज़ा आया। हज़रत फ़रमाते हैं कि जब मैंने यह कहा तो परदे के पीछे से उस ख़ातून के रोने और सिसकियां लेने की आवाज़ आई—मैं हैरान रह गया कि मालूम नहीं मेरी किस बात से उनको तक्लीफ़ हुई और उनका दिल टूटा। मैंने पूछा कि क्या बात है? आप क्यों रो रही हैं? उन ख़ातून ने मुश्किल से अपने रोने पर क़ाबू पाते हुए कहा कि हज़रत! मुझे उन (शौहर) के साथ रहते हुए चालीस साल हो गए हैं, लेकिन इस पूरे अर्से में उनकी ज़ुबान से मैंने यह जुम्ला नहीं सुना कि,

'आज खाना बड़ा अच्छा पका है।' आज जब आपकी ज़ुबान से यह जुम्ला सुना तो मुझे रोना आ गया, चूंकि वह साहब हज़रत वाला की तर्बियत में थे, इसलिए हज़रत वाला ने उनसे फ़रमाया कि ख़ुदा के बन्दे! ऐसा भी क्या बुख़्ल करना कि आदमी किसी की तारीफ़ में दो लफ़्ज़ न कहे, जिससे उसके दिल को ख़ुशी हो जाए—इसलिए खाने के बाद उस खाने की तारीफ़ और उसके पकाने वाले की तारीफ़ करनी चाहिए, ताकि उस खाने पर अल्लाह का शुक्र भी अदा हो जाए और खाना बनाने वाले का दिल भी ख़ुश हो जाए।

हदिए की तारीफ़

आम तौर पर लोगों की यह आदत होती है कि जब उनको हदिया पेश किया जाए, तो वे तकल्लुफ़ की वजह से कहते हैं कि भाई! इस हदिए की क्या ज़रूरत थी? आपने बेकार में तकल्लुफ़ किया, लेकिन हमने अपने डाक्टर साहब क़द्द-सल्लाहु सिर्रहू को देखा कि जब हज़रत के बेतकल्लुफ़ दोस्तों में से कोई मुहब्बत के साथ उनकी ख़िदमत में हदिया पेश करता, तो हज़रत वाला तकल्लुफ़ नहीं फ़रमाते थे, बल्कि उस हदिए की तरफ़ बहुत इश्तियाक़ ज़ाहिर करते और यह कहते, भाई! तुम तो ऐसी चीज़ ले आए जिसकी हमें ज़रूरत थी।

एक बार मैं हज़रते वाला की ख़िदमत में एक कपड़ा ले गया और मैंने यह बात सोची भी न थी कि हज़रत इस पर इतनी ख़ुशी ज़ाहिर फ़रमाएंगे। चुनांचे जब मैंने वह पेश किया तो हज़रत वाला ने फ़रमाया कि हमें ऐसे कपड़े की ज़रूरत थी, हम तो इसकी तलाश में थे और फ़रमाया कि जिस रंग का कपड़ा लाए हो, वह रंग तो हमें बहुत पसन्द है और यह कपड़ा भी बहुत अच्छा है—बार-बार उसकी

तारीफ़ फ़रमाते और फ़रमाते थे कि जब एक आदमी मुहब्बत से हदिया लेकर आया है, तो कम से कम इतनी तारीफ़ तो उसकी करो कि उसकी मुहब्बत की क़द्रदानी हो जाए और उसका दिल ख़ुश हो जाए कि जो चीज़ मैंने हदिया में पेश की, वह पसन्द आ गई। और यह जो हदीस शरीफ़ में है कि 'तहाद्दू-तहाब्बू' (आपस में हदिया दिया करो और उसके ज़रिए मुहब्बत में इज़ाफ़ा करो) तो मुहब्बत में इज़ाफ़ा का ज़रिया उस वक़्त होगा जब तुम हदिया वसूल करके उस पर पसन्दीदगी और मुहब्बत ज़ाहिर करो।

बन्दों का शुक्रिया अदा करो

एक हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया—

من لم يشكر الناس لم يشكر الله (ترمذی، کتاب البر والصلة، باب ماجاء فی الشکر لمن احسن الیك: ١٩٠٤)

'मल-लम यश्कुरुन्ना-स लम यश्कुरिल्लाह०' (यानी जो आदमी इंसानों का शुक्र अदा नहीं करता, वह अल्लाह का भी शुक्र अदा नहीं करता।) इससे मालूम हुआ कि जो शख़्स भी तुम्हारे साथ मुहब्बत और इख़्लास का मामला करे और उसके ज़रिए से तुम्हें कोई फ़ायदा पहुंचे, तो कम से कम ज़ुबान से उसका शुक्रिया अदा कर दो और उसकी तारीफ़ में दो कलिमे तो कह दो, यह सुन्नत है, इसलिए कि ये सब हुज़ूरे अक़्दस की तालीमात हैं। अगर हम इस तरीक़े को अपना लें, तो देखो, कितनी मुहब्बतें पैदा होती हैं और ताल्लुक़ात में कितनी ख़ुशगवारियां पैदा होती हैं—और ये अदावतें और नफ़रतें, यह बुग़ज़ और ये सब दुश्मनियां ख़त्म हो जाएंगी, बशर्ते कि हुज़ूर

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तालीमत पर ठीक-ठीक अमल कर ले। अल्लाह तआला हम सबको अमल की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन।

हुज़ूर सल्ल० का सौतेले बेटे को अदब सिखाना

"عن عمرو بن ابی سلمة رضی اللّٰہ عنهما قال: كنت غلاماً فی حجر رسول اللّٰہ ﷺ، وكانت يدى تطيش فی الصحفة، قال لی رسول اللّٰہ ﷺ: يا غلام، سم اللّٰہ، وكل بيمينك، وكل مما يليك" (صحيح بخارى، كتاب الاطعمة باب التسمية على الطعام: ٥٣٧٦)

यह हदीस (सहीह बुख़ारी, हदीस न० 5376) पीछे गुज़र चुकी है।

हज़रत अम्र बिन अबी सलमा रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है। यह हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सौतले बेटे थे। हज़रते उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा पहले हज़रत अबू सलमा रज़ियल्लाहु अन्हु की बीवी थीं। उनके इंतिक़ाल के बाद आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा से निकाह किया था और यह हज़रत अम्र बिन अबी सलमा रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत अबू सलमा रज़ि० के बेटे थे, निकाह के बाद यह भी हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा के साथ आ गए थे, इस तरह यह हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सौतेले बेटे बन गए और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तर्बियत में रहे। वह फ़रमाते हैं कि जब मैं बच्चा था और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तर्बियत में था, एक बार जब मैं

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ खाने के लिए बैठा, तो खाने के दौरान मेरा हाथ खाने के बरतन में चारों तरफ़ हरकत करता था। एक नवाला इस तरफ़ से खा लिया, दूसरा नवाला उस तरफ़ से खा लिया, तीसरा नवाला किसी और तरफ़ से खा लिया और जब हुज़ूरे सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मेरी यह हरकत देखी, तो आपने फ़रमाया, ऐ लड़के! खाना शुरू करने से पहले अल्लाह का नाम लो, बिस्मिल्लाह पढ़ो और दाहिने हाथ से खाओ और अपने सामने से खाओ यानी बरतन का जो हिस्सा तुम्हारे सामने है, उससे खाओ।

अपने सामने से खाना अदब है

इस हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तीन आदाब बयान फ़रमाए—

पहला अदब यह है कि बिस्मिल्लाह पढ़कर खाना खाओ। इसके बारे में पीछे तफ़्सील से बयान हो गया।

दूसरा अदब यह है कि दाहिने हाथ से खाओ। इसका बयान भी पीछे आ गया है।

तीसरा अदब यह बयान फ़रमाया कि अपने सामने से खाओ, इधर-उधर हाथ न ले जाओ। इस अदब पर आंहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बड़ी ताकीद फ़रमाई है। इसकी एक वजह तो बिल्कुल ज़ाहिर है, वह यह है कि अगर इंसान खाना अपने सामने से खाएगा, तो इस शक्ल में अगर खाने का कुछ हिस्सा बच जाएगा, तो वह बदनुमा और बुरा नहीं मालूम होगा, वरना अगर चारों तरफ़ से खाएगा, तो इस शक्ल में जो खाना बच जाएगा, वह बदनुमा हो

जाएगा और दूसरा आदमी उसको खाना चाहेगा, तो उसको कराहियत होगी, जिसके नतीजे में उस खाने को ज़ाया करना पड़ेगा, इसलिए फ़रमाया कि अपने सामने से खाओ।

खाने के बीच में बरकत नाज़िल होती है

एक हदीस में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जब खाना सामने रखा जाता है, तो अल्लाह की तरफ़ से उस खाने के वस्त और दर्मियान में बरकत नाज़िल होती है। अब अगर उस खाने के दर्मियान ही से खा लिया, तो इसका मतलब यह है कि उस खाने की बरकत ख़त्म हो गई। इसलिए अगर एक तरफ़ से खाना खाया जाएगा, तो अल्लाह तआला की बरकत ज़्यादा देर तक बरक़रार रहेगी। अब सवाल यह होता है कि यह बरकत क्या चीज़ है? दर्मियान में किस तरह नाज़िल होती है? ये सारी बातें ऐसी हैं, जिनको हम अपनी महदूद अक़्ल से नहीं समझ सकते, ये अल्लाह तआला की हिक्मतें हैं, वह जानें और उनके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जानें, हमें इस बहस में पड़ने की ज़रूरत नहीं। बस, हमें तो यह अदब सिखा दिया कि अपने सामने से खाओ, इधर-उधर से मत खाओ। —तिर्मिज़ी, किताबुल अतइ़म, हदीस न० 1806

अगर अलग-अलग चीज़ें हों तो आगे हाथ बढ़ा सकते हैं

लेकिन यह अदब उस वक़्त है, जब खाना एक क़िस्म का हो। अगर बरतन के अन्दर अलग-अलग क़िस्म की चीज़ें रखी हों, तो इस शक्ल में अपनी पसन्द और अपने मतलब की चीज़ें लेने के लिए, हाथ इधर-उधर, दाएं-बाएं जाए तो इसमें कोई हरज नहीं। चुनांचे हज़रत इक्राश बिन ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हु एक सहाबी हैं। वह फ़रमाते हैं

कि एक बार मैं हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम किसी जगह दावत में तशरीफ़ ले जाने लगे, तो आपने मुझे भी साथ ले लिया। जब हम वहां पहुंचे तो हमारे सामने दस्तरख़्वान पर 'सरीद' लाया गया। 'सरीद' इसे कहते हैं कि रोटी के टुकड़े तोड़ कर शोरबे में भिगो दिए जाते हैं, फिर उसको खाया जाता है। यह खाना हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बहुत पसन्द था और आपने उसकी फ़ज़ीलत भी बयान फ़रमाई है कि 'सरीद' बड़ा अच्छा खाना है।

बहरहाल हज़रत इकराश रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब मैंने सरीद खाना शुरू किया तो एक काम तो यह हुआ कि मैंने बिस्मिल्लाह नहीं पढ़ी, वैसे ही खाना शुरू कर दिया तो हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझसे फ़रमाया कि खाने से पहले अल्लाह का नाम लो और बिस्मिल्लाह पढ़ो। इसके बाद दूसरा काम यह कि मैं खाने के दौरान एक निवाला यहां से लेता, दूसरा आगे से लेता, कभी इधर से, कभी उधर से नवाला लेता। जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मेरी यह हरकत देखी तो आपने फ़रमाया—

"یاعکراش، کل من موضع واحد، فانه طعام واحد"

'ऐ इकराश! अपने सामने से खाना खाओ, इसलिए कि एक ही क़िस्म का खाना है।' चुनांचे मैंने एक ही जगह से खाना शुरू कर दिया। जब खाने से फ़ारिग़ हो गए तो हमारे सामने एक बड़ा थाल लाया गया, जिसमें मुख़्तलिफ़ क़िस्म की खजूरें थीं, कोई किसी रंग की, कोई किसी रंग की, कोई उम्दा, कोई दर्मियानी, कोई तर, कोई

ख़ुश्क—मसल मशहूर है कि दूध का जला छाज भी फूंक-फूंक कर पीता है—चूंकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मेरा हाथ पकड़ कर मुझे तलक़ीन फ़रमाई थी कि अपने सामने से खाना चाहिए, इसलिए मैं सिर्फ़ अपने सामने ही खजूरें खाता रहा और मैंने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा कि आपका हाथ कभी यहां जा रहा है कभी वहां जा रहा है। जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे देखा कि मैं एक ही जगह से खा रहा हूं तो आपने फ़रमाया—

"ياعكراش، كل من حيث شئت، فانه غير لون واحد"

'ऐ इक्राश! अब जहां से चाहो, खाओ, इसलिए कि ये खजूरें अलग-अलग क़िस्म की हैं।' अब अलग-अलग जगहों से खाने में कोई हरज नहीं—बहरहाल इस हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह अदब सिखा दिया कि जब एक क़िस्म का खाना हो तो अपने सामने से खाना चाहिए और जब अलग-अलग क़िस्म के खाने दस्तरख़्वान पर चुने हुए हों तो इधर-उधर हाथ बढ़ाने में कोई हरज नहीं।—तिर्मिज़ी, किताबुल अतअमा, हदीस न० 1849

बाएं हाथ से खाना जायज़ नहीं

وعن سلمة بن الاكوع رضى الله عنه، ان رجلا اكل عند رسول الله ﷺ بشماله، فقال، كل بيمينك، قال: لا استطيع، قال: لااستطعت، مامنعه الا الكبر، فما رفعها الى فيه" (صحيح مسلم، كتاب الاشربة، باب آداب الطعام والشراب: ٢٠٢١)

—सहीह मुस्लिम, किताबुल अशरबा, हदीस न० 20-21

हज़रत सलमा बिन अक्वअ़ रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक आदमी हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास बैठकर

बाएं हाथ से खाना खा रहा था। आपने उससे फ़रमाया कि दाएं हाथ से खाना खाओ। उस आदमी ने जवाब में कहा कि दाएं हाथ से नहीं खा सकता। (ज़ाहिर में ऐसा मालूम होता है कि वह आदमी मुनाफ़िक़ था और उसके दाहिने हाथ में कोई ख़राबी और उज़्र भी नहीं था, वैसे ही उसने झूठ बोल दिया कि मैं नहीं खा सकता।) इसलिए कि कुछ लोगों की तबियत ऐसी होती है कि वे ग़लती को मानने के लिए तैयार नहीं होते, बल्कि अपनी बात पर अड़े रहते हैं।—इसी तरह यह आदमी भी बाएं हाथ से खा रहा था। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने टोका, शायद उसको हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का टोकना पसन्द नहीं आया, इसलिए उसने साफ़ कह दिया कि मैं दाएं हाथ से नहीं खा सकता और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने झूठ बोल दिया—और नबी के सामने झूठ बोलना या ग़लत बात कहना और बे-वजह अपनी ग़लती को छिपाना अल्लाह तआला को सख़्त नापसन्द है, चुनांचे हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसको बद-दुआ देते हुए फ़रमाया—'ला इस्ततअ़-त' यानी तुम्हें दाएं से खाने की कभी ताक़त न हो। चुनांचे रिवायत में आता है कि उसके बाद उस आदमी की यह हालत हो गई कि अगर कभी अपने दाएं हाथ को मुंह तक ले जाना भी चाहता तब भी नहीं उठा सकता था, अल्लाह तआला महफ़ूज़ रखे। आमीन।

ग़लती का एतराफ़ करके माफ़ी मांग लेनी चाहिए

उसूल यह है कि अगर बशरी तक़ाज़े की वजह से कोई ग़लती हो जाए, फिर वह इंसान नदामत और शर्मिंदगी ज़ाहिर करे तो

अल्लाह माफ़ फ़रमा देते हैं, लेकिन ग़लती हो और उस ग़लती पर इस्रार हो और सीनाज़ोरी हो और उसको सही साबित करने की कोशिशें भी करे और नबी के सामने झूठ भी बोले, यह बड़ा संगीन गुनाह है।

हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का किसी के हक़ में बद-दुआ करना शाज़ व नादिर ही साबित है, यहां तक कि आपने अपने दुश्मनों के हक़ में बद-दुआ नहीं फ़रमाई। जो लोग आपके मुक़ाबले में लड़ रहे हैं, आप पर तलवार उठा रहे हैं और आप पर तीरों की बारिश कर रहे हैं, उनके लिए भी आपनें बद-दुआ नहीं फ़रमाई, बल्कि यह दुआ दी कि—

اللهم اهد قومی فانهم لایعلمون

(ऐ अल्लाह! मेरी क़ौम को हिदायत दे दीजिए। ये मुझे जानते नहीं।)—लेकिन यह मौक़ा ऐसा था कि आपको वह्य के ज़रिए मालमू हो गया था कि यह आदमी तकब्बुर (घमंड) की वजह से इनाद (दुश्मनी) के तौर पर मुनाफ़क़त की बुनियाद पर दाएं हाथ से खाने से इंकार कर रहा है। हक़ीक़त में उसको कोई उज़्र नहीं है। इसके लिए आपने उसके हक़ में बद-दुआ का कलिमा इर्शाद फ़रमाया और वह बद-दुआ फ़ौरन क़ुबूल हो गई।

अपनी ग़लती पर अड़ना दुरुस्त नहीं

हमारे हज़रत डाक्टर अब्दुल हई साहब क़द्दसल्लाहु सिर्रहू फ़रमाया करते थे कि अगर आदमी ग़लतकारी और गुनाहों में मुब्तला हो, फिर भी बुज़ुर्गों और अल्लाह वालों के पास इसी हाल में चला जाए, इसमें कोई हरज नहीं, लेकिन वहां जाकर अगर झूठ बोलेगा या अपनी

ग़लती पर अड़ा रहेगा, तो यह बड़ी ख़तरनाक बात है। —नबियों की शान तो बहुत बड़ी है। कभी-कभी ऐसा होता है कि नबियों के वारिसों पर भी अल्लाह तआला कभी-कभी यह फ़ज़्ल फ़रमा देते हैं कि उनको तुम्हारी हक़ीक़ते हाल से बा-ख़बर फ़रमा देते हैं—चुनांचे हज़रत डाक्टर साहब ही ने हज़रत थानवी क़द्द-सल्लाहु सिर्रहू का यह वाक़िया सुनाया कि एक बार हज़रते वाला की मज्लिस हो रही थी, हज़रते वाला वाज़ फ़रमा रहे थे। एक साहब उसी मज्लिस में दीवार या तकिया का टेग लगा कर तकब्बुर वाले अन्दाज़ में बैठ गए। इस तरह टेक लगा कर, पांव फैला कर बैठना मज्लिस के अदब के ख़िलाफ़ है—और जो आदमी भी मज्लिस में आता था, वह अपनी इस्लाह ही की ग़रज़ से आता था, इसलिए कोई ग़लत काम करता तो हज़रते वाला का फ़र्ज़ था कि उसको टोकें। चुनांचे हज़रत थानवी रहमतुल्लाहि अलैहि ने उस आदमी को टोक दिया और फ़रमाया कि इस तरह बैठना मज्लिस के अदब के ख़िलाफ़ है। आप ठीक से अदब के साथ बैठ जाएं। उन साहब ने बजाए सीधे बैठने के उज़्र बयान करते हुए कहा, हज़रत! मेरी कमर में तक्लीफ़ है। इसकी वजह से मैं इस तरह बैठा हूं। ज़ाहिर में वह यह कहना चाहता था कि आपका यह टोकना ग़लत है, इसलिए कि आपको क्या मालूम कि मैं किस हालत में हूं, किस तक्लीफ़ में मुब्तला हूं। आपको मुझे टोकना नहीं चाहिए था।

हज़रत डाक्टर साहब ख़ुद बयान फ़रमाते हैं कि मैंने हज़रत थानवी रहमतुल्लाहि अलैहि को देखा कि आपने एक लम्हे के लिए गरदन झुकायी और आंख बन्द की और फिर गरदन उठा कर उससे फ़रमाया कि आप झूठ बोल रहे हैं, आपकी कमर में कोई तक्लीफ़

नहीं है। आप मज्लिस से उठ जाइए—यह कहकर डांट कर उठा दिया।— अब ज़ाहिर में ऐसा मालूम होता है कि हज़रत वाला को क्या पता कि उसकी कमर में तक्लीफ़ है या नहीं, लेकिन कभी-कभी अल्लाह तआला अपने किसी नेक बन्दे को किसी वाक़िए की ख़बर अता फ़रमा देते हैं—इसलिए बुज़ुर्गों से झूठ बोलना या उनको धोखा देना बड़ी ख़तरनाक बात है। अगर ग़लती हो जाए और कोताही हो जाए, इसके बाद आदमी उस पर नादिम हो जाए और अल्लाह उस पर तौबा की तौफ़ीक़ दे दे तो इनशाअल्लाह वह गुनाह और ग़लती माफ़ हो जाएगी।

बहरहाल हज़रत वाला ने उस आदमी को मज्लिस से उठा दिया, बाद में लोगों ने उससे पूछा, तो उसने साफ़-साफ़ बता दिया कि सच में हज़रत वला ने सही फ़रमाया था, मेरी कमर में कोई तक्लीफ़ नहीं थी। मैंने सिर्फ़ अपनी बात रखने के लिए यह बात बनाई थी—

बुज़ुर्गों की शान में गुस्ताख़ी से बचो

देखिए गुनाह, ग़लती, कोताही, दुनिया में किससे नहीं होती? इंसान से ग़लती और कोताही हो ही जाती है। अगर कोई आदमी बुज़ुर्गों की बात पर नहीं चल रहा है, तो भी अल्लाह तआला किसी वक़्त तौबा की तौफ़ीक़ दे देंगे। उसकी ख़ता को माफ़ कर देंगे। लेकिन बुज़ुर्गों की शान में गुस्ताख़ी करना, या उनके लिए बुरे कलिमे ज़ुबान से निकालना और अपने गुनाह को सही साबित करना, यह इतनी बड़ी लानत है कि कभी-कभी उसकी वजह से ईमान के लाले पड़ जाते है, (अल्लाह तआला बचाए) इसलिए अगर किसी अल्लाह वाले की कोई बात पसन्द न आए तो कोई बात नहीं, ठीक है, पसन्द

नहीं आई, लेकिन इसकी वजह से उनके हक़ में कोई ऐसा कलिमा न कहो जो बेइज़्ज़ती और गुस्ताख़ी की हो। कहीं ऐसा न हो कि वह कलिमा अल्लाह को नागवार हो जाए, तो इंसान का ईमान और उसकी ज़िंदगी ख़तरे में पड़ जाए। अल्लाह तआला हिफ़ाज़त फ़रमाए। आमीन।

आजकल लोगों में जो बीमारी पैदा हो गई है कि ग़लती को ग़लती मानने से इंकार कर देते हैं, गुनाह को गुनाह मानने से इंकार कर देते हैं—चोरी और फिर सीनाज़ोरी—गुनाह भी कर रहे हैं और फिर गुनाह को सही साबित करने की फ़िक्र में हैं, जैसे किसी बुज़ुर्ग के बारे में यह कह देना कि वह तो दुकानदार आदमी थे, ऐसे-वैसे थे। ऐसे कलिमे ज़ुबान से निकालना बड़ी ख़तरनाक बात है। इससे ख़ुद परहेज़ करें और दूसरों को भी बचाने की फ़िक्र करें।

दो खजूरें एक साथ मत खाओ

”عن جبلة بن سحيم رضی اللہ عنہ قال اصابنا عام سنة مع ابن الزبیر، فرزقنا تمرا، فکان عبداللہ بن عمر رضی اللہ عنہما یمر بنا ونحن ناکل، فیقول: لاتقارنوا، فان النبی ﷺ نہی عن القرآن، ثم یقول، الا ان یستاذن الرجل اخاہ“ (صحیح بخاری، کتاب الاطعمة باب القران فی التمر: ٥٤٤٦)

हज़रत जबला बिन सहीम रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु की हुकूमत के ज़माने में हमारे ऊपर क़हत पड़ा। क़हत की हालत में अल्लाह ने खाने के लिए कुछ खजूरें अता फ़रमा दीं। जब हम वे खजूरें खा रहे थे, उस वक़्त हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा हमारे पास से

गुज़रे। उन्होंने हमसे फ़रमाया कि दो-दो खजूरें एक साथ मत खाओ, इसलिए कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस तरह दो-दो खजूरें एक साथ मिलाकर खाने से मना फ़रमाया है। (दो-दो खजूरें एक साथ मिलाकर खाने को अरबी में 'क़िरान' कहते हैं) हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इसलिए मना फ़रमाया कि जो खजूरें खाने के लिए रखी हैं, उनमें सब खाने वालों का बराबर मुश्तरक हक़ है। अब अगर दूसरे लोग तो एक-एक खजूर उठाकर खा रहे हैं. . . और तुमने दो-दो खजूरें उठाकर खाना शुरू कर दीं, तो अब तुम दूसरों का हक़ मार रहे हो और दूसरों का हक़ मारना जायज़ नहीं, अलबत्ता दूसरे लोग भी दो-दो खजूरें खा रहे हैं, तब तुम भी दो-दो उठाकर खा लो, तो सही तरीक़ा यह है कि जिस तरह दूसरे लोग खा रहे हैं, तुम भी उसी तरीक़े से खाओ। इस हदीस से यह बताना मक़्सूद है कि दूसरों का हक़ मारना जायज़ नहीं। —सहीह बुख़ारी हदीस न० 5446

मुश्तरक चीज़ के इस्तेमाल का तरीक़ा

इस हदीस में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक उसूल बयान फ़रमा दिया कि जो चीज़ मुश्तरक हो और सब लोग उससे फ़ायदा उठाते हों, उस मुश्तरक चीज़ से कोई शख़्स दूसरे लोगों से ज़्यादा फ़ायदा उठाने की कोशिश करे, तो यह जायज़ नहीं। इसलिए कि इसकी वजह से दूसरों का हक़ मारा जाएगा। इस उसूल का ताल्लुक़ सिर्फ़ खजूर से नहीं, बल्कि हक़ीक़त में ज़िंदगी के उन तमाम शोबों से इसका ताल्लुक़ है, जहां चीज़ों में इश्तिराक पाया जाता है, जैसे आजकल की दावतों में 'सेल्फ़ सर्विस' का रिवाज है कि आदमी

ख़ुद उठकर जाए और अपना खाना लाए और खाना खाए। अब इसी खाने में तमाम खाने वालों का मुश्तरक हक़ है। अब अगर एक आदमी जाकर बहुत सारा खाना अपने बरतन में डालकर ले आया और दूसरे लोग उसको देखते रह गए, तो यह भी इस उसूल के तहत नाजायज़ है और इस 'क़िरान' में दाख़िल है, जिससे हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मना फ़रमाया।

प्लेट में खाना एहतियात से निकालो

इस उसूल के ज़रिए उम्मत को यह तालीम देनी है कि एक मुसलमान का काम यह है कि वह ईसार से काम ले, न यह कि वह दूसरों के हक़ पर डाका डाले, चाहे वह हक़ छोटा-सा क्यों न हो, इसलिए जब आदमी कोई अमल करे तो दूसरों का हक़ नज़र में सामने रखते हुए करे, यह न हो कि बस, मुझे मिल जाए, चाहे दूसरों को मिले या न मिले।

मेरे वालिद माजिद हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहब रहमतुल्लाहि अलैहि ने दस्तरख़्वान पर बैठकर यही मस्अला बयान करते हुए फ़रमाया कि जब खाना दस्तरख़्वान पर आए तो यह देखो कि दस्तरख़्वान पर कितने आदमी खाने वाले हैं और जो चीज़ दस्तरख़्वान पर आई है, वह सबके दर्मियान बराबर तक़्सीम की जाए तो तुम्हारे हिस्से में कितनी आएगी? बस इस हिसाब से तुम वह चीज़ खा लो। अगर उससे ज़्यादा खाओगे तो यह क़िरान में दाख़िल है जो नाजायज़ है।

रेल में ज़्यादा सीट पर क़ब्ज़ा करना जायज़ नहीं

इसी तरह एक बार वालिद माजिद क़द्द-सल्लाहु सिर्रहू ने यह मस्अला बयान फ़रमाया कि तुम रेलगाड़ी में सफ़र करते हो। तुमने रेलगाड़ी के डिब्बे में यह लिखा हुआ देखा होगा कि इस डिब्बे में 22 मुसाफ़िरों के बैठने की गुंजाइश है। अब आपने पहले जाकर तीन-चार सीटों पर क़ब्ज़ा कर लिया था और अपने लिए ख़ास कर लिया और उस पर बिस्तर लगा कर लेट गए। जिसका नतीजा यह हुआ कि जो लोग सवार हुए, उनको बैठने के लिए सीट नहीं मिली। अब वे खड़े हैं और आप लेटे हुए हैं—फ़रमाया कि यह भी 'क़िरान' में दाख़िल है जो नाजायज़ है—इसलिए कि तुम्हारा हक़ तो सिर्फ़ इतना था कि एक आदमी की सीट पर बैठ जाते, लेकिन जब आपने कई सीटों पर क़ब्ज़ा करके दूसरों के हक़ को पामाल किया तो—इस अमल के ज़रिए तुमने दो गुनाह किए। एक यह कि तुमने सिर्फ़ एक सीट का टिकट ख़रीदा था, फिर जब तुमने ज़्यादा सीटों पर क़ब्ज़ा कर लिया, तो इसका मतलब यह हुआ कि पैसे दिए बग़ैर तुमने अपने हक़ से ज़्यादा क़ब्ज़ा कर लिया। दूसरा गुनाह यह किया कि दूसरे मुसलमान भाइयों की सीट पर क़ब्ज़ा कर लिया, उनका हक़ पामाल किया। इस तरह इस अमल के ज़रिए दो गुनाह कर बैठे। पहले गुनाह के ज़रिए अल्लाह का हक़ पामाल हुआ और दूसरे गुनाह के ज़रिए बन्दे का हक़ पामाल हुआ।

साथ सफ़र करने वाले का हक़

और यह बन्दे का ऐसा हक़ है कि जिसको बन्दों से माफ़ कराना भी मुश्किल है, इसलिए कि बन्दों के हक़ उस वक़्त तक माफ़ नहीं

होते, जब तक हक़ वाला माफ़ न करे, सिर्फ़ तौबा करने से माफ़ नहीं होते। अब अगर किसी वक़्त अल्लाह ने तौबा की तौफ़ीक़ दी और दिल में ख़्याल आया कि मुझसे यह ग़लती हो गई थी तो अब इस वक़्त उस आदमी को कहां तलाश करोगे जिसने तुम्हारे साथ रेलगाड़ी में सफ़र किया था और तुमने उसका हक़ मार लिया था, इसलिए अब माफ़ी का कोई रास्ता नहीं, इसलिए इन मामलों में बहुत एहतिमाम करने की ज़रूरत है। क़ुरआन करीम ने कई जगहों पर इस बात का हुक्म दिया कि 'वस्साहिबु बिल जम्बि' (अन-निसा : 36) यानी 'साहिबु बिल जम्बि' का हक़ अदा करो।

'साहिबु बिल जम्बि' उसको कहते हैं जो किसी वक़्त आरज़ी तौर पर रेल के सफ़र में या बस में या जहाज़ में, तुम्हारे साथ आकर बैठ गया हो। वह 'साहिबु बिल जम्बि' है, उसके भी हक़ हैं। इन हक़ों को ज़ाया न करो और उसके साथ ईसार से काम लो। ज़रा-सी देर का सफ़र है, ख़त्म हो जाएगा, लेकिन अगर इस सफ़र के दौरान तुमने अपने ज़िम्मे लाज़िम कर लिया, तो वह गुनाह सारी उम्र तुम्हारे आमालनामे में लिखा रहेगा, उसकी माफ़ी होनी मुश्किल है। यह सब 'क़िरान' में दाख़िल है और नाजायज़ है।

मुश्तरक कारोबार में हिसाब-किताब

शरीअत के हिसाब से ज़रूरी है

आजकल यह वबा भी आम है कि कुछ भाइयों का मुश्तरक कारोबार है, लकिन हिसाब-किताब कोई नहीं। कहते हैं कि हम सब भाई हैं, हिसाब-किताब की क्या ज़रूरत है? हिसाब-किताब तो ग़ैरों में होता है, अपनों में हिसाब-किताब कहां? अब उसका कोई

हिसाब-किताब, कोई लिखत-पढ़त नहीं कि किस भाई की कितनी मिल्कियत और कितना हिस्सा है? माहाना किसको क्या मुनाफ़ा दिया जाएगा? इसका कोई हिसाब नहीं, बल्कि अलल टप मामला चल रहा है—जिसका नतीजा यह होता है कि कुछ दिनों तक तो मुहब्बत व प्यार से हिसाब चलता है, लेकिन बाद में दिलों में शिकवे-शिकायतें पैदा होनी शुरू हो जाती हैं कि फ़्लां की औलाद तो इतनी हैं, वह ज़्यादा रक़म लेता है, फ़्लां की औलाद कम है, वह कम लेता है। फ़्लां की शादी पर इतना ख़र्च किया गया, हमारे बेटे की शादी पर कम ख़र्च हुआ, फ़्लां ने कारोबार से इतना फ़ायदा उठा लिया, हमने नहीं उठाया, वग़ैरह बस इस तरह की शिकायतें शुरू हो जाती हैं।

यह सब कुछ इसलिए हुआ कि हम नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बताए हुए तरीक़े से दूर चले गए। याद रखिए, हर मुसलमान पर वाजिब है कि अगर कोई मुश्तरक चीज़ है तो उस मुश्तरक चीज़ का हिसाब व किताब रखा जाए। अगर हिसाब व किताब नहीं रखा जा रहा है तो ख़ुद भी गुनाह में मुब्तला हो रहे हो और दूसरों को भी गुनाह में मुब्तला कर रहे हो। याद रखिए, भाइयों के दर्मियान मामलों के अन्दर जो मुहब्बत व प्यार होता है, वह कुछ दिन चलता है। बाद में वह लड़ाई-झगड़ों में तब्दील हो जाता है और फिर वह लड़ाई-झगड़ा ख़त्म होने को नहीं आता है। कितनी मिसालें इस वक़्त मेरे सामने हैं।

मिल्कियतों में इम्तियाज़ शरीअत के हिसाब से ज़रूरी है

मिल्कियतों में इम्तियाज़ होना ज़रूरी है, यहां तक कि बाप-बेटे की मिल्कियत में और शौहर-बीवी की मिल्कियत में इम्तियाज़ होना

ज़रूरी है। हकीमुल उम्मत हज़रत थानवी रहमतुल्लाहि अलैहि की दो बीवियां थीं। दोनों के घर अलग-अलग थे। हज़रत वाला रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाया करते थे कि मेरी मिल्कियत और मेरी दोनों बीवियों की मिल्कियत बिल्कुल अलग-अलग करके बिल्कुल इम्तियाज़ कर रखा है, वह इस तरह कि जो कुछ बड़ी अह्लिया के घर में है, वह उनकी मिल्कियत है और जो सामान छोटी अह्लिया के घर में है, वह उनकी मिल्कियत है और जो सामान ख़ानक़ाह में है, वह मेरी मिल्कियत है। आज अगर दुनिया से चला जाऊं तो कुछ कहने-सुनने की ज़रूरत नहीं। अल-हम्दु लिल्लाह सब इम्तियाज़ मौजूद है।

हज़रत मुफ़्ती साहब रहमतुल्लाहि अलैहि और मिल्कियत की वज़ाहत

मैंने अपने वालिद माजिद क़द्द-सल्लाहु सिर्रहू को भी इसी तरह देखा कि हर चीज़ में मिल्कियत वाज़ेह कर देने का मामूल था। आख़िरी उम्र में हज़रत वालिद साहब ने अपने कमरे में एक चारपाई डाल ली थी। दिन-रात वहीं रहते थे। हम लोग हर वक़्त ख़िदमत में हाज़िर रहा करते थे। मैंने देखा कि जब मैं ज़रूरत की कोई चीज़ दूसरे कमरे से उनके कमरे में लाता तो ज़रूरत पूरी करने के बाद फ़ौरन फ़रमाते कि इस चीज़ को वापस ले जाओ। अगर कभी वापस ले जाने में देर हो जाती तो नाराज़ हो जाते कि मैंने तुमसे कहा था कि वापस पहुंचा दो, अभी तक वापस क्यों नहीं पहुंचाई?

कभी-कभी दिल में ख़्याल आता कि ऐसी जल्दी वापस ले जाने की क्या ज़रूरत है? अभी वापस पहुंचा देंगे। एक दिन ख़ुद वालिद माजिद क़द्द-स सिर्रहू ने इर्शाद फ़रमाया कि बात असल में यह है कि

मैंने अपने वसीयतनामे में यह लिख दिया है कि मेरे कमरे में जो चीज़ें हैं, वे सब मेरी मिल्कियत हैं और अहलिया के कमरे में जो चीज़ें हैं, वह उनकी मिल्कियत है, इसलिए जब मेरे कमरे में किसी दूसरे की चीज़ आ जाती है तो मुझे ख़्याल है कि कहीं ऐसा न हो कि मेरा इंतिक़ाल इस हालत में हो जाए कि वह चीज़ मेरे कमरे के अन्दर हो, इसलिए कि वसीयतनामे के मुताबिक़ वह चीज़ मेरी मिल्कियत तसव्वुर की जाएगी, हालांकि हक़ीक़त में वह चीज़ मेरी मिल्कियत नहीं है, इसलिए मैं इस बात का एहतिमाम करता हूं और तुम्हें कहता हूं कि यह चीज़ जल्दी वापस ले जाओ।

ये सब बातें दीन का हिस्सा हैं। आज हमने इनको दीन से ख़ारिज कर दिया है और यही बातें बड़ों से सीखने की हैं। ये सब बातें इसी उसूल से निकल रही हैं, जो उसूल हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस हदीस में बयान फ़रमा दिया, वह यह कि 'क़िरान' से बचो।

मुश्तरक चीज़ों के इस्तेमाल का तरीक़ा

मेरे वालिद माजिद क़द्दसल्लाहु सिर्रहू फ़रमाया करते थे कि घर में कुछ चीज़ें मुश्तरक इस्तेमाल की होती हैं, जिसको घर का हर फ़र्द इस्तेमाल करता है और उनकी एक जगह मुक़र्रर होती है कि फ़्लां जगह पर रखी जाएगी, जैसे गिलास फ़्लां जगह रखा जाएगा, प्याला फ़्लां जगह रखा जाएगा, साबुन फ़्लां जगह रखा जाएगा। हमें फ़रमाया करते थे कि तुम लोग इन चीज़ों को इस्तेमाल करके बे-जगह रख देते हो, तुम्हें मालूम नहीं कि तुम्हारा यह अमल गुनाहे कबीरा है, इसलिए कि वह चीज़ मुश्तरक इस्तेमाल की है। जब दूसरे

आदमी को उसके इस्तेमाल की ज़रूरत होगी तो वह उसको उसकी जगह पर तलाश करेगा और जब जगह पर उसको वह चीज़ नहीं मिलेगी तो उसको तक्लीफ़ और ईज़ा होगी और किसी भी मुसलमान को तक्लीफ़ पहुंचाना गुनाहे कबीरा है। —हमारा ज़ेहन कभी इस तरफ़ गया भी नहीं था कि यह भी गुनाह की बात है। हम तो समझते थे कि यह तो दुनियादारी का काम है, घर का इन्तिज़ामी मामला है—याद रखो, ज़िंदगी का कोई गोशा ऐसा नहीं है, जिसके बारे में दीन की कोई रिवायत मौजूद न हो—हम सब अपने-अपने गरेबान में मुंह डालकर देखें कि क्या हम लोग इस बात का एहतिमाम करते हैं कि मुश्तरक इस्तेमाल की चीज़ें इस्तेमाल के बाद उनकी तैशुदा जगह पर रखें, ताकि दूसरों को तक्लीफ़ न हो? अब यह छोटी-सी बात है, जिसमें हम सिर्फ़ बे-ध्यानी और बे-तवज्जोही की वजह से गुनाहों में मुब्तला हो जाते हैं, इसलिए कि हमें दीन की फ़िक्र नहीं, दीन का ख़्याल नहीं, अल्लाह के सामने पेश होने का एहसास नहीं, दूसरे इसलिए कि इन मसुअलों से जिहालत और नावाक़फ़ियत तो आजकल बहुत है।

बहरहाल ये सब बातें 'क़िरान' के अन्दर दाख़िल हैं। वैसे यह छोटी-सी बात है कि दो खजूरों को एक साथ मिलाकर न खाना चाहिए, लेकिन इससे यह उसूल मालूम हुआ कि हर वह काम करना, जिससे दूसरे मुसलमान को तक्लीफ़ हो, या दूसरों का हक़ पामाल हो, सब 'क़िरान' में दाख़िल हैं।

मुश्तरक बैतुल ख़ला (शौचालय) का इस्तेमाल

कभी-कभी ऐसी बात होती है, जिसको बताते हुए शर्म आती है,

लेकिन दीन की बातें समझाने के लिए शर्म करना भी ठीक नहीं, जैसे आप बैतुलख़ला में गए और फ़ारिग़ होने के बाद गन्दगी को बहाया नहीं, वैसे ही छोड़कर चले आए। हज़रत वालिद साहब रह० फ़रमाया करते थे कि यह अमल कबीरा गुनाह है, इसलिए कि जब दूसरा शख़्स बैतुलख़ला इस्तेमाल करेगा, तो उसको कराहियत होगी और तक्लीफ़ हागी और इस तक्लीफ़ की वजह तुम बने, तुमने उसको तक्लीफ़ पहुंचाई और एक मुसलमान को तक्लीफ़ पहुंचाकर तुमने बड़ा गुनाह किया।

ग़ैर-मुस्लिमों ने इस्लामी उसूल अपना लिए

एक बार मैं हज़रत वालिद साहब रहमतुल्लाहि अलैहि के साथ ढाके के सफ़र पर गया, हवाई जहाज़ का सफ़र था। रास्ते में मुझे ग़ुस्लख़ाने में जाने की ज़रूरत पेश आई—आपने देखा होगा कि हवाई जहाज़ के ग़ुस्लख़ाने में वाश बेसिन के ऊपर यह इबादत लिखी होती है कि, 'जब आप वाश बेसिन को इस्तेमाल कर लें तो उसके बाद कपड़े से उस को साफ़ और ख़ुश्क कर दें, ताकि बाद में आने वाले को कराहियत न हो'—जब मैं ग़ुस्लख़ाने से वापस आया तो हज़रत वालिद रह० ने फ़रमाया कि ग़ुस्लख़ाने में वाश बेसिन पर जो इबारत लिखी है, वह वही बात है जो मैं तुम लोगों से बार-बार कहता रहता हूं कि दूसरों को तक्लीफ़ से बचाना दीन का हिस्सा है, जो इन ग़ैर-मुस्लिमों ने अख़्तियार कर लिया है। इसके नतीजे में अल्लाह ने इनको दुनिया में तरक़्क़ी अता फ़रमा दी है और हम लोगों ने इन बातों को दीन से खारिज कर दिया है और दीन को सिर्फ़ नमाज़-रोज़े के अन्दर महदूद कर दिया है, मुआशरत के उन आदाब को बिल्कुल

छोड़ दिया है, जिसका नतीजा यह है कि हम लोग पस्ती और तनज़्ज़ुल की तरफ़ जा रहे हैं, वजह इसकी यह है कि अल्लाह तआला ने इस दुनिया को अस्बाब की दुनिया बनाया है। इसमें जैसा अमल अख़्तियार करोगे, अल्लाह तआला उसके वैसे ही नतीजे पैदा फ़रमाएंगे।

पिछले साल मुझे लन्दन जाने का इत्तिफ़ाक़ हुआ, फिर वहां लन्दन से ट्रेन के ज़रिए एडम्बरा जा रहा था। रास्ते में ग़ुस्लख़ाने में जाने की ज़रूरत पेश आई। जब ग़ुस्लख़ाने के पास गया तो देखा कि एक अंग्रेज़ ख़ातून दरवाज़े पर खड़ी है। मैं यह समझा कि शायद ग़ुस्लख़ाना इस वक़्त फ़ारिग़ नहीं है और यह ख़ातून इस इन्तिज़ार में है कि जब फ़ारिग़ हो जाए तो वह अन्दर जाए। चुनांचे अपनी जगह आकर बैठ गया। जब काफ़ी देर इस तरह गुज़र गई कि न तो कोई अन्दर से निकल रहा था और न यह अन्दर जा रही थी, मैं दोबारा ग़ुस्लख़ाने के क़रीब गया तो मैंने देखा कि ग़ुस्लख़ाने के दरवाज़े पर लिखा है कि यह ख़ाली है, अन्दर कोई नहीं। चुनांचे मैंने उन ख़ातून से कहा कि आप अन्दर जाना चाहें तो चली जाएं, ग़ुस्लख़ाना तो ख़ाली है। उन ख़ातून ने कहा, एक वजह से खड़ी हूं, वह यह कि मैं अन्दर ज़रूरत के लिए गई थी और ज़रूरत से फ़ारिग़ होने के बाद मैंने उसको फ़्लश नहीं किया था कि इतने में गाड़ी स्टेशन पर आकर खड़ी हो गई और क़ानून यह है कि जब गाड़ी प्लेट फ़ार्म पर आकर खड़ी हो, उस वक़्त ग़ुस्लख़ाना इस्तेमाल न करना चाहिए और न उसमें पानी बहाना चाहिए। अब मैं इस इन्तिज़ार में हूं कि जब गाड़ी चल पड़े तो मैं उसको फ़्लश कर दूं और उसमें पानी बहा दूं और फिर अपनी सीट पर वापस जाऊं।

अब आप अन्दाज़ा लगाएं कि वह ख़ातून सिर्फ़ इस इन्तिज़ार में थी कि फ़्लश करना रह गया था और अब तक फ़्लश भी इसलिए नहीं किया था कि यह क़ानून की ख़िलाफ़वर्ज़ी हो जाएगी।—इस वक़्त मुझे हज़रत वालिद साहब रहमतुल्लाहि अलैहि की यह बात याद आ गई, वह फ़रमाया करते थे कि इस बात का ख़्याल और एहतिमाम कि आदमी फ़्लश करके जाए, असल में यह दीन का हुक्म है, ताकि बाद में आने वाले को तक्लीफ़ न हो। लेकिन दीन की इस बात पर एक ग़ैर-मुस्लिम ने किस एहतिमाम से अमल किया। आप अन्दाज़ा लगाएं कि क्या हम में से कोई आदमी अगर मुश्तरक चीज़ को इस्तेमाल करे तो क्या उसको इस बात का एहतिमाम और ख़्याल होता है? बल्कि हम ऐसे ही गन्दा छोड़ देते हैं और यह सोचते हैं कि जो बाद में आएगा, वह भरेगा, वह ख़ुद ही निमट लेगा, वह जाने, उसका काम जाने।

ग़ैर-मुस्लिम क़ौमें क्यों तरक़्क़ी कर रही हैं?

ख़ूब समझ लीजिए, यह दुनिया अस्बाब की दुनिया है। अगर ये बातें ग़ैर-मुस्लिम ने हासिल करके उन पर अमल करना शुरू कर दिया, तो अल्लाह तआला ने उनको दुनिया में तरक़्क़ी दे दी, अगरचे आख़िरत में तो उनका कोई हिस्सा नहीं, लेकिन मआशरे के वे आदाब जो हमें मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सिखाए थे, उन आदाब को उन्होंने अख़्तियार कर लिया, तो अल्लाह तआला ने उनको तरक़्क़ी दे दी—इसलिए यह एतराज़ तो कर दिया कि हम मुसलमान हैं, कलिमा पढ़ते हैं, ईमान का इक़रार करते हैं, इसके बावजूद हम दुनिया में ज़लील व ख़्वार हो रहे हैं। दूसरे लोग ग़ैर-मुस्लिम होने के बावजूद तरक़्क़ी कर रहे हैं, लेकिन यह नहीं देखा

कि इन ग़ैर-मुस्लिमों का यह हाल है कि वे तिजारत में झूठ नहीं बोलेंगे, अमानत और दयानत से काम लेंगे, जिसके नतीजे में अल्लाह तआला ने उनकी तिजारत चमका दी, लेकिन मुसलमानों ने इन चीज़ों को छोड़ दिया और वे दीन को मस्जिद और मदरसे तक महदूद करके बैठ गए, उन्होंने ज़िंदगी की चीज़ों को दीन से ख़ारिज कर दिया, जिसका नतीजा यह है कि अपने दीन से भी दूर हो गए और दुनिया में भी ज़लील व ख़्वार हो गए, हालांकि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ये सब तालीमात हमें अता फ़रमाईं, ताकि हम उनको अपनी ज़िंदगी के अन्दर अपनाएं और उनको दीन का हिस्सा समझें। बहरहाल बात यहां से चली थी 'दो खजूरों को एक साथ मिलाकर न खाओ', लेकिन इससे कितने अहम उसूल हमारे लिए निकलते हैं और यह कितनी हमागीर बात है, अल्लाह तआला हमारे दिलों में एहसास और इदराक पैदा फ़रमाया दे, आमीन।

टेक लगाकर खाना सुन्नत के ख़िलाफ़ है

عن ابی حجیفة رضی اللہ عنہ قال: قال رسول اللہ ﷺ: انی لااکل متکئا" (صحیح بخاری، کتاب الاطعمة، باب الاکل متکئا: ٥٣٩٨)

हज़रत अबू जुहैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि मैं टेक लगाकर नहीं खाता। —सहीह बुख़ारी, हदीस न० 5398

एक दूसरी हदीस में हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि—

"رأیت رسول اللہ ﷺ جالسا مقعیا یاکل تمرا" (صحیح مسلم، کتاب الاشربة، باب استحباب تواضع الاکل: ٢٠٤٤)

'मैंने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा कि आप इस तरह बैठे हुए खजूर खा रहे थे कि आपने अपने घुटने खड़े किए हुए थे। —सहीह मुस्लिम, हदीस न० 2044

उकड़ू बैठकर खाना मस्नून नहीं

खाने के लिए बैठने के बारे में लोगों के ज़ेहनों में कुछ ग़लतफ़हमियां पाई जाती हैं, उनको दूर करना ज़रूरी है। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीसों की रोशनी में खाने के लिए मुस्तहब और बेहतर बैठने का तरीक़ा यह है कि आदमी इस तरह बैठकर खाए कि उस बैठने के ज़रिए खाने की अज़्मत भी बढ़े और तवाज़ो भी हो, तकब्बुर वाली बैठक न हो और उस बैठक में खाने की बे-क़द्री और बे-इज़्ज़ती न हो। यह जो मशहूर है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उकड़ू बैठकर खाना खाया करते थे, यह बात इस तरह दुरुस्त नहीं, मुझे ऐसी कोई हदीस नहीं मिली, जिसमें हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का उकड़ू बैठकर खाना साबित हो, अलबत्ता ऊपर जो हदीस हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की गई है, उसमें जिस तरह बैठने का ज़िक्र किया गया है, वह यह है कि आपने ज़मीन में बैठकर अपने दोनों घुटने सामने की तरफ़ खड़े कर दिए थे। इस हदीस में 'उकड़ू' बैठना मुराद नहीं, इसलिए यह जो मशहूर है कि उकड़ू बैठकर खाना सुन्नत है, यह दुरुस्त नहीं, अलबत्ता यह बात साबित है कि खाने के वक़्त आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बैठना तवाज़ोअ वाला बैठना होता था, जिसमें देखने वाले को फ़िरऔनियत या तकब्बुर या रऊनत का एहसास न हो, बल्कि अब्दियत का एहसास होता हो।

खाने के लिए बैठने का सबसे अच्छा तरीक़ा

एक सहाबी फ़रमाते हैं कि एक बार मैं हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में पहुंचा तो मैंने देखा कि आप इस तरह खाना खा रहे थे, जिस तरह ग़ुलाम खाना ख़ाता है। बहरहाल हदीसों के मज्मूए से फ़ुक़हा किराम ने जो बात ली है, वह यह है कि खाने की बेहतर बैठक यह है कि आदमी दो ज़ानू बैठकर खाए, इसलिए कि इसमें तवाज़ोअ भी ज़्यादा है और खाने का एहतराम भी है और इस बैठक में ज़्यादा खा जाने पर रोक भी है, इसलिए कि जब आदमी ख़ूब फैल कर बैठेगा तो ज़्यादा खा जाएगा और हमारे बुज़ुर्गों ने फ़रमाया कि एक टांग उठाकर और एक टांग बिछाकर खाना भी उसी में दाख़िल है और यह भी तवाज़ो वाला बैठना है और इस तरह बैठकर खाने में दुनिया का भी फ़ायदा और आख़िरत का भी फ़ायदा है।

चार ज़ानू बैठ कर खाना भी जायज़ है

खाने के वक़्त चार ज़ानू होकर बैठना भी जायज़ है, नाजायज़ नहीं, इसमें कोई गुनाह नहीं, लेकिन यह बैठना तवाज़ोअ के उतने क़रीब नहीं है जितनी के पहली दो बैठकें हैं, इसलिए आदत तो इस बात की डालनी चाहिए कि आदमी दो ज़ानू बैठकर खाए या एक टांग खड़ी करके खाए, चार ज़ानू न बैठे, लेकिन अगर किसी से इस तरह नहीं बैठा जाता या कोई आदमी अपने आराम के लिए चार ज़ानू बैठकर खाना खाता है, तो यह कोई गुनाह नहीं। यह जो लोगों में मशहूर है कि चार ज़ानू बैठकर खाना नाजायज़ है, यह ख़्याल दुरुस्त नहीं, ग़लत है, अलबत्ता अफ़ज़ल यह है कि दो ज़ानू बैठकर खाए, इसलिए कि इस बैठने में खाने की अज़्मत और तौक़ीर ज़्यादा है।

मेज़-कुर्सी पर बैठकर खाना

मेज़-कुर्सी पर खाना भी कोई गुनाह और नाजायज़ नहीं, लेकिन ज़मीन पर बैठकर खाने में सुन्नत की पैरवी का सवाल भी है और सुन्नत से ज़्यादा क़रीब है, इसलिए जहां तक मुम्किन हो, इंसान को इस बात की कोशिश करनी चाहिए कि वह ज़मीन पर बैठकर खाए, इसलिए कि जितना सुन्नत से ज़्यादा क़रीब होगा, उतनी ही बरकत ज़्यादा होगी और उतना ही ज़्यादा सवाब मिलेगा, उतने ही फ़ायदे ज़्यादा हासिल होंगे—बहरहाल मेज़-कुर्सी पर बैठकर खाना भी जायज़ है, गुनाह नहीं।

ज़मीन पर बैठकर खाना सुन्नत है

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दो वजह से ज़मीन पर बैठकर खाते थे, एक तो यह कि उस ज़माने में ज़िंदगी सादा थी, मेज़-कुर्सी का रिवाज ही नहीं था, इसलिए नीचे बैठा करते थे। दूसरी वजह यह है कि नीचे बैठकर खाने में तवाज़ो ज़्यादा है और खाने की तौक़ीर भी ज़्यादा है। आप इसका तजुर्बा करके देख लीजिए कि कुर्सी पर बैठकर खाने में दिल की कैफ़ियत और होगी और ज़मीन पर बैठकर खाने में दिल की कैफ़ियत और होगी, दोनों में ज़मीन-आसमान का फ़र्क़ महसूस होगा, इसलिए कि ज़मीन पर बैठकर खाने की शक्ल में तबियत के अन्दर तवाज़ोअ ज़्यादा होगी, आजिज़ी होगी, मस्कनत होगी, अब्दियत होगी और मेज़-कुर्सी पर बैठकर खाने की शक्ल में ये बातें पैदा नहीं होतीं, इसलिए जहां तक मुम्किन हो, इस बात की कोशिश करनी चाहिए कि आदमी ज़मीन पर बैठकर खाए, लेकिन अगर कहीं मेज़-कुर्सी पर बैठकर खाने का मौक़ा आ जाए, तो इस

तरह खाने में कोई हरज और गुनाह भी नहीं है, इसलिए इस पर इतना तशद्दुद करना भी ठीक नहीं, जैसा कि कुछ लोग मेज़-कुर्सी पर बैठकर खाने को हराम और नाजायज़ ही समझते हैं और उस पर बहुत ज़्यादा नकीर करते हैं। यह अमल भी दुरुस्त नहीं।

बशर्ते कि उस सुन्नत का मज़ाक़ न उड़ाया जाए

और यह जो मैंने कहा कि ज़मीन पर बैठकर खाना सुन्नत से ज़्यादा क़रीब है और ज़्यादा अफ़ज़ल है और ज़्यादा सवाब की वजह है, यह भी उस वक़्त है, जब इस सुन्नत को मआज़ल्लाह मज़ाक़ न बनाया जाए, इसलिए अगर किसी जगह इस बात का डर हो कि अगर ज़मीन पर नीचे बैठकर खाना खाया गया तो लोग उस सुन्नत का मज़ाक़ उड़ाएंगे, तो ऐसी जगह पर ज़मीन पर खाने पर इसरार भी दुरुस्त नहीं।

हज़रत वालिद साहब रहमतुल्लाहि अलैहि ने एक दिन सबक़ में हमें एक वाक़िया सुनाया कि एक दिन मैं और मेरे कुछ साथी देवबन्द से दिल्ली गए, जब दिल्ली पहुंचे तो वहां खाने की ज़रूरत पेश आई, चूंकि कोई और जगह खाने की नहीं थी, इसलिए होटल में खाने के लिए चले गए। अब ज़ाहिर है कि एक होटल में मेज़-कुर्सी पर खाने का इन्तिज़ाम होता है, इसलिए हमारे दो साथियों ने कहा कि हम तो कुर्सी पर बैठकर नहीं खाएंगे, इसलिए कि ज़मीन पर बैठकर खाना सुन्नत है। चुनांचे उन्होंने यह चाहा कि होटल के अन्दर ज़मीन पर अपना रूमाल बिछा कर वहां बेरे से खाना मंगवाएं। हज़रत वालिद साहब फ़रमाते हैं कि मैंने मना किया कि ऐसा न करें, बल्कि मेज़-कुर्सी पर बैठकर खाना खाएं। उन्होंने कहा, हम मेज़-कुर्सी पर

क्यों खाएं? जब ज़मीन पर बैठकर खाना सुन्नत के ज़्यादा क़रीब है, तो फिर ज़मीन पर बैठकर खाने से क्यों डरें? और क्यों शरमाएं? हज़रत वालिद साहब ने फ़रमाया कि शरमाने और डरने की बात नहीं। बात असल में यह है कि जब तुम लोग यहां इस तरह ज़मीन पर अपना रूमाल बिछा कर बैठोगे, तो लोगों के सामने इस सुन्नत का तुम मज़ाक़ बनाओगे और लोग इस सुन्नत की तौहीन करने वाले होंगे और सुन्नत की तौहीन करना सिर्फ़ गुनाह ही नहीं, बल्कि कभी-कभी इंसान को कुफ़्र तक पहुंचा देता है। अल्लाह तआला बचाए।

एक सबक़ भरा वाक़िया

फिर हज़रत वालिद साहब रह० ने उनसे फ़रमाया कि मैं तुमको एक क़िस्सा सुनाता हूं, एक बहुत बड़े मुहद्दिस और बुज़ुर्ग गुज़रे हैं जो 'सुलेमान आमश' के नाम से मशहूर हैं और इमाम अबू हनीफ़ा रह० के भी उस्ताद हैं। तमाम हदीस की किताबें उनकी रिवायतों से भरी हुई हैं। अरबी ज़ुबान में 'आमश' चौंधे को कहा जाता है, जिसकी आंखों में चुंधियाहट हो, जिसमें पलकें गिर जाती हैं और रोशनी की वजह से उसकी आंखें ख़ेरा हो जाती हैं। चूंकि उनकी आंखें चुंधियाई हुई थीं, इस वजह से 'आमश' के लक़ब से मशहूर थे—उनके पास एक शागिर्द आ गए। वह शागिर्द आरज यानी लंगड़े थे, पांव से माज़ूर थे, शागिर्द भी ऐसे थे जो हर वक़्त उस्ताद से चिमटे रहने वाले थे जैसे कुछ शागिर्दों की आदत होती है कि हर वक़्त उस्ताद से चिमटे रहते हैं। जहां उस्ताद जा रहे हैं, वहां शागिर्द भी साथ-साथ जा रहे हैं—यह भी ऐसे थे। चुनांचे इमाम आमश रहमतुल्लाहि अलैहि जब बाज़ार जाते, तो यह इमाम 'आरज' शागिर्द

भी साथ हो जाते। बाज़ार में लोग उन पर जुम्ले कसते कि देखो 'उस्ताद' चौंधा है और शागिर्द 'लंगड़ा' है। चुनांचे इमाम आमश रहमतुल्लाहि अलैहि ने अपने शागिर्द से फ़रमाया कि जब हम बाज़ार जाया करें तो तुम हमारे साथ मत जाया करो। शागिर्द ने कहा, क्यों? मैं आपका का साथ क्यों छोड़ूं? इमाम आमश रहमतुल्लाहि अलैहि ने फ़रमाया कि जब हम बाज़ार जाते हैं तो लोग हमारा मज़ाक़ उड़ाते हैं कि उस्ताद चौंधा है और शागिर्द लंगड़ा है शागिर्द ने कहा—'हज़रत! जो लोग मज़ाक़ उड़ाते हैं, उनको मज़ाक़ उड़ाने दें, इसलिए कि उस मज़ाक़ उड़ाने के नतीजे में हमें सवाब मिलता है और उनको गुनाह मिलता है। इसमें तो हमारा कोई नुक़्सान नहीं, बल्कि हमारा तो फ़ायदा है। हज़रत आमश रहमतुल्लाहि अलैहि ने ज़वाब में फ़रमाया कि—

نسلم ویسلمون خیر من ان نوجر ویا ثمنون

'अरे भाई! वे भी गुनाह से बच जाएं और हम भी गुनाह से बच जाएं, यह इसके मुक़ाबले में बेहतर है कि हमें सवाब मिले और उनको गुनाह हो। मेरा साथ जाना कोई फ़र्ज़ व वाजिब तो है नहीं और न जाने में कोई नुक़्सान तो है नहीं, अलबत्ता फ़ायदा यह है कि लोग इस गुनाह से बच जाएंगे। इसलिए हमारे मुसलमान भाइयों को गुनाह हो, इससे बेहतर यह सूरत है कि न उनको गुनाह हो और न हमें गुनाह हो, इसलिए आगे मेरे साथ बाज़ार मत जाया करो।

उस वक़्त मज़ाक़ की परवाह न करे।

लेकिन यह बात याद रखो, अगर कोई गुनाह का काम है, तो फिर चाहे कोई मज़ाक़ उड़ाए या हंसी उड़ाए, इसकी परवाह नहीं करनी चाहिए, इसलिए कि लोगों के मज़ाक़ उड़ाने की वजह से गुनाह

का काम करना जायज़ नहीं। लोगों के मज़ाक़ उड़ाने की वजह से कोई फ़र्ज़ या वाजिब काम छोड़ना जायज़ नहीं, लेकिन अगर एक तरफ़ जायज़ और मुबाह काम है और दूसरी तरफ़ औला और अफ़ज़ल काम है, अब अगर लोगों को गुनाह से बचाने के लिए अफ़ज़ल काम छोड़ दो और उसके मुक़ाबले में जो जायज़ काम है, उसको अख़्तियार कर लो, तो इसमें कोई मुज़ायक़ा नहीं, ऐसा करना दुरुस्त है।

बिला ज़रूरत मेज़-कुर्सी पर न खाए

चुनांचे एक बार हज़रत थानवी क़द्दसल्लाहु सिर्रहू को मेज़-कुर्सी पर बैठकर खाने की ज़रूरत पेश आ गई, तो हज़रत थानवी ने उस वक़्त फ़रमाया कि वैसे मेज़-कुर्सी पर बैठकर खाना तो जायज़ नहीं है, लेकिन इसमें थोड़ा सा तशब्बोह (ग़ैरों से मिलता-जुलता होने) का शुबहा है कि चूंकि अंग्रेज़ों का चलाया हुआ तरीक़ा है, इस तरह खाने में उनके साथ मुशाबहत न हो जाए, इसलिए जब आप कुर्सी पर बैठे तो पांव उठाकर बैठ गए, पांव लटकाए नहीं और फिर फ़रमाया कि अंग्रेज़ों के साथ मुशाबहत पैदा हो जाने का जो शुबहा था, वह इस तरह बैठने से ख़त्म हो गया, इसलिए कि वे लोग पांव लटका कर खाते हैं, मैंने पांव ऊपर कर लिए हैं।

बहरहाल मेज़-कुर्सी पर खाना नाजायज़ और गुनाह नहीं, अलबत्ता इतनी बात ज़रूर है कि आदमी जितना सुन्नत से ज़्यादा क़रीब होगा, उतनी ही बरकत ज़्यादा होगी, उतना ही अज्र ज़्यादा मिलेगा, इसलिए बिला वजह और बिला ज़रूरत मेज़-कुर्सी पर बैठकर खाने को अपनी आदत बना लेना अच्छा नहीं, बेहतर यह है कि ज़मीन पर बैठकर

खाने का एहतिमाम करे। लेकिन जहां कहीं ज़रूरत समझी जाए, वहां मेज़-कुर्सी पर बैठकर खा सकता है, अलबत्ता इस बात का एहतिमाम करे कि पीछे टेक लगाकर न खाए, बल्कि आगे की तरफ़ झुक कर खाए, इसलिए कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने टेक लगा कर खाने को घमंडियों का तरीक़ा क़रार दिया है, यह तरीक़ा दुरुस्त नहीं।

चारपाई पर खाना

इसी तरह चारपाई पर बैठकर खाना भी जायज़ है, बल्कि कुर्सी पर खाने के मुक़ाबले में चारपाई पर खाना ज़यदा बेहतर है, इसलिए कि वह तरीक़ा, जिसमें खाने वाला और खाने की सतह बराबर हो, इससे बेहतर है, जिसमें खाना ऊपर हो और खाने वाला नीचे हो, अलबत्ता सबसे बेहतर यह है कि ज़मीन पर बैठ कर खाया जाए, इसमें सवाब भी ज़्यादा है, तवाज़ोअ भी इससे ज़्यादा है और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत से भी ज़्यादा क़रीब है। अल्लाह तआला हमें अपनी रहमत से सुन्नतों से ज़्यादा क़रीब रहने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन।

खाने के वक़्त बातें करना

एक ग़लत बात लोगों में यह मशहूर है कि खाना खाते वक़्त बातें करना जायज़ नहीं, यह भी बे-असल बात है, शरिअत में इसकी कोई असल नहीं। खाना खाने के दौरान ज़रूरत की बात की जा सकती है और हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से साबित भी है, अलबत्ता हज़रत थानवी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाया करते थे कि इस बात का एहतिमाम करना चाहिए कि खाने के वक़्त जो बातें

की जाएं वे हल्की-फुल्की हों, ज़्यादा सोच व विचार और ज़्यादा इन्हिमाक की बातें खाने के वक़्त नहीं करनी चाहिए, इसलिए कि खाने का भी हक़ है, वह हक़ यह है कि खाने की तरफ़ मुतवज्जह होकर खाओ, इसलिए ऐसी बातें करना, जिसमें इंसान मुन्हमिक हो जाए और खाने की तरफ़ तवज्जोह न रहे, ऐसी बातें दुरुस्त नहीं। ख़ुशतबई (दिल्लगी) और हंसी-मज़ाक़ की हल्की-फुल्की बातें कर सकते हैं, लेकिन यह जो मशहूर है कि आदमी खाने के वक़्त बिल्कुल ख़ामोश रहे, कोई बात न करे, यह दुरुस्त नहीं।

खाने के बाद हाथ पोंछ लेना जायज़ है

عن ابن عباس رضی الله عنهما قال: قال رسول الله ﷺ: اذا اكل احدكم طعاما فلا يمسح اصابعه حتى يلعقها او يلعقها

(صحیح بخاری، کتاب الاطعمة، باب لعق الاصابع ومصها:٥٤٥٦)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा रिवायत करते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जब तुममें से कोई आदमी कोई खाना खा चुके तो अपनी उंगलियों को साफ़ न करे, जब तक ख़ुद उन उंगलियों को चाट न ले या दूसरे को न चटवा दे।—सहीह बुख़ारी, हदीस न० 5456

उलेमा किराम ने फ़रमाया कि इस हदीस से दो मसले निकलते हैं और दो अदब इस हदीस में बयान किए गए हैं।

पहला मसला इससे यह निकलता है कि खाना खाने के बाद जिस तरह हाथ धोना जायज़, बल्कि मुस्तहब और सुन्नत है, इसी तरह इन हाथों को किसी चीज़ से पोंछ लेना भी जायज़ है, अलबत्ता अफ़ज़ल

तो यह है कि हाथों को पानी से धो लिया जाए, लेकिन अगर पानी मौजूद नहीं है या पानी इस्तेमाल करने में कोई तक्लीफ़ और दुश्वारी है, तो इस शक्ल में किसी काग़ज़ या कपड़े से पोंछ लेना भी जायज़ है, जैसा कि आजकल टीशू पेपर इसी मक़्सद के लिए ईजाद हो गए हैं, इनसे हाथ पोंछ लेना भी जायज़ है।

खाने के बाद उंगलियां चाट लेना सुन्नत है

दूसरा मस्अला जो इस हदीस के बयान का असल मक़्सूद है, वह यह है कि हाथों को धोने और पोंछने से पहले उंगलियों को चाट लेना चाहिए और ख़ुद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह मामूल था और आपकी यह सुन्नत थी कि खाने के जो ज़र्रे उंगलियों पर लगे रह जाते, आप उनको चाट लेते थे और इसकी हिक्मत हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक दूसरी हदीस में यह बयान फ़रमाई कि तुम्हें नहीं मालूम कि खाने के कौन से हिस्से में बरकत है, यानी अल्लाह तआला की तरफ़ से खाने के इस ख़ास हिस्से में कोई बरकत का पहलू हो सकता है जो दूसरे हिस्सों में नहीं है, शायद बरकत उसी हिस्से में हो जो तुम्हारी उंगलियों पर लगा रह गया है, इसलिए इस हिस्से को भी बर्बाद न करो, बल्कि इसको भी खा लो, ताकि इस बरकत से महरूम न रहो।

बरकत क्या चीज़ है?

यह बरकत क्या चीज़ है? आज की दुनिया जो माद्दापरस्ती में घिरी हुई है, सुबह से लेकर शाम तक माद्दा ही चक्कर काटता नज़र आता है और माद्दे के पीछे, माल व दौलत और सामान व अस्बाब के पीछे झांकने की सलाहियत ही ख़त्म हो गई है, इसलिए आज तक

बरकत का मफ़्हूम समझ ही में नहीं आता कि यह बरकत क्या चीज़ है? बरकत एक ऐसा फैला हुआ मफ़्हूम है जिसमें दुनिया व आख़िरत की तमाम सलाह व फ़लाह सब शामिल हो जाती है। यह अल्लाह तआला की एक अता होती है जिसका आपने अपनी ज़िंदगी में बार-बार मुशाहदा किया होगा, वह यह कि कभी-कभी इंसान किसी चीज़ के अनगिनत अस्बाब जमा कर लेता है। मगर इनसे फ़ायदा नहीं होता, जैसे अपने घर के अन्दर आराम व राहत के तमाम अस्बाब जमा कर लिए, क़ीमती से क़ीमती फ़र्नीचर से घर को सजा दिया, बेहतरीन पर्दे लगा दिए, हशम-ख़ुदम, नौकर-चाकर सब जमा कर लिए, सजावट का सारा सामान जमा कर लिया, लेकिन इसके बावजूद रात को नींद नहीं आती। सारी रात बिस्तर पर करवटें बदलते रहे। मालूम हुआ कि साज़ व सामान में बरकत नहीं, और इस सामान से जो फ़ायदा हासिल करना चाहिए था, वह हासिल नहीं हुआ। अब बताओ कि क्या यह साज़ व सामान अपनी ज़ात में ख़ुद मक़्सूद है कि उनको देखते रहो और ख़ुश होते रहो? अरे, यह सामान तो इसलिए है कि इसके ज़रिए राहत मिले, आराम मिले, सुकून हासिल हो। याद रखो, यह साज़ व सामान सुकून और राहत का ज़रिया तो है और जिस चीज़ का नाम 'राहत व सुकून' है, वह ख़ालिस अल्लाह की अता है, इसलिए जब अल्लाह तआला अता फ़रमाएंगे, तब 'राहत व आराम' हासिल होगा, वरना दुनिया का कितना भी अस्बाब व सामान जमा कर लो, मगर राहत और आराम नहीं मिलेगा।

अस्बाब में राहत नहीं

आज हर आदमी अपने-अपने गरेबान में मुंह डालकर देख ले कि आज से तीस-चालीस साल पहले हर आदमी के पास कैसा साज़ व सामान था और आज कितना है और कैसा है? जायज़ा लेने से सही नज़र आएगा कि ज़्यादातर ऐसे ही लोग हैं, जिनकी मआशी हालत में तरक़्क़ी हुई है। उनके घर के साज़ व सामान में इज़ाफ़ा हुआ है, फ़र्नीचर पहले से अच्छा है, घर पहले से अच्छा बन गया है, आराम पहुंचाने वाली चीज़ें पहले से ज़्यादा हासिल हो गई हैं, लेकिन यह देखो, क्या सुकून भी हासिल हुआ? क्या राहत व आराम मिला? अगर सुकून और आराम नहीं मिला, तो इसका मतलब यह है कि इस सामान में अल्लाह तआला से बरकत हासिल नहीं हुई। यह जो कहा जाता है कि फ़्लां चीज़ में बरकत है, इसका मतलब यह है कि इस चीज़ के इस्तेमाल से जो फ़ायदा हासिल होना चाहिए था, वह हासिल हो रहा है, और बे-बरकती यह है कि उस चीज़ के इस्तेमाल के बावजूद राहत और आराम हासिल नहीं हो रहा है।

राहत अल्लाह तआला की अता है

याद रखो, राहत आराम, सुकून, ये चीज़ें बाज़ार से पैसों के ज़रिए नहीं ख़रीदी जा सकतीं, यह ख़ालिस अल्लाह तआला की अता है, वही अता फ़रमाते हैं, इसी का नाम बरकत है। जिन लोगों के पैसों में बरकत होती है, गिनती के एतबार से तुम्हारे मुक़ाबले में उनके पास शायद पैसे कम हों, लेकिन पैसों का जो फ़ायदा है यानी राहत व आराम, वह अल्लाह तआला ने उनको दे रखा है।

मिसाल के तौर पर एक दौलतमंद इंसान है। उसके पास दुनिया

का सारा साज़ व सामान जमा है। कारख़ाने हैं, कारें हैं, फ़र्नीचर है, नौकर-चाकर हैं। जब खाना चुना जाता है, तो दस्तरख़्वान पर अच्छे से अच्छा खाना मौजूद है, लेकिन मेदा ख़राब है, भूख नहीं लगती। डाक्टर ने मना किया है कि फ़्लां चीज़ नहीं खा सकते, फ़्लां चीज़ नहीं खा सकते। अब नेमतों के मौजूद होने के बावजूद उनसे फ़ायदा नहीं हासिल हो रहा है, इसी का नाम बेबरकती है।

दूसरी तरफ़ एक मज़दूर ने आठ घंटे मेहनत करके सौ रुपए कमाए और फिर होटल से दाल-रोटी या सब्ज़ी रोटी ख़रीदी और भरपूर भूख के बाद ख़ूब पेट भरकर खाया, खाने की पूरी लज़्ज़त हासिल की और जब रात को अपनी टूटी-फूटी चारपाई पर सोया तो आठ घंटे की भरपूर नींद लेकर उठा, जिससे मालूम हुआ कि खाने की लज़्ज़त मज़दूर को हासिल हुई, नींद की लज़्ज़त भी उसको हासिल हुई, अलबत्ता इतनी बात है कि दौलतमंद जैसा टीप-टाप उसके पास नहीं है, यह है बरकत कि अल्लाह तआला ने थोड़ी-सी चीज़ में बरकत डाल दी और जिन चीज़ों से जो फ़ायदा हासिल होना था, वह उससे हासिल कर लिया।

खाने में बरकत का मतलब

देखिए, जो खाना आप खा रहे हैं, यह खाना बज़ाते ख़ुद मक़्सूद नहीं, बल्कि ख़ाने का असल मक़्सद यह है कि इसके ज़रिए क़ूवत हासिल हो, जिस्म को ताक़त मिले। खाने से मक़्सद यह है कि उसके ज़रिए भूख मिट जाए और वह खाना बदन का हिस्सा बन जाए, उसके ज़रिए लज़्ज़त और राहत हासिल हो, लेकिन खाने के ज़रिए इन तमाम चीज़ों का हासिल होना, यह सिर्फ़ अल्लाह ताला की अता है।

इस बात को हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस हदीस में बयान फ़रमा रहे हैं कि तुम्हें क्या मालूम कि खाने के किस हिस्से में अल्लाह ताला ने बरकत रखी है। हो सकता है जो खाना तुम खा चुके हो, उसमें बरकत न हो और उंगलियों पर खाने का जो हिस्सा लगा हुआ था, उसमें अल्लाह तआला ने बरकत रखी थी, तुमने उसको छोड़ दिया, जिसके नतीजे में तुम बरकत से महरूम रह गए, चुनांचे वह खाना तो तुमने खा लिया, लेकिन वह खाना न तो जिस्म का हिस्सा बना, बल्कि उस खाने ने बद-हज़मी पैदा कर दी और सेहत को नुक़्सान पहुंचा दिया और उससे जो ताक़त हासिल हुई थी, वह हासिल न हुई।

खाने के बातिन पर असरात

यह तो मैं ज़ाहिरी सतह की बातें कर रहा हूं, वरना अल्लाह तआला जिन लोगों को 'दीदा-ए-बीना' यानी बसीरत (समझ-बूझ) की आंख अता फ़रमाते हैं, वे इससे भी आगे पहुंचते हैं, वह यह कि खाने-खाने में फ़र्क़ है। यह खाना इंसान की फ़िक्र पर, उसकी सोच पर, उसके जज़्बात और ख़्यालात पर असरअंदाज़ होता है। कुछ खाने वे होते हैं, जो इंसान के बातिनी हालात में ज़ुलमत और तारीकी पैदा करते हैं, जिनकी वजह से बुरे ख़्यालात और बुरे जज़्बात दिल में पैदा होते हैं, गुनाहों का शौक़ और ख़राब ख़्वाहिशें दिल में पैदा होती हैं—और कुछ खाने ऐसी बरकत वाले होते हैं कि जिसकी वजह से बातिन को सुरूर हासिल होता है, रूह को ग़िज़ा मिलती है, अच्छे इरादे और अच्छे ख़्यालात दिल में आते हैं, जिसकी वजह से इंसान को नेकियों की तर्ग़ीब होती है, नेकियों की ख़्वाहिश दिल में उभरती

है, लेकिन चूंकि हमारी आंखें इस माद्दापरस्ती के दौर में अंधी हो चुकी हैं, हम लोग बसीरत खो चुके हैं, जिसकी वजह से खाने की ज़ुलमत और नूरानियत (रोशनी) का फ़र्क़ पता नहीं चलता, जिन लोगों को अल्लाह तआला सीरत की आंख अता फ़रमाते हैं, उनसे पूछिए।

खाने के असरात का वाक़िया

हज़रत मौलाना मुहम्मद याक़ूब साहब नानौतवी रहमतुल्लाहि अलैहि, जो दारुल उलूम देवबन्द के सदर मुदर्रिस और हज़रत थानवी रहमतुल्लाहि अलैहि के उस्ताद थे, शायद उन्हीं का वाक़िया है कि एक आदमी ने एक बार हज़रते वाला की दावत की। आप वहां तशरीफ़ ले गए, खाना शुरू किया। एक नवाला खाने के बाद मालूम हुआ कि जिस आदमी ने दावत दी है, उसकी आमदनी हलाल नहीं है, उसकी वजह से यह खाना हलाल नहीं है, चुनांचे खाना छोड़कर खड़े हो गए और वापस चले आए, लेकिन एक नवाला जो हलक़ में चला गया था, उसके बारे में फ़रमाते थे कि यह एक लुक़्मा जो मैंने हलक़ से नीचे उतार लिया था, उसकी ज़ुलमत और तारीकी दो महीने तक मुझे महसूस होती रही। वह इस तरह कि दो माह तक मेरे दिल में गुनाह करने की ख़्वाहिश बार-बार पैदा होती रही। दिल में यह तक़ाज़ा होता कि फ़्लां गुनाह कर लूं, फ़्लां गुनाह कर लूं। अब ज़ाहिर में तो इसमें कोई जोड़ नज़र नहीं आता कि एक लुक़्मा खा लेने में और गुनाह का तक़ाज़ा पैदा होने में क्या जोड़ है? लेकिन बात असल में यह है कि हमें इसलिए नहीं महसूस होता कि हमारा सीना ज़ुलमत के दाग़ों से भरा हुआ है, जैसे एक सफ़ेद कपड़े के ऊपर अनगिनत काले धब्बे लगे हुए हों, इसके बाद एक धब्बा और लग जाए। पता भी नहीं चलेगा कि नया

धब्बा कौन-सा है? लेकिन अगर कपड़ा सफ़ेद, साफ़-शफ़्फ़ाफ़ हो, उस पर अगर एक छोटा-सा भी दाग़ लग जाएगा तो दूर से नज़र आएगा कि धब्बा लगा हुआ है। —बिल्कुल इसी तरह इन अल्लाह वालों के दिल आईने की तरह साफ़-शफ़्फ़ाफ़ होते हैं। उस पर अगर एक दाग़ भी लग जाए तो वह दाग़ महसूस होता है और उसकी ज़ुलमत नज़र आती है। चुनांचे उन अल्लाह के बन्दे ने यह महसूस कर लिया कि इस एक लुक़्मे के खाने से पहले तो नेकी की ख़्वाहिश भी दिल में पैदा हो रही है, गुनाहों से नफ़रत भी है, लेकिन एक लुक़्मा खाने के बाद दिल में गुनाहों के तक़ाज़े पैदा होने लगे, इसलिए बाद में फ़रमाया कि हक़ीक़त में यह उस एक ख़राब लुक़्मे की ज़ुलमत थी। इसका नाम 'बातिनी बरकत' है। जब अल्लाह तआला यह बातिनी बरकत अता फ़रमा देते हैं तो फिर उसके ज़रिए इंसान के बातिन में तरक़्क़ी होती है। अख़्लाक़ और ख़्यालात दुरुस्त हो जाते हैं।

हम माद्दापरस्ती में फंसे हुए हैं

आज हम माद्दापरस्ती में और पैसों की गिनती के चक्कर में फंस गए, साज़ व सामान और टीप-टाप में फंस गए, जिसके नतीजे में हर काम की बातिनी रूह हमारी नज़रों से ओझल हो गई और ये बातें अजनबी और अचम्भी मालूम होती है, इसलिए बरकत का मतलब भी समझ में नहीं आता। अगर हज़ार बार कहे कि फ़्लां काम में बरकत है, तो उसकी कोई अहमियत दिल में पैदा नहीं होती—लेकिन अगर कोई आदमी यह कहे कि यह खाना खाओगे, हज़ार रुपए ज़्यादा मिलेंगे, तो अब तबियत में उस खाने की तरफ़ रग़बत पैदा होगी कि हां, यह फ़ायदे का काम है और अगर कोई कहे कि फ़्लां

तरफ़ से खाना खाओगे, तो उससे खाने में बरकत होगी, तो इस तरीक़े की तरफ़ रग्बत नहीं होगी, इसलिए कि यह पता ही नहीं बरकत क्या है, इस बरकत का ज़ेहन में तसव्वुर ही नहीं है, हालांकि हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जगह-जगह हदीसों में फ़रमा दिया कि इस अमल से बरकत हासिल होगी और इस अमल से बरकत ख़त्म हो जाएगी, बरकत हासिल करने की कोशिश करो, बे-बरकती से बचो, इसलिए यह बात याद रखो, बरकत उस वक़्त तक हासिल नहीं होगी, जब तक हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नतों की पैरवी नहीं होगी। चुनांचे इस हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमा रहे हैं कि खाने के बाद उंगलियां चाट लो, इसलिए कि हो सकता है कि खाने के जो ज़र्रे उंगलियों में लगे हुए हों, उसमें बरकत हो।

क्या उंगलियां चाट लेना शाइस्तगी के ख़िलाफ़ है?

आज फ़ैशनपरस्ती का ज़माना है। लोगों ने अपने लिए नए-नए एटीकेट बना रखे हैं। चुनांचे अगर दस्तरख़्वान पर सबके साथ खाना खा रहे हैं, उस वक़्त अगर उंगलियों पर लगे हुए सालन को चाट लें, तो यह शाइस्तगी के ख़िलाफ़ है, तह्ज़ीब के ख़िलाफ़ है। यह तो ना शाइस्तगी और बद-तहज़ीबी है, इसलिए इस काम को करते हुए शर्म आती है। अगर लोगों के सामने करेंगे तो लोग हंसी-मज़ाक़ उड़ाएंगे और कहेंगे कि यह भी ग़ैर-मुहज़्ज़ब और ना शाइस्ता है।

तह्ज़ीब और शाइस्तगी सुन्नतों में मुनहसर है

लेकिन याद रखो, सारी तह्ज़ीब और सारी शाइस्तगी हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नतों में मुनहसर हैं। जिस

चीज़ को आपने शाइस्तगी क़रार दे दिया, वह है शाइस्तगी, यह नहीं है कि जिस चीज़ को फ़ैशन ने शाइस्तगी क़रार दे दिया, वह शाइस्तगी हो, इसलिए कि यह फ़ैशन तो रोज़ बदलते हैं, कल तक जो चीज़ नाशाइस्ता थी आज वह शाइस्ता बन गई।

खड़े होकर खाना बद-तह्ज़ीबी है

मिसाल के तौर पर खड़े होकर खाना आजकल फ़ैशन बन गया है। एक हाथ में प्लेट पकड़ी है, दूसरे हाथ से खाना खा रहे हैं। उसी प्लेट में सालन भी है, उसी में रोटी भी है, उसी में सलाद भी है और जिस वक़्त दावत में खाना शुरू होता है, उस वक़्त छीना झपटी होती है, इसमें किसी को भी ना शाइस्तगी नज़र नहीं आती? इसलिए कि फ़ैशन ने आंखें अंधी कर दी हैं, उसके नतीजे में उसके अन्दर नाशाइस्तगी नज़र नहीं आती—चुनांचे जब तक खड़े होकर खाने का फ़ैशन और रिवाज नहीं चला था, उस वक़्त अगर कोई आदमी खड़े होकर खाना खाता, तो सारी दुनिया उसको यही कहती कि यह ग़ैर-मुहज़्ज़ब और बड़ा नाशाइस्ता तरीक़ा है, सही तरीक़ा तो यह है कि आदमी आराम से बैठकर खाए।

फ़ैशन को बुनियाद मत बनाओ

इसलिए फ़ैशन की बुनियाद पर तो तह्ज़ीब और शाइस्तगी रोज़ बदलती है और बदलने वाली चीज़ का कोई भरोसा और कोई एतबार नहीं। एतबार उस चीज़ का है जिसको मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सुन्नत क़रार दे दिया और जिसके बारे में आपने बता दिया कि बरकत इसमें है—अब अगर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैरवी की नीयत से यह काम कर लोगे तो

आख़िरत में भी अज्र व सवाब और दुनिया में भी बरकत हासिल होगी और अगर—मआज़ल्लाह—नाशाइस्ता समझ कर उसको छोड़ दोगे तो फिर तुम उसकी बरकतों से भी महरूम हो जाओगे और फिर ये बेचैनियां तुम्हारी मुक़द्दर होंगी, महरूमियां तुम्हारी मुक़द्दर बन जाएंगी, गुनाहों की रग़बत तुम्हारा मुक़द्दर होगी और दिन-रात तुम्हारे दिल में ज़ुलमत और तारीकियां पैदा होती रहेंगी—बहरहाल बात लम्बी हो गई। इस हदीस में आपने इस बात की ताकीद फ़रमाई कि खाने के बाद अपनी उंगलियां चाट लिया करो, ताकि खाने की बरकत हासिल हो जाए।

तीन उंगलियों से खाना सुन्नत है

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आम आदत यह थी कि आप आम तौर से तीन उंगलियों से खाना खाया करते थे, यानी अंगूठा, शहादत की उंगली और बीच की उंगली। इन तीनों को मिलाकर नवाला लेते थे। उलेमा किराम ने तीन उंगलियों से खाने की एक हिक्मत तो यह लिखी है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ज़माना सादा ग़िज़ाओं का ज़माना था। आजकल की तरह बहुत लम्बे-चौड़े खाने नहीं होते थे और दूसरी हिक्मत यह लिखी है कि जब तीन उंगलियों से खाएंगे तो नवाला छोटा बनेगा और छोटे नवाले में एक डाक्टरी फ़ायदा यह है कि नवाला जितना छोटा होगा, उतना ही उसके हज़्म मे आसानी होगी, इसलिए कि बड़ा नवाला पूरी तरह चबेगा नहीं और फिर मेदे में जाकर नुक़्सान पहुंचाएगा—दूसरा फ़ायदा यह है कि अगर बड़ा नवाला लिया जाएगा, तो उससे इंसान का लालच ज़ाहिर होता है और छोटे नवाले में क़नाअत ज़ाहिर होती

है, इसलिए हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तीन उंगलियों से खाया करते थे, अगरचे कभी-कभार चार उंगलियों से भी खाया करते थे, बल्कि एक रिवायत में एक वाक़िया आया है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पांच उंगलियों से खाना खाया, जिसके ज़रिए आपने यह बता दिया कि तीन के बजाए चार और पांच उंगलियों से खाना भी जायज़ है, लेकिन आम तौर पर आपका मामूल और आपकी सुन्नत तीन उंगलियों से खाने की थी।

—सहीह मुस्लिम, हदीस न० 2031

उंगलियां चाटने में तर्तीब

सहाबा किराम रिज़्वानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन का इश्क़ देखिए कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की एक-एक अदा को हमारे लिए इस तरह महफ़ूज़ करके छोड़ गए हैं कि हमारे लिए उसकी नक़ल उतारना और उसकी पैरवी करना आसान हो जाए, चुनांचे सहाबा किराम ने हमें यह बता दिया कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम किस तर्तीब से ये तीन उंगलियां चाटा करते थे। फ़रमाते हैं कि इन तीन उंगलियों के चाटने की तर्तीब यह होती थी कि पहले बीच की उंगली, फिर शहादत की उंगली और फिर अंगूठा—जब सहाबा किराम आपस में मिलकर बैठते तो आपकी सुन्नतों का ज़िक्र करते और एक दूसरे को तर्ग़ीब देते कि हमें भी इसी तरह करना चाहिए। अब अगर कोई उंगलियां न चाटे तो कोई गुनाह नहीं होगा, मगर सुन्नत की बरकत से महरूम हो जाएगा।

कब तक हंसे जाने से डरोगे?

जहां तक इस बात का ताल्लुक़ है कि अगर हम लोगों के सामने

उंगलियां चाटेंगे, तो लोग उस पर हंसी-मज़ाक़ उड़ाएंगे और हमें ग़ैर-मुहज़्ज़ब और ग़ैर शाइस्ता कहेंगे, तो याद रखिए, जब तक एक बार ख़म ठोंक कर, कमर मज़बूत करके इस बात का तहैया नहीं कर लोगे कि दुनिया के लोग जो कहें, क्या करें, हमें तो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत महबूब है, हमें तो उस पर अमल करना है, जब तक यह फ़ैसला नहीं करोगे, याद रखो, यह दुनिया तुम्हारा हंसी-मज़ाक़ उड़ाती रहेगी। मग़्रिबी क़ौमों की नक़्क़ाली करते-करते हमारा यह हाल हो गया है कि सर से लेकर पांव तक अपना सरापा उनके ढांचे में ढाल लिया, लिबास, पोशाक उन जैसा, रहन-सहन उन जैसा, वजा-क़ता उन जैसी, तरीक़े उन जैसे, तहज़ीब उनकी अख़्तियार कर ली। हर चीज़ में उनकी नक़्क़ाली करके देख ली। अब यह बताओ कि क्या उनकी नज़र में तुम्हारी इज़्ज़त होगी? आज भी वह क़ौम तुम्हें ज़िल्लत की निगाह से देखती है, तुम्हें ज़लील समझती है, रोज़ाना पिटाई होती है, तुम्हारे ऊपर तमांचे लगते हैं, तुम्हें हक़ीर समझा जाता है, यह सब कुछ इसलिए हो रहा है कि तुमने उनको ख़ुश करने के लिए नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तरीक़े छोड़ उनके तरीक़े अख़्तियार कर लिए हैं। चुनांचे वे जानते हैं कि ये लोग हमारे मुक़ल्लिद और हमारे नक़्क़ाल हैं। अब तुम उनके सामने कितने ही बन-संवर कर चले जाओ, लेकिन तुम दक़ियानूस और फ़न्डामेन्टलिस्ट ही रहोगे और तुम्हारे ऊपर यही ताना लगेगा कि ये बुनियादपरस्त और ग़ैर-मुहज़्ज़ब हैं, रजत पसन्द हैं।

ये ताने अंबिया की विरासत हैं

जब तक तुम एक बार कमर मज़बूत करके यह तहैया नहीं कर

लोगे कि ये लोग ताने देते हैं, तो दिया करें, क्योंकि ये ताने तो हक़ के रास्ते के राही का ज़ेवर हैं। जब इंसान हक़ के रास्ते पर चलता है, तो उसको यही ताने मिला करते हैं, अरे हम क्या हैं? हमारे पैग़म्बरों को यही ताने मिले, चुनांचे क़ुरआन करीम में है कि—

مانراك تبعك الا الذين هم ارا ذلنا بادئی الرای (سورہ ہود:۲۷)

'ये कुफ़्फ़ार पैग़म्बरों से कहा करते थे कि हम तो देखते हैं कि जो लोग तुम्हारी पैरवी कर रहे हैं, ये बड़े ज़लील क़िस्म के लोग हैं, हक़ीर और नाशाइस्ता और ग़ैर-मुहज़्ज़ब हैं—बहरहाल अगर तुम मुसलमान हो, पैग़म्बरों के उम्मती और उनकी पैरवी करने वाले हो, तो फिर जहां और चीज़ें उनकी विरासत में तुम्हें हासिल हुई हैं, वे ताने भी उनकी विरासत हैं। आगे बढ़कर इन तानों को गले लगाओ और अपने लिए उनको फ़ख़्र की वजह समझो कि अल-हम्दु लिल्लाह, वही ताने जो अंबिया अलैहिमुस्सलाम को दिए गए थे, हमें भी दिए जा रहे हैं। याद रखो, जब तक यह जज़्बा पैदा नहीं होगा उस वक़्त तक ये सारी क़ौमें तुम्हारा मज़ाक़ उड़ाती रहेंगी—असद मुलतानी मरहूम एक शायर गुज़रे हैं, उन्होंने बड़ा अच्छा शेर कहा है कि —

हंसे जाने से जब तक तुम डरोगे
ज़माना तुम पे हंसता ही रहेगा।

देख लो, ज़माना हंस रहा है, ख़ुदा के लिए यह परवाह दिल से निकाल दो कि दुनिया क्या कहेगी, बल्कि यह देखो कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत क्या है? उस पर अमल करके देखो, इनशाअल्लाह, दुनिया से इज़्ज़त कराओगे, आख़िरकार नतीजे के तौर पर इज़्ज़त तुम्हारी होगी, क्योंकि इज़्ज़त सरकारे दो

आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत की पैरवी में है, किसी और की पैरवी में नहीं।

सुन्नत की पैरवी पर बड़ी ख़ुशख़बरी

सुन्नत की पैरवी पर अल्लाह तआला ने क़ुरआन करीम में इतनी बड़ी ख़ुशख़बरी दी है कि उसके बराबर कोई ख़ुशख़बरी हो ही नहीं सकती। चुनांचे फ़रमाया कि–

قلم ان كنتم تحبون الله فاتبعونى يحببكم الله (آل عمران:۳۱)

'यानी ऐ नबी! (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) आप लोगों से कह दीजिए कि अगर तुम्हें अल्लाह से मुहब्बत है, तो मेरी पैरवी करो, मेरे पीछे चलो और जब मेरे पीछे चलोगे और मेरी पैरवी करोगे, तो अल्लाह तआला तुम्हें महबूब बना लेगा।' –आले इम्रान : 31

इसका मतलब यह है कि अरे! तुम क्या अल्लाह से मुहब्बत करोगे, तुम्हारी क्या हक़ीक़त, तुम्हारी क्या मजाल कि तुम अल्लाह से मुहब्बत कर सको। अल्लाह तआला तुमसे मुहब्बत करने लगेंगे, बशर्तेकि तुम मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नतों की पैरवी करने लगो।–हमारे हज़रत फ़रमाया करते थे कि यह इस बात की ख़ुशख़बरी है कि जिस अमल को सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैरवी की ग़रज़ से अख़्तियार किया जाए, तो फिर जिस वक़्त इंसान वह अमल कर रहा है, उस वक़्त वह अल्लाह तआला का महबूब है, देखो, सुन्नत यह है कि जब आदमी बैतुलख़ला में जाए, तो जाने से पहले यह दुआ पढ़े–

"اللهم ان اعوذبك من الخبث والخبائث"

(अल्लाहु-म इन्नी अऊज़ुबि-क मिनल ख़ुब्सि वल ख़बाइस)

और दाख़िल होते वक़्त बायां पांव दाख़िल करे, तो जिस वक़्त तुम इस नीयत से बायां पांव दाख़िल कर रहे हो कि यह सरकारे दो आलम की सुन्नत है, उस वक़्त तुम अल्लाह तआला के महबूब हो, इसलिए कि उस वक़्त तुम अल्लाह के महबूब की सुन्नत की पैरवी कर रहे हो।

अल्लाह तआला अपना महबूब बना लेंगे

इसी तरह जिस वक़्त तुम इस नीयत से यह उंगली चाट रहे हो कि यह सरकारे दो आलम की सुन्नत है, उस वक़्त तुम अल्लाह तआला के महबूब हो, अल्लाह तुमसे मुहब्बत कर रहे हैं, अरे तुम मख़्लूक़ की तरफ़ क्यों देखते हो कि वे मुहब्बत कर रहे हैं या नहीं, वे अच्छा समझ रहे हैं या नहीं। उस मख़्लूक़ का ख़ालिक़ और मालिक जब तुमसे मुहब्बत कर रहा है और वह कह रहा है कि यह काम बड़ा अच्छा है, फिर तुम्हें क्या परवाह कि दूसरे पसन्द करें या न करें, इसलिए सुन्नतों के इन तरीक़ों को अपनी ज़िंदगी में दाख़िल करें, उनको अपनाएं और उन तानों की परवाह न करें। अगर इस सुन्नत पर पहले से अमल नहीं है, तो अब अमल शुरू कर दें—लोग कहते हैं कि आजकल ऐसा ज़माना आ गया है कि उसमें दीन पर अमल करना बड़ा मुश्किल है—अरे भाई! हमने अपने ज़ेहन से मुश्किल बना रखा है, वरना बताइए कि इस उंगलियां चाटने की सुन्नत पर अमल करने में क्या दुश्वारी है? कौन तुम्हारा हाथ रोक रहा है? तुम्हारे माल व दौलत में या राहत व आराम में इस सुन्नत पर अमल करने से कौन-सा ख़लल आ रहा है? जब इस एक सुन्नत को अख़्तियार कर लिया तो अल्लाह की महबूबियत तुम्हें हासिल हो

गई और इस सुन्नत की बरकतें हासिल हो गईं। क्या मालूम कि अल्लाह तआला एक सुन्नत के बदले में तुम्हें नवाज़ दे। अल्लाह हमें तमाम सुन्नतों पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन!

उंगलियां दूसरे को भी चटवाना जायज़ है

इस हदीस में एक अख़्तियार और दे दिया, फ़रमाया कि 'औ यल अिक़ुहा' यानी अगर उंगलियां ख़ुद न चाटे तो किसी और को चटा दे। उलेमा किराम ने लिखा कि इसका मंशा यह है कि कभी-कभी ऐसी शक्ल हो जाती है कि आदमी उंगलियां चाटने पर क़ादिर नहीं होता, ऐसी शक्ल में किसी और को चटा दे, बच्चे को चटा दे या बिल्ली चटा दे, किसी परिंदे को चटा दे, मक़्सद यह कि अल्लाह तआला की रोज़ी बर्बाद न हो। अब अगर इसको जाकर धो डालोगे, रोज़ी बर्बाद हो जाएगी और मख़्लूक़ को चटा दो, ताकि उसको भी बरकत हासिल हो जाए।

खाने के बाद बरतन चाटना

"عن جابر رضی الله عنه ان رسول الله ﷺ امر بلعق الاصابع والصحفة، وقال: انكم لاتدرون فی ای طعامكم البركة" (صحیح مسلم، کتاب الاشربة، باب استحباب لعق الاصابع: ٢٠٣٣)

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उंगलियां चाटने और प्याला चाटने का हुक्म दिया और फ़रमाया कि तुम नहीं जानते कि तुम्हारे खाने के किस हिस्से में बरकत है? —सहीह मुस्लिम, हदीस न० 2033

इस हदीस में एक अदब और बयान फ़रमाया है, वह यह कि खाने के बाद उंगलियां भी चाटे और जिस बरतन में खा रहा है, इस बरतन को भी चाट कर साफ़ कर ले, ताकि अल्लाह तआला के रिज़्क़ की नाक़द्री न हो। वैसे तो बरतन में उतना ही सालन निकालना चाहिए, जितना खा सकने की उम्मीद हो, ज़्यादा न निकाले, ताकि बाद में बचे नहीं, लेकिन अगर मान लीजिए खाना प्लेट में ज़्यादा निकल आया और खाना बच गया और अब खाने की गुंजाइश बाक़ी न रही, ऐसे मौक़े पर कुछ लोग यह समझते हैं कि प्लेट में जितना सालन निकाल लिया है, उस सबको खाकर ख़त्म करना ज़रूरी है, यहां तक कि कुछ लोग इसको फ़र्ज़ व वाजिब समझने लगे हैं, चाहे बाद में हैज़ा ही क्यों न हो जाए। याद रखिए, शरीयत में यह हुक्म नहीं कि ज़रूर पूरा खाना खाओ, बल्कि शरीयत का असल तरीक़ा यह है कि एक तो ज़्यादा खाना निकालो ही नहीं। लेकिन अगर ज़्यादा खाना निकल आए तो उसके छोड़ देने की गुंजाइश है, लेकिन उसको इस तरह छोड़ो कि वह छोड़ा हुआ खाना प्याले के एक तरफ़ हो, पूरे प्याले में फैला हुआ न हो, पूरा प्याला गंदा और सना हुआ न हो, इसलिए उसका तरीक़ा यह है कि अपने सामने से खाकर उस हिस्से को साफ़ कर लो, ताकि आपका बचा हुआ खाना किसी और को दिया जाए, तो उसको घिन न आए, उसको परेशानी न हो, इस्लाम की सही तालीम यह है।

वरना चमचे को चाट ले

कभी-कभी आदमी हाथ से खाना नहीं खाता, बल्कि चमचों से खाना खाता है, उस वक़्त उंगलियों को चाटने की सुन्नत पर किस

तरह अमल करे? इसलिए कि उंगलियों पर खाना लगा ही नहीं, तो कुछ उलेमा ने फ़रमाया कि अगर कोई आदमी चमचे से खा रहा है तो चमचे पर जो खाना लगा हुआ है, उसको इस नीयत से चाट ले कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह फ़रमाया कि मालूम नहीं कि खाने के किस हिस्से में बरकत है? अब खाना तो मेरी उंगलियों पर लगा नहीं है, मगर चमचों पर लगा हुआ है, उसको साफ़ कर ले, तो उम्मीद है कि इनशाअल्लाह, इस सुन्नत की फ़ज़ीलत इसमें भी हासिल हो जाएगी।

गिरा हुआ लुक़्मा उठाकर खा लेना चाहिए

"وعن جابر رضى الله عنه ان رسول الله ﷺ قال: اذا وقعت لقمة احدكم فلياخذها فليمط ماكان بها من اذى ولياكلها، ولا يدعها للشيطان، ولايمسح يده بالمنديل حتى يلعق اصابعه، فانه لايدرى فى اى طعامه البركة" (صحيح مسلم، كتاب الاشربة، باب استحباب لعق الاصابع:٢٠٣٣)

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि अगर खाने के दौरान किसी आदमी का लुक़्मा गिर जाए तो उसको चाहिए कि वह उस लुक़्मे को उठा ले। अगर उस लुक़्मे पर कोई मिट्टी वग़ैरह लग गई है, तो उसको साफ़ कर ले और फिर उसको खा ले और शैतान के लिए उसको न छोड़े। इस हदीस में यह अदब बता दिया कि कभी-कभी खाना खाते वक़्त कोई लुक़्मा या कोई चीज़ गिर जाए तो उठा कर साफ़ करके खा लेनी चाहिए। कभी-कभी इंसान उसको उठाकर खाते हुए शरमाता है और झिझकता है, इसलिए आंहज़रत

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि ऐसा न करो, इसलिए कि यह अल्लाह तआला का रिज़्क़ है, उसकी अता है, उसकी नाक़द्री न करो, उसको उठाकर साफ़ करके खा लो। अलबत्ता अगर वह लुक़्मा इस तरह गिर गया कि बिल्कुल मुलव्वस और नापाक हो गया और गन्दा हो गया और अब उसको साफ़ करके खाना मुम्किन नहीं है, तो बात दूसरी है, मजबूरी है, लेकिन अगर उसको उठाकर साफ़ करके खाया जा सकता हो, उस वक़्त तक न छोड़ो, इसलिए कि यह अल्लाह तआला का रिज़्क़ है, उसकी क़द्र और ताज़ीम वाजिब है। जब तक अल्लाह तआला के रिज़्क़ के छोटे हिस्सों की क़द्र और ताज़ीम नहीं करोगे, उस वक़्त तक तुम्हें रिज़्क़ की बरकत नहीं हासिल होगी।

इसमें भी वही बात है कि गिरे हुए लुक़्मे को उठाकर खाना आजकल की तह्ज़ीब और एटीकेट के ख़िलाफ़ है, इसलिए आदमी उससे शर्माता है और यह सोचता है कि अगर मैं उसको उठाऊंगा तो लोग कहेंगे कि यह बड़ा नदीदा है, लेकिन इस पर एक वाक़िया सुन लीजिए।

हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान रज़ियल्लाहु अन्हु का वाक़िया

हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान रज़ियल्लाहु अन्हुमा, जो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जां-निसार सहाबी हैं और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के राज़दार। उनका लक़ब 'साहिबे सिर्रे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम' मशहूर था—जिस वक़्त मुसलमानों ने ईरान में किसरा की सलतनत पर हमला किया, जो किसरा उस वक़्त की बड़ी अज़ीम ताक़त और सुपर पावर था

और ईरान की तह्ज़ीब सारी दुनिया के अन्दर मशहूर और उसका ग़लग़ला था, इसलिए कि उस वक़्त दो ही तहज़ीबें थीं—एक रूमी और एक ईरानी, लेकिन ईरानी तह्ज़ीब अपनी नज़ाकत, अपनी सफ़ाई-सुथराई में ज़्यादा मशहूर थी। बहरहाल जब हमला किया तो किसरा ने मुसलमानों को मुज़ाकरे की दावत दी कि आप लोग हमारे साथ मुज़ाकरे करें। चुनांचे हज़रत हुज़ैफ़ा और हज़रत रुबई बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हुमा मुज़ाकरे के लिए गए।

अपना लिबास नहीं छोड़ेंगे

हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान और हज़रत रुबई बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हुमा जब मुज़ाकरे के लिए जाने लगे और किसरा के महल में दाख़िल होने लगे, तो उस वक़्त वह अपना वही सीधा-सादा लिबास पहने हुए थे, चूंकि लम्बा सफ़र करके आए थे, इसलिए हो सकता है कि वे कपड़े कुछ मैले भी हों, दरबार के दरवाज़े पर जो दरबान था, उसने आपको अन्दर जाने से रोक दिया। उसने कहा कि तुम इतने बड़े बादशाह किसरा के दरबार में ऐसे लिबास में जा रहे हो? और यह कहकर उसने एक जुब्बा दिया कि आप यह जुब्बा पहन कर जाएं। हज़रत रुबई बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उस दरबान से कहा कि अगर किसरा के दरबारा में जाने के लिए उसका दिया हुआ जुब्बा पहनना ज़रूरी है, तो फिर हमें उसके दरबार में जाने की कोई ज़रूरत नहीं। अगर हम जाएंगे तो इसी लिबास में जाएंगे और अगर उसको इस लिबास में मिलना मंजूर नहीं, तो फिर हमें भी उससे मिलने का कोई शौक़ नहीं, इसलिए हम वापस जा रहे हैं।

तलवार देख ली, बाज़ू भी देख

उस दरबान ने अन्दर पैग़ाम भेजा कि ये अजीब क़िस्म के लोग आए हैं, जो जुब्बा लेने को भी तैयार नहीं। इस दौरान हज़रत रुबई बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी तलवार के ऊपर लिपटी हुई कतरनों को दुरुस्त करने लगे जो तलवार के टूटे हुए हिस्से पर लिपटी हुई थी। उस दरबान ने तलवार देखकर कहा, ज़रा मुझे अपनी तलवार तो दिखाओ, आपने वह तलवार उसको दे दी। उसने वह तलवार देखकर कहा कि, क्या तुम इस तलवार से ईरान फ़त्ह करोगे? हज़रत रुबई बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि अभी तक तुमने सिर्फ़ तलवार देखी है, तलवार चलाने वाला हाथ नहीं देखा। उसने कहा कि अच्छा, हाथ भी दिखा दो। हज़रत रुबई बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि हाथ देखना चाहते हो तो ऐसा करो कि तुम्हारे पास तलवार का वार रोकने वाली जो सबसे ज़्यादा मज़बूत ढाल हो, वह मंगवा लो और फिर मेरा हाथ देखो। चुनांचे वहां जो सबसे ज़्यादा मज़बूत लोहे की ढाल थी, जिसके बारे में यह ख़्याल किया जाता था कि कोई तलवार उसको काट नहीं सकती, वह मंगवाई गई। हज़रत रुबई बिन आमिर ने फ़रमाया कि कोई आदमी उसको मेरे सामने लेकर खड़ा हो जाए। चुनांचे एक आदमी उस ढाल को लेकर खड़ा हो गया, तो हज़रत रुबई बिन आमिर ने वह तलवार, जिस पर कतरनें लिपटी हुई थीं, उसका एक वार जो किया तो उस ढाल के दो टुकड़े हो गए। सब लोग यह नज़ारा देखकर हैरान रह गए कि ख़ुदा जाने यह कैसी मख़्लूक़ आ गई है। चुनांचे दरबान ने अन्दर इत्तिला भेज दी कि यह ऐसी मख़्लूक़ है कि अपनी टूटी हुई तलवार से ढाल के दो टुकड़े कर दिए, फिर इनको अन्दर बुला लिया गया।

क्या इन अहमक़ों की वजह से सुन्नत छोड़ दूं?

जब अन्दर पहुंचे तो तवाज़ो के तौर पर पहले उनके सामने खाना लाकर रखा गया, चुनांचे आपने खाना शुरू किया। खानें के दौरान आपके हाथ से एक नवाला गिर गया. . . हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तालीम यह है कि अगर नवाला नीचे गिर जाए तो उसको ज़ाया न करो, वह अल्लाह का रिज़्क़ है और यह मालूम नहीं कि अल्लाह तआला ने रिज़्क़ के कौन-से हिस्से में बरकत रखी है, इसलिए इस नवाले की ना-क़द्री न करो, बल्कि उसको उठा लो। अगर उसके ऊपर कुछ मिट्टी लग गई, तो उसको साफ़ कर लो और फिर खा लो. . . चुनांचे जब नवाला नीचे गिरा, तो हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु को यह हदीस याद आ गई और आपने उस नवाले को उठाने के लिए नीचे हाथ बढ़ाया। आपके बराबर एक साहब बैठे थे, उन्होंने आपको कुहनी मारकर इशारा किया कि यह क्या कर रहे हो? यह तो दुनिया की सुपर ताक़त किसरा का दरबार है। अगर तुम इस दरबार में ज़मीन पर गिरा हुआ नवाला उठाकर खाओगे तो उन लोगों के ज़ेहनों में तुम्हारी वक़्अत नहीं रहेगी और ये समझेंगे कि ये बड़े नदीदा क़िस्म के लोग हैं, इसलिए यह नवाला उठाकर खाने का मौक़ा नहीं है, आज इसको छोड़ दो। जवाब में हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान रज़ियल्लाहु अन्हु ने क्या अजीब जुम्ला इर्शाद फ़रमाया कि—

أأترك سنة رسول الله ﷺ لهؤلاء الحمقى؟

क्या मैं इन अहमक़ों की वजह से सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत छोड़ दूं? चाहे ये अच्छा समझें या बुरा समझें, इज़्ज़त करें या ज़िल्लत करें या मज़ाक़ उड़ाएं, लेकिन मैं

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत नहीं छोड़ सकता। चुनांचे उसने लुक़्मा उठाकर साफ़ करके खा लिया।

ये हैं ईरान फ़त्ह करने वाले

किसरा के दरबार का दस्तूर यह था कि वह ख़ुद तो कुर्सी पर बैठा रहता था और सारे दरबारी सामने खड़े रहते थे. . . हज़रत रुबई बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु ने किसरा से कहा कि हम मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तालीमात की पैरवी करने वाले हैं और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमें इस बात से मना किया है कि एक आदमी बैठा रहे और बाक़ी आदमी उसके सामने खड़े रहें, इसलिए हम इस तरह के मुज़ाकरे करने के लिए तैयार नहीं, या तो हमारे लिए भी कुर्सियां मंगवाई जाएं, या किसरा भी हमारे सामने खड़ा हो. . . किसरा ने जब यह देखा कि ये लोग तो हमारी तौहीन करने के लिए आ गए, चुनांचे उसने हुक्म दिया कि एक मिट्टी का टोकरा भरकर इनके सर पर रख दो और इनको वापस कर दो, मैं इनसे बात नहीं करता। चुनांचे एक मिट्टी का टोकरा इनको दे दिया गया। हज़रत रुबई बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु ने वह टोकरा सर पर रख लिया। जब दरबार से निकलने लगे तो जाते हुए यह कहा कि ऐ किसरा! यह बात याद रखना कि तूने ईरान की मिट्टी हमें दे दी। यह कहकर रवाना हो गए। ईरानी लोग बड़े वहमपरस्त क़िस्म के लोग थे। उन्होंने सोचा, यह जो कहा, यह तो बड़ी बदफ़ाली हो गई। अब किसरा ने फ़ौरन एक आदमी पीछे दौड़ाया कि जाओ, जल्दी से वह मिट्टी का टोकरा ले आओ। अब रुबई बिन आमिर कहां हाथ आने वाले थे। चुनांचे वह ले जाने में

कामियाब हो गए, इसलिए कि अल्लाह ने लिख दिया था कि ईरान की मिट्टी उन्हीं टूटी हुई तलवार वालों के हाथ में है।

किसरा के घमंड को ख़ाक में मिला दिया

अब बताइए कि उन्होंने अपनी इज़्ज़त कराई या आज हम सुन्नतें छोड़कर करवा रहे हैं? इज़्ज़त उन्होंने ही कराई और ऐसी इज़्ज़त कराई कि एक तरफ़ तो सुन्नत पर अमल करते हुए नवाला उठाकर खाया तो दूसरी तरफ़ ईरान के वह कजकुलाह जो घमंड के मुजस्समे बने हुए थे, उनका घमंड ऐसा ख़ाक में मिलाया कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमा दिया कि—

اذا ھلك كسرىٰ فلا كسرىٰ بعده

जिस दिन किसरा हलाक हुआ, उसके बाद कोई किसरा नहीं है, दुनिया से उसका नाम व निशान मिट गया। बहरहाल यह जो सुन्नत कि अगर नवाला गिर जाए, तो उसको उठाकर खा लो, इसको शरमा कर नहीं छोड़ना चाहिए, बल्कि इस सुन्नत पर अमल करना चाहिए।

मज़ाक़ उड़ाने के डर से सुन्नत छोड़ना कब जायज़ है?

जैसा कि मैंने पहले अर्ज़ किया था कि अगर कोई सुन्नत ऐसी है, जिसका छोड़ने भी जायज़ है और इस बात का भी अंदेशा है कि अगर इस सुन्नत पर अमल किया गया तो कुछ मुसलमान जो बे-फ़िक्र और आज़ाद ख़्याल हैं, वे इस सुन्नत का मज़ाक़ उड़ा कर कुफ़्र व इर्तिदाद में मुब्तला होंगे, तो ऐसे मौक़े पर इस सुन्नत पर अमल छोड़ दे, तो यह जायज़ है, जैसे ज़मीन पर बैठकर खाना सुन्नत से ज़्यादा क़रीब है, लेकिन अगर आप किसी वक़्त होटल या रेस्टोरेंट में खाने के लिए चले गए, वहां कुर्सियां बिछी हुई हैं। अब आपने वहां जाकर

यह सोचा कि ज़मीन पर बैठकर खाना सुन्नत से ज़्यादा क़रीब है, चुनांचे वहीं पर आप ज़मीन पर रूमाल बिछा कर बैठ गए, तो इस सूरत में अगर इस सुन्नत की तौहीन होने और मज़ाक़ उड़ाए जाने का अंदेशा हो और इससे लोगों के कुफ़्र और इर्तिदाद में पड़ जाने का डर हो, तो ऐसी सूरत में बेहतर यह है कि उस वक़्त आदमी उस सुन्नत को छोड़ दे और कुर्सी पर बैठकर खा ले।

लेकिन यह उस वक़्त है जब इस सुन्नत को छोड़ना जायज़ है, लेकिन जहां इस सुन्नत को छोड़ना जायज़ और मुबाह न हो, वहां किसी के मज़ाक़ उड़ाने की वजह से इस सुन्नत को छोड़ना जायज़ नहीं—दूसरे यह कि मुसलमान की बात और है, काफ़िर की बात और है, इसलिए कि मुसलमान के अन्दर तो बात का अंदेशा है कि सुन्नत का मज़ाक़ उड़ाने के नतीजे में काफ़िर हो जाएग, लेकिन अगर काफ़िरों का मज्मा है, तो वे पहले से ही काफ़िर हैं, उनके मज़ाक़ उड़ाने से कुछ फ़र्क़ नहीं पड़ेगा, इसलिए वहां पर सुन्नत पर अमल को छोड़ना दुरुस्त नहीं होगा।

खाने के वक़्त अगर कोई मेहमान आ जाए तो?

وعن جابر رضى الله عنه قال: سمعت رسول الله ﷺ يقول: طعام الواحد يكفى الاثنين، وطعام الاثنين يكفى الاربعة، وطعام الاربعة يكفى الثمانية"

(صحيح مسلم، كتاب الاشربة، باب فضيلة المواساة فى الطعام: ٢٠٥٩)

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना कि एक आदमी का खाना दो आदमी के लिए काफ़ी हो जाता है और दो

आदमी का खाना चार के लिए काफ़ी हो जाता है और चार का खाना आठ के लिए काफ़ी हो जाता है। —सहीह मुस्लिम, हदीस न० 2059

इस हदीस में आपने यह उसूल बयान फ़रमाया कि अगर तुम खाना खाने बैठे और उस वक़्त कोई मेहमान या ज़रूरतमंद आ गया तो उस मेहमान को या उस ज़रूरतमंद को सिर्फ़ इस वजह से वापस मत लौटाओ कि खाना तो हमने एक ही आदमी का बनाया था, अगर उस मेहमान को या ज़रूरतमंद को खाने में शरीक कर लिया तो खाने में कमी वाक़े हो जाएगी, बल्कि एक आदमी का खाना दो के लिए भी काफ़ी हो जाता है, इसलिए इस ज़रूरतमंद को वापस मत लौटाओ, बल्कि उसको भी खाने में शरीक कर लो, इसके नतीजे में अल्लाह तआला खाने में बरकत अता फ़रमाएंगे और जब एक का खाना दो के लिए काफ़ी हो जाता है तो दो का खाना चार के लिए और चार का खाना आठ के लिए काफ़ी हो जाता है।

मांगने वाले को डांट कर मत भगाओ

हमारे यहां यह अजीब रिवाज पड़ गया है कि मेहमान उसी को समझा जाता है, जो हमारे हमपल्ला हो, या जिससे शनासाई हो, दोस्ती हो या अज़ीज़ या क़रीबी रिश्तेदार हो और वह भी अपने हमपल्ला और अपने स्टेटस का हो, वह तो हक़ीक़त में मेहमान है और जो बेचारा ग़रीब और मिस्कीन आ जाए, तो कोई आदमी उसको मेहमान नहीं मानता, उसको भिखारी समझा जाता है, कहते हैं, यह मांगने वाला आ गया, हालांकि वह हक़ीक़त में अल्लाह तआला का भेजा हुआ मेहमान है। उसका इक्राम करना भी हर मुसलमान का हक़ है, इसलिए अगर खाने के वक़्त ऐसा मेहमान आ जाए तो खाने

में उसको भी शरीक कर लो, उसको वापस मत करो। इसमें इस बात का ख़ास तौर से ख़्याल रखना चाहिए कि अगर खाने के वक़्त मांगने वाला आ जाए, तो उसको वापस लौटाना अच्छी बात नहीं, उसको कुछ देकर विदा करना चाहिए—और इससे तो हर हाल में परहेज़ करना चाहिए कि उसको डांट कर भगाया जाए। क़ुरआन करीम का इर्शाद है—

واما السائل فلاتنهر (سورة الضحٰی)

'मांगने वाले को झिड़को नहीं।'

—सूरतुज़्ज़ुहा

इसलिए जहां तक मुम्किन हो इस बात की कोशिश करो कि झिड़कने की नौबत न आए, इसलिए कभी-कभी आदमी उसके अन्दर हदों से आग निकल जाता है, जिसके नतीजे में बड़े ख़राब हालात पैदा हो जाते हैं।

एक सबक़ भरा वाक़िया

हज़रत थानवी क़द्द-सल्लाहु सिर्रहू ने अपने वाज़ों में एक क़िस्सा लिखा है कि एक साहब बड़े दौलतमंद थे। एक बार वह अपनी अह्लिया के साथ खाना खा रहे थे, खाना भी अच्छा बना हुआ था। इसलिए बड़े ज़ौक़ व शौक़ से खाना खाने के लिए बैठे, इतने में एक मांगने वाला दरवाज़े पर आ गया। अब खाने के दौरान मांगने वाले का आना उनको नागवार हुआ, चुनांचे उन्होंने उस मांगने वाले को डांट-डपट कर ज़लील करके बाहर निकाल दिया—अल्लाह तआला महफ़ूज़ रखे। कभी-कभी इंसान का एक अमल अल्लाह के ग़ज़ब को दावत देता है। चुनांचे कुछ दिनों के बाद मियां-बीवी में अन-बन शुरू हो गई। लड़ाई-झगड़े रहने लगे, यहां तक कि तलाक़ की नौबत आ

गई और उसने तलाक़ दे दी। बीवी ने अपने मैके में आकर इद्दत गुज़ारी और इद्दत के बाद किसी और आदमी से उसका निकाह हो गया। वह भी एक दौलतमंद आदमी था।

फिर वह एक दिन अपने उस दूसरे शौहर के साथ बैठकर खाना खा रही थी कि इतने में दरवाज़े पर एक मांगने वाला आया। चुनांचे बीवी ने अपने शौहर से कहा कि मेरे साथ एक वाक़िया पेश आ चुका है। मुझे इस बात का ख़तरा है कि कहीं अल्लाह का ग़ज़ब न आ जाए, इसलिए मैं पहले इस मांगने वाले को कुछ दे दूं। शौहर ने कहा, दे आओ।

जब वह देने गयी तो उसने देखा कि वह मांगने वाला जो दरवाज़े पर खड़ा था, वह उसका पहला शौहर था। चुनांचे वह हैरान रह गई और वापस आकर अपने शौहर को बताया कि आज मैंने यह अजीब मंज़र देखा कि यह मांगने वाला वह मेरा पहला शौहर है, जो बहुत दौलतमंद था। मैं एक दिन उसके साथ इस तरह बैठी खाना खा रही थी कि इतने में दरवाज़े पर एक मांगने वाला आ गया और उसने उसको झिड़क कर भगा दिया था, जिसके नतीजे में अब उसका यह हाल हो गया। उस शौहर ने कहा कि मैं तुम्हें इससे ज़्यादा अजीब बात बताऊं कि वह मांगने वाला जो तुम्हारे शौहर के पास आया था, वह हक़ीक़त में मैं ही था। अल्लाह तआला ने उसकी दौलत उस दूसरे शौहर को अता फ़रमा दी और उसकी मुहताजी उसको दे दी। अल्लाह तआला बुरे वक़्त से बचाए, आमीन! नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस बात से पनाह मांगी है। फ़रमाया—

اللهم ان اعوذ من الحور بعد الكور

बहरहाल किसी भी मांगने वाले को डांटने-डपटने से जहां तक हो सके, बचो, अलबत्ता कभी-कभी ऐसा मौक़ा आ जाता है कि डांटने की ज़रूरत पेश आती है, तो फ़ुक़हा ने इसकी इजाज़त दी है, लेकिन जहां तक मुम्किन हो इस बात की कोशिश करो कि डांटने की ज़रूरत पेश न आए, बल्कि कुछ दे कर रुख़्सत कर दो।

इस हदीस का दूसरा मतलब यह है कि अपने खाने की मिक़्दार को ऐसी पत्थर की लकीर मत बनाओ कि जितना खाने का मामूल है, हर दिन उतना ही खाना ज़रूरी है, बल्कि अगर कभी किसी वक़्त कुछ कमी का मौक़ा आ जाए तो इसकी भी गुंजाइश रखो, इसलिए कि आपने फ़रमाया कि एक आदमी का खाना दो के लिए और दो का खाना चार के लिए और चार का खाना आठ के लिए काफ़ी हो जाता है। अल्लाह तआला अपनी रहमत से उसकी हक़ीक़त समझने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन!

हज़रत मुजद्दिद अल्फ़ सानी रह० का इर्शाद

बहरहाल, खाने की तक़रीबन अक्सर सुन्नतों का बयान हो चुका है, अगर इन सुन्नतों पर अमल नहीं है, तो आज ही से अल्लाह के नाम पर उन पर अमल करने का इरादा कर लें। यक़ीन रखिए कि अल्लाह तआला ने जो नूरानियत, रूहानियत और दूसरे अजीब व ग़रीब फ़ायदे सुन्नत की पैरवी में रखे हैं, वे इन छोटी-छोटी सुन्नतों पर अमल करने से भी हासिल हो जाएंगे। हज़रत मुजद्दिद अल्फ़ सानी रह० का इर्शाद बार-बार सुनने का है, फ़रमाते हैं कि—

अल्लाह तआला ने मुझे ज़ाहिरी उलूम से नवाज़ा, हदीस पढ़ी, तफ़्सीर पढ़ी, फ़िक़्ह पढ़ी, गोया तमाम ज़ाहिरी इल्मों को अल्लाह ने अता फ़रमाया, इसमें अल्लाह तआला ने मुझे कमाल बख़्शा, इसके बाद मुझे ख़्याल हुआ कि यह देखना चाहिए कि सूफ़िया किराम क्या

कहते हैं? इनके पास क्या इल्म हैं? चुनांचे उनकी तरफ़ मुतवज्जह होकर उनके इल्म हासिल किए। सूफ़िया किराम के जो चार सिलसिले हैं—सुहरवरदिया, क़ादरिया, चिश्तिया, नक़्शबन्दिया—इन सबके बारे में दिल में यह जुस्तजू पैदा हुई कि कौन-सा सिलसिला तालीम का क्या तरीक़ा बताता है? सबकी सैर की और चारों सिलसिलों में जितने आमाल, जितने अशग़ाल, जितने अज़कार, जितने मुराक़बात, जितने चिल्ले हैं, वे सब अंजाम दिए, सब कुछ करने के बाद अल्लाह तआला ने मुझे ऐसा मक़ाम बख़्शा कि ख़ुद सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने मुबारक हाथों से मुझे ख़लअत पहनाया। फिर अल्लाह तआला ने इतना ऊंचा मक़ाम बख़्शा कि असल को पहुंचा, फिर असल से ज़िल्ल (साया) को पहुंचा, यहां तक कि मैं ऐसी जगह पर पहुंचा कि अगर उसको ज़ुबान से ज़ाहिर करूं तो ज़ाहिरी उलेमा मुझ पर कुफ़्र का फ़तवा लगा दें और बातिनो उलेमा मुझ पर ज़िंदीक़ होने का फ़तवा लगा दें, लेकिन मैं क्या करूं कि अल्लाह तआला ने मुझे सच में अपने फ़ज़्ल से ये सब मक़ाम अता फ़रमाए। अब ये सारे मक़ाम हासिल करने के बाद मैं एक दुआ करता हूं और जो आदमी इस दुआ पर आमीन कह देगा, इनशाअल्लाह उसकी भी मग़्फ़िरत हो जाएगी, वह दुआ यह है कि—

'ऐ अल्लाह! मुझे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत की पैरवी की तौफ़ीक़ अता फ़रमा, आमीन! ऐ अल्लाह! मुझे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत ही पर मौत अता फ़रमा। आमीन!

सुन्नतों पर अमल करें

बहरहाल, तमाम मक़ामात की सैर करने के बाद आख़िर में नतीजा यही है कि जो कुछ मिलेगा, वह नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत की पैरवी में मिलेगा तो हज़रत मुजद्दिद अल्फ़ सानी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि मैं तो सारे मक़ामात की सैर करने के बाद इस नतीजे पर पहुंचा, तुम पहले दिन पहुंच जाओ, पहले ही दिन इस बात का इरादा कर लो कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जितनी सुन्नतें हैं, उन पर अमल करूंगा, फिर उसकी बरकत और नूरानियत देखोगे, फिर ज़िंदगी का लुत्फ़ देखो, याद रखो, ज़िंदगी का लुत्फ़ फिस्क़ व फ़ुजूर में नहीं है, गुनाहों में नहीं है, इस ज़िंदगी का लुत्फ़ उन लोगों से पूछो, जिन्होंने अपनी ज़िंदगी को नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नतों में ढाल लिया है।

हज़रत सुफ़ियान सौरी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला ने ज़िंदगी का जो लुत्फ़ और उसका जो कैफ़ और लज़्ज़त हमें अता फ़रमाई है, अगर उन दुनिया के बादशाहों को पता लग जाए तो तलवारें सोंत कर हमारे मुक़ाबले के लिए आ जाएं, ताकि उसको यह लज़्ज़त हासिल हो जाए, ऐसी लज़्ज़त अल्लाह तआला ने हमें अता फ़रमाई है, लेकिन कोई इस पर अमल करके देखे, इस राह पर चलकर देखे। अल्लाह तआला अपने फ़ज़्ल व करम और अपनी रहमत से हम सबको सुन्नत की पैरवी की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन!

व आख़िरु दावाना अनिल हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन०

ISBN 81-7101-481-X

ISBN 81-7101-212-4

ISBN 81-7101-213-2

ISBN 81-7101-385-6

ISBN 81-7101-479-8

ISBN 81-7101-368-6

ISBN 81-7101-555-7

ISBN 81-7101-474-7

ISBN 81-7101-506-9

खाना पीना एक इन्सानी ज़रुरत है बल्कि हर जानदार अपनी गिज़ा खाता पीता है और ज़ाहिर है कि जब आदमी खाएगा पिएगा तो कोई ना कोई तरीका तो इख़्तियार करना ही पड़ेगा। ये तरीक़ा अगर हम हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा ﷺ वाला इख़्तियार कर लें तो खाना पीना भी हो जाएगा और एक बेहतरीन इबादत भी हो जाएगी।

और सच तो ये है कि तहज़ीब व शायस्तगी और सलीक़ामन्दी में भी हुज़ूर अकरम ﷺ के तरीक़ा-ए-ज़िन्दगी से बढ़ कर कोई तरीक़ा नहीं है. यह किताब आपको खाने पीने का नब्वी सलीक़ा सिखाती है।